

टीचर्स ऑफ़ बिहार
द चेंज मेकर्स



हिंदी भाषा का क्रमिक विकास



बिपिन कुमार चौधरी



कॉपीराइट एवं उपयोग संबंधी सूचना

- इस पुस्तक में प्रकाशित सभी लेख, रचनाएँ, चित्र, आलेख, गतिविधियाँ एवं अन्य सामग्री संबंधित लेखक/रचनाकार तथा प्रकाशक की बौद्धिक संपदा हैं।
- प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी अंश को मुद्रित, फोटोकॉपी, स्कैन, रिकॉर्ड, डिजिटल माध्यम से पुनरुत्पादित या प्रसारित करना प्रतिबंधित है।
- इस पुस्तक की सामग्री का उपयोग केवल शैक्षिक एवं गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है, जिसमें लेखक/रचनाकार एवं स्रोत को उचित श्रेय देना आवश्यक है।
- इस पुस्तक की सामग्री का व्यावसायिक उपयोग, पुनर्प्रकाशन अथवा किसी अन्य प्रकाशन में पुनःप्रयोग बिना पूर्व अनुमति के अनुमत नहीं है।
- पुस्तक में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबंधित लेखक/रचनाकार के व्यक्तिगत विचार हैं।
- इस पुस्तक के सभी लेख, चित्र एवं अन्य सामग्री के कॉपीराइट अधिकार संबंधित लेखक/रचनाकार एवं प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पुस्तक के किसी भी अंश के पुनर्प्रकाशन या अन्य माध्यम में उपयोग के लिए प्रकाशक की पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है।

प्रकाशक: टीचर्स ऑफ़ बिहार (द चेंज मेकर्स)

प्रकाशन वर्ष: 2026

छात्रों, शिक्षकों, प्रतियोगी परीक्षार्थियों
और हिन्दी प्रेमियों के लिए एक उपयोगी पुस्तक

हिन्दी भाषा का क्रमिक विकास

भाषा, साहित्य, इतिहास और संस्कृति की दृष्टि से
हिन्दी भाषा की विकास यात्रा

लेखक
बिपिन कुमार चौधरी

पुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ

- 1 हिन्दी भाषा की उत्पत्ति, विकास और वर्तमान स्वरूप का क्रमबद्ध एवं वैज्ञानिक अध्ययन।
- 2 वैदिक संस्कृत से आधुनिक हिन्दी तक भाषा की विकास यात्रा का स्पष्ट विवरण।
- 3 प्रमुख भारतीय भाषाओं, बोलियों और लिपियों का तुलनात्मक एवं सुव्यवस्थित अध्ययन।
- 4 भाषा-इतिहास, ध्वनि-विज्ञान, व्याकरणिक परिवर्तन और सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों पर आधारित प्रामाणिक चर्चा।
- 5 सारणी, चार्ट, मानचित्र, समयरेखा, चित्र एवं उदाहरणों सहित आसान भाषा में प्रस्तुति।
- 6 विद्वानों के मत, महत्वपूर्ण तिथियों और परीक्षापयोगी बिंदुओं का समावेश।
- 7 UPSC, BPSC, SSC, RPSC, UPSSSC, TET, CTET, UGC-NET, हिन्दी विषय एवं विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी।
- 8 सरल, स्पष्ट, प्रामाणिक और शोधपरक सामग्री। स्व-अध्ययन एवं अध्यापन दोनों के लिए उपयुक्त।

पुस्तक में शामिल मुख्य विषय

- ✓ भाषा की संकल्पना एवं स्वरूप
- ✓ हिन्दी भाषा की उत्पत्ति के प्रमुख सिद्धान्त
- ✓ संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और हिन्दी का विकास
- ✓ हिन्दी की प्रमुख बोलियों और उनकी विशेषताएँ
- ✓ भारतीय लिपियों का विकास (ब्राह्मी से देवनागरी तक)
- ✓ हिन्दी पर संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, अरबी-फारसी, अंग्रेजी आदि का प्रभाव
- ✓ आधुनिक हिन्दी का स्वरूप और मानकीकरण
- ✓ हिन्दी भाषा का भौगोलिक विस्तार
- ✓ हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति
- ✓ हिन्दी के विकास में प्रमुख विद्वानों का योगदान
- ✓ परीक्षापयोगी प्रश्न, तथ्य और सार-संग्रह

हिन्दी भाषा को समझने की
एक सम्पूर्ण और विश्वसनीय पुस्तक

“ यह पुस्तक केवल परीक्षा की तैयारी के लिए नहीं,
हिन्दी भाषा, भारतीय संस्कृति और अपनी जड़ों को
समझने की यात्रा है। ”

वैदिक संस्कृत

प्राकृत

अपभ्रंश

हिन्दी

भाषा का इतिहास
हमारी संस्कृति
का इतिहास है।

भाषा बदलती है,
समाज बदलता है,
और उसी में छिपा है
सभ्यता का विकास।

लेखक : बिपिन कुमार चौधरी

हिन्दी भाषा का विकास क्रम

हिन्दी भाषा अत्यंत प्राचीन, समृद्ध और व्यापक अभिव्यक्ति वाली भाषा है।
इसका विकास निम्नानुसार माना जाता है—

हिन्दी
हमारी संस्कृति,
विचार और भारतीयता
की पहचान है। यह
वैदिक वाङ्मय से
विकसित होकर आज
विश्व की प्रमुख भाषाओं
में सम्मिलित है।

संस्कृत

वैदिक संस्कृत (1500 ई.पू. – 1000 ई.पू.)

यह हिन्दी भाषा की आदिभाषा मानी जाती है। वेद, उपनिषद, ब्राह्मण, आरण्यक आदि इसी काल की प्रमुख कृतियाँ हैं।

लौकिक संस्कृत (1000 ई.पू. – 500 ई.पू.)

यह संस्कृत का विकसित रूप है, जिसमें व्याकरण, काव्य और शास्त्रीय साहित्य की समृद्ध परम्परा मिलती है।

पाली

(500 ई.पू. – 1 ई.)

यह जनभाषा का रूप था, जिसमें बौद्ध साहित्य की रचना हुई।

प्राकृत

(1 ई. – 500 ई.)

यह पाली से विकसित रूप है। जैन एवं लोक साहित्य की रचना मुख्यतः प्राकृत में हुई।

अपभ्रंश

(500 ई. – 1000 ई.)

यह प्राकृत का परिवर्तित रूप है, जिससे आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का विकास हुआ।

अवहट्ट

(900 ई. – 1000 ई.)

यह अपभ्रंश और आधुनिक हिन्दी के बीच की सेतुभाषा है, जिसमें हिन्दी के अनेक तत्व स्पष्ट दिखाई देते हैं।

हिन्दी

(1000 ई. – अब तक)

इसी रूप से आधुनिक हिन्दी भाषा का विकास हुआ, जो आज भारत की एक प्रमुख आधुनिक भारतीय आर्य भाषा है।

महत्वपूर्ण तथ्य

हिन्दी भारतीय आर्य भाषा परिवार की भाषा है और इसका विकास क्रम मुख्यतः तीन प्रमुख भागों में विभाजित किया जाता है—

1

प्राचीन काल
(संस्कृत, पाली, प्राकृत)

2

मध्यकाल
(अपभ्रंश, अवहट्ट)

3

आधुनिक काल
(हिन्दी)

हिन्दी – हमारी अस्मिता, हमारी पहचान

लेखक : बिपिन कुमार चौधरी

हिन्दी भाषा का विकास क्रम

हिन्दी भाषा का विकास निम्नानुसार तीन प्रमुख कालों में विभाजित किया जाता है—

1. प्राचीन
भारतीय आर्यभाषा काल
(1500 ई.पू. – 500 ई.पू.)

2. मध्यकालीन
भारतीय आर्यभाषा काल
(500 ई.पू. – 1000 ई.)

3. आधुनिक
भारतीय आर्यभाषा काल
(1000 ई. – अब तक)

1 प्राचीन भारतीय आर्यभाषा काल (1500 ई.पू. से 500 ई.पू.)

❖ इस काल को दो भागों में बाँटा गया है—

- | | |
|--------------------|---------------------------|
| (i) वैदिक संस्कृत | (1500 ई.पू. – 1000 ई.पू.) |
| (ii) लौकिक संस्कृत | (1000 ई.पू. – 500 ई.पू.) |

2 मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा काल (500 ई.पू. से 1000 ई.)

❖ इस काल को मुख्यतः तीन भागों में बाँटा गया है—

- | | |
|---------------|--------------------|
| (i) पाली | (500 ई.पू. – 1 ई.) |
| (ii) प्राकृत | (1 ई. – 500 ई.) |
| (iii) अपभ्रंश | (500 ई. – 1000 ई.) |
| (iv) अवहट्ट | (900 ई. – 1100 ई.) |

3 आधुनिक भारतीय आर्यभाषा काल (1000 ई. – अब तक)

❖ इस काल को तीन भागों में बाँटा गया है—

- | | |
|-----------------------|---------------------|
| (i) प्राचीन हिन्दी | (1100 ई. – 1400 ई.) |
| (ii) मध्यकालीन हिन्दी | (1400 ई. – 1850 ई.) |
| (iii) आधुनिक हिन्दी | (1850 ई. – अब तक) |



• महत्वपूर्ण तथ्य •

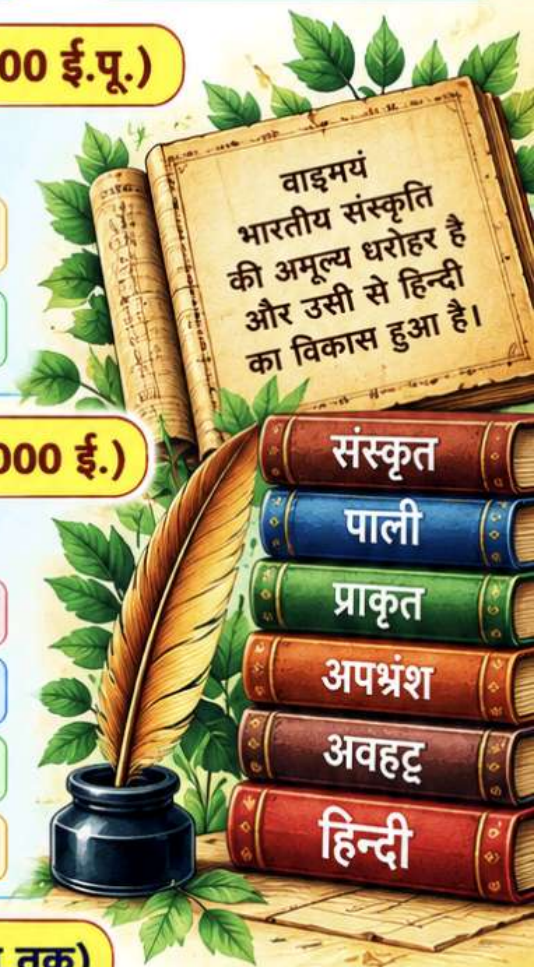
- ❖ हिन्दी भारतीय आर्यभाषा परिवार की भाषा है।
- ❖ इसका विकास संस्कृत से होकर विभिन्न रूपों में हुआ।
- ❖ हिन्दी का आधुनिक स्वरूप 1000 ई. के बाद स्पष्ट दिखाई देता है।



निष्कर्ष •

❖ हिन्दी भारतीय आर्यभाषा परिवार की भाषा है और इसका विकास क्रम तीन प्रमुख कालों में विभाजित किया जाता है।

लेखक :
बिपिन कुमार चौधरी



हिन्दी भाषा का विकास क्रम

पृष्ठ
3



1

प्राचीन भारतीय आर्यभाषा काल

(1500 ई.पू. से 500 ई.पू.)

यह काल मुख्यतः दो भागों में बाँटा गया है—

(i) वैदिक संस्कृत
(1500 ई.पू. – 1000 ई.पू.)

(ii) लौकिक संस्कृत
(1000 ई.पू. – 500 ई.पू.)

(1) संस्कृत

➤ इस काल को दो भागों में बाँटा गया है—

(1) वैदिक संस्कृत (1500 ई.पू. – 1000 ई.पू.)

(2) लौकिक संस्कृत (1000 ई.पू. – 500 ई.पू.)

संस्कृत
भारतीय आर्यभाषा
परिवार की आदिभाषा
मानी जाती है, जिसने
हिन्दी सहित कई
आधुनिक भारतीय
भाषाओं के विकास
में महत्वपूर्ण भूमिका
निभाई है।

(1) वैदिक संस्कृत (1500 ई.पू. से 1000 ई.पू. तक)

➤ वैदिक संस्कृत वह भाषा थी जिसमें वेद (4), उपवेद (4), वेदांग (6), पुराण (18), उपनिषद (108) आदि की रचनाएँ की गई।

➤ वैदिक साहित्य को तीन विभागों में वर्गीकृत किया जा सकता है—

1 संहिता

जिसमें वेदों के मंत्र संकलित हैं।

2 ब्राह्मण

जिसमें यज्ञ, अनुष्ठान और कर्मकांड की व्याख्या है।

3 उपनिषद

जिसमें दार्शनिक, आध्यात्मिक और ज्ञान संबंधी विचार हैं।

महत्वपूर्ण तथ्य

वैदिक संस्कृत भारतीय आर्यभाषा परिवार की मूल भाषा है और इसी के आधार पर हिन्दी सहित अनेक आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास हुआ।

लेखक : बिपिन कुमार चौधरी

हिन्दी भाषा का विकास क्रम

पृष्ठ
4

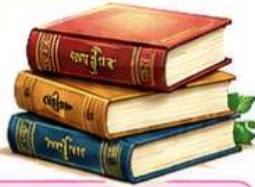
- ❖ वैदिक संस्कृत में कुल 52 ध्वनियाँ हैं, जिनमें 13 स्वर तथा 39 व्यंजन हैं।
- ❖ संस्कृत भाषा का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद में मिलता है।
- ❖ संस्कृत को आर्यभाषा या देवभाषा के नाम से भी जाना जाता है।
- ❖ हिन्दी की आदि जननी भी वैदिक संस्कृत को ही कहा जाता है।
- ❖ हिन्दी संस्कृत भाषा की ही उत्तराधिकारिणी है।
- ❖ प्राचीन भारतीय आर्यभाषा वैदिक संस्कृत है। (UPSI-2017)



वेद – वेद का अर्थ

वेद का अर्थ है – ज्ञान

- ◆ इनकी संख्या 4 है।
- ◆ इनमें देवों-देवताओं का वर्णन किया गया है।
- ◆ ऋक् का शाब्दिक अर्थ – स्तुति करना।



(i) ऋग्वेद

- ◆ इसमें देवों-देवताओं की स्तुतियाँ की गई हैं।
- ◆ ऋक् का शाब्दिक अर्थ – स्तुति करना।
- ◆ इसमें 10 मण्डल, 1028 सूक्त तथा 10,580 ऋचाएँ हैं।



(ii) यजुर्वेद

- ◆ यह पद्य और गद्य दोनों में लिखा गया है।
- ◆ इसमें यज्ञ-विधि का वर्णन है।



(iii) सामवेद

- ◆ इसमें संगीत (गायन) का वर्णन है।



(iv) अथर्ववेद

- ◆ इसमें जादू-टोना, तंत्र-मंत्र आदि का वर्णन है।



चारों वेद

- 1 ऋग्वेद – स्तुति, देवताओं का वर्णन
- 2 यजुर्वेद – यज्ञ-विधि, गद्य-पद्य
- 3 सामवेद – संगीतमय मंत्र
- 4 अथर्ववेद – जादू-टोना, तंत्र-मंत्र आदि

उपवेद

- ◆ चारों वेदों का एक-एक उपवेद भी है।
- ◆ इनकी संख्या 4 है।

वेद	उसका उपवेद
(i) आयुर्वेद	ऋग्वेद से
(ii) धनुर्वेद	यजुर्वेद से
(iii) गन्धर्ववेद	सामवेद से
(iv) शिल्पवेद	अथर्ववेद से

महत्वपूर्ण तथ्य

- ❖ वैदिक संस्कृत भारतीय आर्यभाषा परिवार की मूल भाषा है।
- ❖ इसी के आधार पर हिन्दी सहित अनेक आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास हुआ।
- ❖ हिन्दी भाषा का विकास क्रम समझने के लिए वैदिक संस्कृति का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।



लेखक : बिपिन कुमार चौधरी

हिन्दी भाषा का विकास क्रम

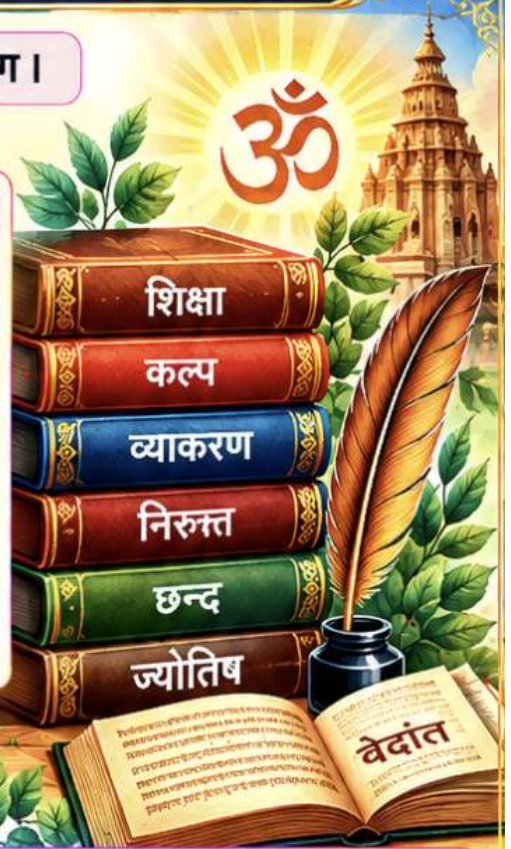
पृष्ठ
5

वेदांत

वेदांत का अर्थ - वेदों का अन्तिम भाग।

इनकी संख्या 6 है -

- 1 (i) शिक्षा - इसमें उच्चारण, स्वर, मात्रा एवं ध्वनि-विज्ञान का विवेचन है।
- 2 (ii) कल्प - इसमें कर्मकाण्डों और नियमों का उल्लेख है।
- 3 (iii) व्याकरण - पाणिनि द्वारा रचित अष्टाध्यायी।
- 4 (iv) निरुक्त - शब्दों की उत्पत्ति बताने वाला ग्रन्थ।
- 5 (v) छन्द - पिंगलमुनि द्वारा रचित छन्दशास्त्र।
- 6 (vi) ज्योतिष - कालगणना और सृगोल संबंधी ज्ञान।



पुराण

पुराण का अर्थ - पुराना (प्राचीन इतिहास)।

इनकी संख्या 18 है।

- 1 विष्णु पुराण - भगवान विष्णु से संबंधित।
- 2 पद्म पुराण - सृष्टि और तीर्थों का वर्णन।
- 3 ब्रह्मा पुराण - ब्रह्मा से संबंधित।
- 4 शिव पुराण - भगवान शिव से संबंधित।
- 5 भागवत पुराण - भगवान कृष्ण की लीलाओं का वर्णन।
- 6 नारद पुराण - भक्ति, संगीत और धर्म का वर्णन।
- 7 मार्कण्डेय पुराण - ऋषि मार्कण्डेय से संबंधित।
- 8 अग्नि पुराण - अग्नि देव से संबंधित, विविध विषयों का संग्रह।
- 9 ब्रह्मवैवर्त पुराण - श्रीकृष्ण और राधा से संबंधित।
- 10 लिंग पुराण - भगवान शिव के लिंग रूप की महिमा।
- 11 वराह पुराण - भगवान वराह के अवतार से संबंधित।
- 12 स्कन्द पुराण - भगवान स्कन्द (कार्तिकेय) से संबंधित।
- 13 वामन पुराण - भगवान वामन अवतार से संबंधित।
- 14 कूर्म पुराण - भगवान कूर्म अवतार से संबंधित।
- 15 मत्स्य पुराण - भगवान मत्स्य अवतार से संबंधित।
- 16 गरुड़ पुराण - भगवान गरुड़ से संबंधित, मृत्यु के बाद की गति का वर्णन।
- 17 ब्रह्माण्ड पुराण - ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति और संरचना का वर्णन।
- 18 भविष्य पुराण - भविष्य के घटनाक्रमों का वर्णन।



महत्वपूर्ण तथ्य

- वेदांत वेदों का अन्तिम भाग है और इसकी संख्या 6 है।
- पुराण प्राचीन धार्मिक-ऐतिहासिक ग्रन्थ हैं और इनकी संख्या 18 है।
- वेद, वेदांग, उपनिषद, पुराण आदि वैदिक साहित्य का महत्वपूर्ण अंग हैं।

लेखक :
बिपिन कुमार चौधरी

हिन्दी भाषा का विकास क्रम

पृष्ठ
6

उपनिषद

उपनिषद का अर्थ है – “समीप बैठना” (गुरु के निकट बैठकर गूढ़ ज्ञान प्राप्त करना)।

उपनिषदों की संख्या लगभग 108 है।

मुख्य विशेषताएँ



- 1 माण्डूक्योपनिषद सबसे छोटा उपनिषद है (12 श्लोक)।
- 2 बृहदारण्यक उपनिषद सबसे बड़ा उपनिषद है।
- 3 सत्यमेव जयते को मुण्डकोपनिषद से लिया गया है।



(2) लौकिक संस्कृत (1000 ई.पू. से 500 ई.पू.)

- ◆ लोक में प्रचलित संस्कृत को लौकिक संस्कृत कहा गया।
- ◆ लौकिक संस्कृत में 48 ध्वनियाँ थीं।
- ◆ लौकिक संस्कृत को पाणिनि ने अष्टाध्यायी में नियमबद्ध किया है।

लौकिक संस्कृत व्याकरण की दृष्टि से व्यवस्थित और नियमबद्ध भाषा है, जिसे पाणिनि ने अष्टाध्यायी में प्रतिपादित किया।

लौकिक संस्कृत के प्रमुख ग्रंथ

क्रम	ग्रंथ	रचनाकार	क्रम	ग्रंथ	रचनाकार
1	वाल्मीकि रामायण	वाल्मीकि	8	भामह काव्यालंकार	भामह
2	वेदव्यास महाभारत	वेदव्यास	9	राजशेखर काव्यमीमांसा	राजशेखर
3	पाणिनि अष्टाध्यायी	पाणिनि	10	राजभोज सरस्वती-कण्ठ-भरणम्	राजभोज
4	चाणक्य अर्थशास्त्र	चाणक्य (कौटिल्य)	11	आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश	मम्मट
5	वात्स्यायन कामसूत्र	वात्स्यायन	12	हेमचन्द्र काव्यानुशासन	हेमचन्द्र
6	भरतमुनि नाट्यशास्त्र	भरतमुनि	13	आचार्य विश्वनाथ साहित्य दर्पण	विश्वनाथ
7	महर्षि दण्डी काव्यादर्श	महर्षि दण्डी	14	जगन्नाथ रसगंगाधर	जगन्नाथ

महत्वपूर्ण तथ्य

- ✓ उपनिषद वैदिक साहित्य का अंतिम भाग हैं।
- ✓ इनकी संख्या लगभग 108 है।
- ✓ उपनिषद, वेद, देवांग, पुराण आदि वैदिक साहित्य के महत्वपूर्ण अंग हैं।

लेखक :
बिपिन कुमार चौधरी

हिन्दी भाषा का विकास क्रम

पृष्ठ
7

(2) मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा काल (500 ई.पू. से 500 ई.)

❖ इस काल को मुख्यतः तीन भागों में बाँटा गया है—

1 पाली (500 ई.पू. से 1 ई.)

2 प्राकृत (1 ई. से 500 ई.)

3 अपभ्रंश (500 ई. से 1000 ई.)

4 अवहट्ट (900 ई. से 1100 ई.)

(1) पाली (500 ई.पू. से 1 ई. तक)

- ❖ पाली का अर्थ है — “बुद्ध वचन” अर्थात् भगवान बुद्ध द्वारा उपदेशित भाषा।
- ❖ भारत की प्राचीनतम देशभाषा ‘पाली’ मानी जाती है।
- ❖ गौतम बुद्ध द्वारा सभी उपदेश पाली भाषा में ही दिए गए थे।
- ❖ बौद्ध धर्म के साहित्य (त्रिपिटक) भी पाली भाषा में ही लिखे गए थे।

(1) सूत्रपिटक – गौतम बुद्ध के उपदेश

मुख्य बिंदु (सारांश)

- ✓ पाली मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा काल की आरंभिक अवस्था है।
- ✓ यह भाषा सरल, स्वाभाविक और जनसामान्य की भाषा थी।
- ✓ पाली में बुद्ध के उपदेशों के साथ-साथ बौद्ध साहित्य की रचना हुई।

लेखक :
बिपिन कुमार चौधरी

पाली भाषा का विकास क्रम

पृष्ठ
8

(2) विनयपिटक – आचार-व्यवहार से संबंधित

(3) अभिधम्मपिटक – दर्शन से संबंधित

पाली भाषा में लिखे गए प्रमुख ग्रंथ

- ♦ दीपवंश, महावंश, मिलिंदपन्हो, अट्ठकथा, साहित्य आदि ग्रंथ भी पाली भाषा में लिखे गए हैं।



पाली भाषा में तीन प्रकार के व्याकरण ग्रंथ उपलब्ध हैं –

1 कच्चान व्याकरण

2 मोग्गलान व्याकरण

3 सदनीति

पाली भाषा के प्रदेशों को लेकर विद्वानों के मतभेद

विद्वान	पाली भाषा प्रदेश
1 श्रीलंकाई बोदुध तथा चाइल्डर्स	→ मगध
2 वेस्टरगाई तथा स्टेनकोनो	→ उज्जयिनी या विंध्य प्रदेश
3 चियर्सन व राहुल सांस्कृत्यायन	→ मगध
4 ओल्डेन वर्ग	→ कलिंग
5 रीज डेविड्स	→ कोसल
6 सुनीति कुमार चटर्जी व उदयनारायण तिवारी	→ मध्यदेश की बोली
7 देवेन्द्रनाथ शर्मा	→ मथुरा के आस-पास

नोट :

सर्वसम्मति से विद्वानों ने पाली भाषा का प्रदेश मध्य प्रदेश की बोली को स्वीकार किया है।

मुख्य बिंदु (सारांश)

- ✓ विनयपिटक आचार-व्यवहार से संबंधित है।
- ✓ अभिधम्मपिटक दर्शन से संबंधित है।
- ✓ पाली भाषा के प्रमुख ग्रंथ: दीपवंश, महावंश, मिलिंदपन्हो, अट्ठकथा आदि।
- ✓ पाली भाषा के तीन व्याकरण ग्रंथ: कच्चान, मोग्गलान और सदनीति।
- ✓ विद्वानों के अनुसार पाली भाषा का प्रमुख प्रदेश “मध्य प्रदेश की बोली” है।



लेखक :
बिपिन कुमार चौधरी

संस्कृत भाषा और पाली के शब्दों में बदलाव

पृष्ठ
9

संस्कृत शब्द	पाली के शब्द
(1) अक्षर	अक्खर
(2) आर्य	अरिय
(3) चक्र	चक्क
(4) दुःख	दुक्ख
(5) क्षेत्र	खेत
(6) मार्ग	मग्ग
(7) मोक्ष	मोक्ख
(8) सत्य	सच्च

महत्वपूर्ण तथ्य

- ◆ संस्कृत से पाली में अनेक शब्दों के रूप बदल गए हैं।
- ◆ पाली में उच्चारण सरल और मधुर हो जाता है।
- ◆ पाली भाषा जनभाषा थी, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके।
- ◆ संस्कृत के कई जटिल व्यंजन-समूह पाली में सरल रूप में बदल जाते हैं।

(2) प्राकृत (1 ई. से 500 ई. तक)

- ✚ जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी द्वारा सभी उपदेश प्राकृत भाषा में दिए गए थे।
- ✚ जैन ग्रंथ जिन्हें आगम साहित्य कहा जाता है, वे भी प्राकृत भाषा में लिखे गए हैं।
- ✚ हेमचंद्र ने प्राकृत व्याकरण नामक एक महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी।
- ✚ हेमचंद्र के अनुसार प्राकृत का जन्म संस्कृत से हुआ है।
- ✚ हेमचंद्र को प्राकृत का पाणिनि कहा जाता है।

(1) सूत्रपिटक – गौतम बुद्ध के उपदेश

सारांश (मुख्य बिंदु)

- ✓ संस्कृत और पाली/प्राकृत में शब्दों के रूप में ध्वनि और व्यंजन परिवर्तन होता है।
- ✓ पाली भाषा सरल, स्वाभाविक और जनसामान्य की भाषा थी।
- ✓ पाली/प्राकृत में कई संस्कृत शब्द सरल रूप में बदल गए हैं।
- ✓ जैन एवं बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण ग्रंथ प्राकृत भाषा में रचे गए।

लेखक :

बिपिन कुमार चौधरी

संस्कृत भाषा और पाली के शब्दों में बदलाव

पृष्ठ
10

प्राकृत में लिखे गए ग्रंथ

रचनाकार	ग्रंथ
1 सर्वसेन	हरिविजय
2 प्रवरसेन द्वितीय	रावणवाहू
3 उदयोतन	कुवलयमाला
4 कौतूहल	लीलावती
5 अब्दुरहमान	संदेशरासक

महत्वपूर्ण तथ्य

- ◆ दीपवंश, महावंश, मिलिंदपन्हो, अट्टकथा, साहित्य आदि ग्रंथ भी पाली भाषा में लिखे गए हैं।
- ◆ पाली भाषा में संस्कृत के कई शब्द सरल रूप में बदल गए हैं।

(3) अपभ्रंश (500 ई. से 1000 ई. तक)

- **अपभ्रंश** का शाब्दिक अर्थ है – पतन, गिरा हुआ या बिगड़ा हुआ (रूप)।
- **अपभ्रंश शब्द** का सर्वप्रथम प्रयोग **पतंजलि** के महाभाष्य में मिलता है।
- अपभ्रंश का सबसे प्राचीन उदाहरण **भरतमुनि** के नाट्यशास्त्र में मिलता है, जिसमें अपभ्रंश को “**विभ्रष्ट**” कहा गया है।
- डॉ. भोलानाथ तिवारी और डॉ. उदयनारायण तिवारी के अनुसार, भाषा के अर्थ में अपभ्रंश शब्द का प्रथम प्रयोग **चण्ड (छठी शताब्दी)** ने अपने प्राकृत-लक्षण ग्रंथ में किया है।
- आचार्य किशोरीदास वाजपेयी ने अपभ्रंश को “**गणभाषा**” कहा है।



मुख्य बिंदु (सारांश)

- ✓ संस्कृत के शब्द पाली और प्राकृत में सरल व सहज रूप में बदल जाते हैं।
- ✓ अपभ्रंश का अर्थ है – पतन या बिगड़ा हुआ रूप।
- ✓ पाली और प्राकृत की रचनाओं से भाषा के क्रमिक विकास का पता चलता है।
- ✓ इन ग्रंथों का अध्ययन भारतीय भाषाओं के विकास को समझने में सहायक है।



लेखक :
बिपिन कुमार चौधरी

अपभ्रंश का परिचय एवं उसके भेद

पृष्ठ
11

- ◆ अपभ्रंश को विद्वानों ने निम्न नामों से भी पुकारा है - विश्रष्ट, आभीर, अवहंस, अवहट्ट, पटमंजरी, अवहट्ट, औहट तथा अवहत आदि।
- ◆ अपभ्रंश में कुल 40 ध्वनियाँ थीं।
- ◆ आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का विकास अपभ्रंश से हुआ है। (UPSI-2017)
- ◆ अपभ्रंश में साहित्य रचना मुख्यतः बल्लभी के राजा धरसेन के शिलालेखों में मिलती है।
- ◆ हेमचंद्र ने देशी शब्द-संग्रह के नाम से एक कोश नागर अपभ्रंश में लिखा, जिसे 'अपभ्रंश का व्याकरण' कहा जाता है।



अपभ्रंश के भेद

उत्तर भारत में अपभ्रंश के 7 भेद प्रचलित थे

क्रम सं.	अपभ्रंश का भेद	प्रमुख क्षेत्र / भाषाएँ
1.	शौरसेनी	पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी
2.	पैशाची	लहँदा, पंजाबी
3.	ब्राचड़ (ब्राचड़)	सिंधी
4.	खस	पहाड़ी
5.	महाराष्ट्री	मराठी
6.	अर्धमागधी	पूर्वी हिन्दी
7.	मागधी	बिहारी, बंगाली, उड़िया, असमिया

मुख्य बिंदु (सारांश)

- ✓ अपभ्रंश को विद्वानों ने विश्रष्ट, आभीर, अवहंस, अवहट्ट, पटमंजरी, अवहट्ट, औहट तथा अवहत आदि नामों से भी पुकारा है।
- ✓ अपभ्रंश में कुल 40 ध्वनियाँ थीं।
- ✓ आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का विकास अपभ्रंश से हुआ है। (UPSI-2017)
- ✓ अपभ्रंश में साहित्य रचना मुख्यतः बल्लभी के राजा धरसेन के शिलालेखों में मिलती है।
- ✓ हेमचंद्र का 'देशी शब्द-संग्रह' नागर अपभ्रंश में लिखा गया, जिसे 'अपभ्रंश का व्याकरण' कहा जाता है।
- ✓ उत्तर भारत में अपभ्रंश के सात भेद प्रचलित थे।

अपभ्रंश
आर्यभाषाओं
की जननी

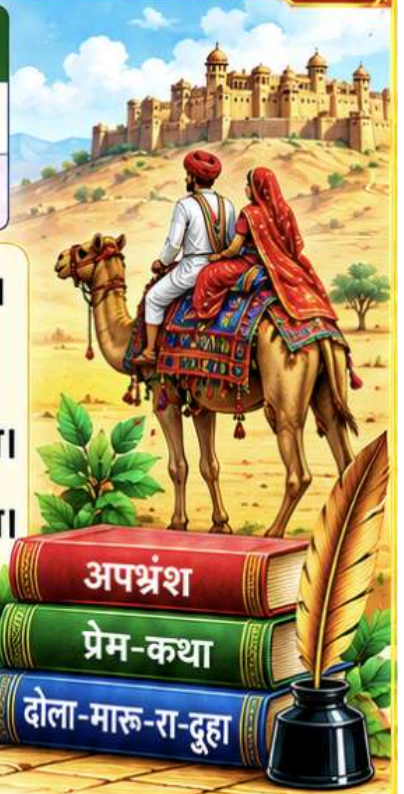
लेखक :
बिपिन कुमार चौधरी

अपभ्रंश का परिचय एवं उसके भेद

पृष्ठ
12

क्रम सं.	अपभ्रंश का भेद	प्रमुख क्षेत्र / भाषाएँ
6	अर्धमागधी	पूर्वी हिन्दी
7	मागधी	बिहारी, बंगाली, उड़िया, असमिया

- चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' ने उत्तरी अपभ्रंश को 'पुरानी हिन्दी' नाम दिया।
- विद्यापति ने उत्तरी अपभ्रंश को 'देसिल वयना' कहा।
- राष्ट्रकवि रामचंद्र शुक्ल ने उत्तरी अपभ्रंश को 'प्राकृताभास हिन्दी' कहा।
- डॉ. भोलाशंकर और अब्दुल रहमान ने अपभ्रंश को 'अवहट्ट' नाम दिया।
- अपभ्रंश भाषा के प्रथम व्याकरणाचार्य आचार्य हेमचंद्र थे।



अपभ्रंश के प्रमुख रचनाकार

- (1) स्वयंभू
इन्हें अपभ्रंश का वाल्मीकि कहा जाता है, क्योंकि इन्होंने 'पद्मचरित' नामक ग्रंथ की रचना की, जो रामकथा पर आधारित है।
- (2) पुष्पदंत
इन्हें कृष्णकाव्य का प्रणेता कहा जाता है।
रचनाएँ : महापुराण, पायकुमार चरित, जसहर चरित।
- (3) धनपाल
इनकी रचना 'भविसयदत्त कथा' को अपभ्रंश का पहला गद्य-काव्य कहा जाता है।
- (4) कुशलाभ
इनकी रचना राजस्थानी/डिंगल साहित्य की प्रसिद्ध प्रेम-कथा 'दोला-मारु-रा-दूहा' है।

मुख्य बिंदु (सारांश)

- ✓ अपभ्रंश को विद्वानों ने विथथ नामों से भी पुकारा है - विथ्रष्ट, आधीर, अवहंस, अवहट्ट, पटमंजरी, अवहंत्य, ओहट तथा अवहत आदि।
- ✓ अपभ्रंश में कुल 40 ध्वनियाँ थीं।
- ✓ आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का विकास अपभ्रंश से हुआ है। (UPSI-2017)
- ✓ अपभ्रंश में साहित्य रचना मुख्यतः बल्लभी के राजा धरसेन के शिलालेखों में मिलती है।
- ✓ हेमचंद्र ने देशी शब्द-संग्रह के नाम से एक कोश लिखा, जिसे 'अपभ्रंश का व्याकरण' कहा जाता है।
- ✓ उत्तर भारत में अपभ्रंश के सात भेद प्रचलित थे।

अपभ्रंश
भारतीय
आर्यभाषाओं के
विकास का
महत्वपूर्ण स्रोत है।

लेखक :
बिपिन कुमार चौधरी

अवहट्ट और आधुनिक भारतीय आर्यभाषा काल

पृष्ठ
13

(5) जिनदत्त सूरी

इनकी रचना – उपदेश रसायन, रसमन्तु गीत, रस-काव्य।

(4) अवहट्ट (900 ई. से 1100 ई. तक)

- ◆ अवहट्ट शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग **ज्योतिरीश्वर ठाकुर** ने अपने 'वर्णरत्नाकर' में किया था।
- ◆ अवहट्ट अपभ्रंश की ही परिवर्तित रूप है, इसलिए इसे अवहट्ट नाम दिया गया।
- ◆ अवहट्ट का सर्वप्रथम प्रयोग **विद्यापति** ने **कीर्तिलता** में किया था।



(3) आधुनिक भारतीय आर्यभाषा काल (1000 ई. से अब तक)

❖ इसे 3 भागों में बाँटा गया है –

(1) प्राचीन हिन्दी

(1000 ई. से 1400 ई.)

➤ प्रमुख कवि – अमीर खुसरो, चंदबरदाई आदि।

इस काल में लोकभाषा रूपों का विकास हुआ तथा वीर, भक्ति और प्रेम काव्य की समृद्ध परम्परा दिखाई देती है।

(2) मध्यकालीन हिन्दी

(1400 ई. से 1850 ई.)

➤ प्रमुख कवि – मलिक मोहम्मद जायसी, कबीरदास, सूरदास आदि।

इस काल में भक्ति, सूफी, रीतिकालीन तथा लोकधर्मी साहित्य का व्यापक विकास हुआ।

(3) आधुनिक हिन्दी

(1850 ई. से अब तक)

➤ प्रमुख विशेषताएँ – खड़ी बोली का विकास, गद्य साहित्य का विस्तार, राष्ट्रीय चेतना, समाज-सुधार और आधुनिक विचारों का उदय।

इस काल में हिन्दी साहित्य ने आधुनिकता, यथार्थवाद, प्रगतिवाद और नई कविता आदि प्रवृत्तियों के माध्यम से नए आयाम प्राप्त किए।

मुख्य बिंदु (सारांश)

- ✓ जिनदत्त सूरी की प्रमुख रचनाएँ – उपदेश रसायन, रसमन्तु गीत, रस-काव्य।
- ✓ अवहट्ट शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग **ज्योतिरीश्वर ठाकुर** ने अपने 'वर्णरत्नाकर' में किया था।
- ✓ अवहट्ट अपभ्रंश की ही परिवर्तित रूप है।
- ✓ अवहट्ट का सर्वप्रथम प्रयोग **विद्यापति** ने **कीर्तिलता** में किया था।
- ✓ आधुनिक भारतीय आर्यभाषा काल को 3 भागों में बाँटा गया है – प्राचीन हिन्दी, मध्यकालीन हिन्दी और आधुनिक हिन्दी।

अवहट्ट से आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं तक का काल हिन्दी के विकास में अति महत्वपूर्ण है।

लेखक :
बिपिन कुमार चौधरी



(iii) आधुनिक हिन्दी (1850 ई. से अब तक)

मुख्य विशेषताएँ

- ✓ इस काल में प्रमुखतः **खड़ी बोली** का प्रचलन हुआ।
- ✓ **भारतेन्दु हरिचन्द्र, जयशंकर प्रसाद, बच्चन, निराला** आदि की सृजनात्मक रचनाओं से हिन्दी साहित्य का आधुनिक रूप विकसित हुआ।



हिन्दी (1100 ई. से अब तक)

- हिन्दी एक फारसी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है – **‘हिन्द (भारत) की भाषा’**।
- हिन्दी की उत्पत्ति **शौरसेनी अपभ्रंश** से मानी जाती है। (UPSI-2017)
- वर्तमान में हिन्दी का प्रचलित रूप **खड़ी बोली** है।
- पुरानी हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी के मिश्रण से उत्पन्न नई ज़बान **‘हिन्दुस्तानी भाषा’** कहलाती है। (UPSI-2017)
- प्रयोग की दृष्टि से किसी भाषा का आदर्श रूप **‘मानक भाषा’** कहलाता है।



भारत की राजभाषा के रूप में हिन्दी

- भारत की राजभाषा **हिन्दी** को संविधानिक दर्जा दिया गया है।
- **14 सितम्बर 1949** को हिन्दी को **संविधानिक** रूप से **राजभाषा** घोषित किया गया था, इसलिए **14 सितम्बर** को प्रतिवर्ष **हिन्दी दिवस** के रूप में मनाया जाता है।



विश्व हिन्दी दिवस



- विश्व हिन्दी दिवस प्रतिवर्ष **10 जनवरी** को मनाया जाता है।
- इसका उद्देश्य विश्व स्तर पर हिन्दी के प्रचार-प्रसार और उसके महत्व को रेखांकित करना है।



राजभाषा आयोग

- राष्ट्रपति **डॉ. राजेन्द्र प्रसाद** द्वारा वर्ष **1955** में गठित प्रथम राजभाषा आयोग के अध्यक्ष **बी. जी. खेर** थे, तथा इस आयोग में कुल **21 सदस्य** थे।

संविधान में राजभाषा का वर्णन

- भारतीय संविधान के **भाग-17 (अनुच्छेद 343 से 351)** में राजभाषा से संबंधित प्रावधानों का वर्णन किया गया है।



► संविधान की आठवीं अनुसूची में कुल 22 भाषाओं का वर्णन किया गया है।

भारत में हिन्दी भाषा : राज्य

- 1 उत्तर प्रदेश - राजभाषा (हिन्दी)
- 2 उत्तराखण्ड - राजभाषा (हिन्दी)
- 3 मध्य प्रदेश - राजभाषा (हिन्दी)
- 4 छत्तीसगढ़ - राजभाषा (हिन्दी)
- 5 बिहार - राजभाषा (हिन्दी)
- 6 झारखण्ड - राजभाषा (हिन्दी)
- 7 राजस्थान - राजभाषा (हिन्दी)
- 8 हरियाणा - राजभाषा (हिन्दी)
- 9 हिमाचल प्रदेश - राजभाषा (हिन्दी)
- 10 दिल्ली (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) - राजभाषा (हिन्दी)



राज्य मानचित्र

हिन्दी भाषा का नामकरण

- ♦ हिन्दी - यह शब्द फ़ारसी भाषा के 'हिन्द' (भारत) शब्द से बना है, जिसका अर्थ है - भारत की भाषा।
- ♦ शौरसेनी - हिन्दी की उत्पत्ति शौरसेनी अपभ्रंश से मानी जाती है। (UPSI-2017)
- ♦ खड़ी बोली - वर्तमान मानक हिन्दी का विकसित रूप खड़ी बोली है।
- ♦ हिन्दुस्तानी भाषा - पुरानी हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी के मिश्रण से उत्पन्न नई ज़बान को 'हिन्दुस्तानी भाषा' कहा जाता है। (UPSI-2017)
- ♦ मानक भाषा - प्रयोग की दृष्टि से किसी भाषा का आदर्श रूप 'मानक भाषा' कहलाता है।

अविरक्त जानकारी (छात्रों के लिए उपयोगी)

- 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को संविधान द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था।
- इसलिए 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- हिन्दी भारत की प्रमुख संपर्क भाषा है।
- वर्तमान में हिन्दी विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है और इसका वैश्विक महत्व निरंतर बढ़ रहा है।

हिन्दी
भारत की
संपर्क भाषा
और
राष्ट्रीय भाषा
की आधारशिला

लेखक :
बिपिन कुमार चौधरी

हिन्दी शब्द का विकास क्रम



सिंधु नदी

सिंधु से हिन्दी तक

विदेशी लोगों ने भारत को **सिंधु नदी** के कारण '**सिंधु**' का देश कहा। समय के साथ '**हिंदु**' → '**हिन्दु**' → '**हिन्द**' → '**हिन्द+ई**' → '**हिन्दी**' शब्द का विकास हुआ।

सिंधु

हिन्दी शब्द की उत्पत्ति और नामकरण

- 1 **हिन्दी** शब्द की व्युत्पत्ति भारत के उत्तर-पश्चिम में प्रवाहित '**सिंधु नदी**' से सम्बन्धित है।
- 2 विदेशी यात्री, विशेषकर ईरानी (फ़ारसी) लोगों ने **सिंधु नदी** के कारण भारत को '**सिंधु**' का देश कहा।
- 3 फारसी भाषा में '**स**' का उच्चारण प्रायः '**ह**' तथा '**ध**' का उच्चारण '**द**' होता है (भाषाई प्रवृत्ति के अनुसार)। इसलिए '**सिंधु**' → '**हिन्दु**' कहा जाने लगा।
- 4 इसके बाद '**हिन्दु**' से '**हिन्द**' रूप बना और '**हिन्द**' में '**ई**' प्रत्यय लगने से '**हिन्दी**' शब्द का गठन हुआ।
- 5 फारसी भाषा के प्रभाव और सम्पर्क के कारण '**ई**' प्रत्यय लगने से '**हिन्दी**' शब्द प्रचलित हुआ।
- 6 इस प्रकार '**सिंधु**' → '**हिन्दु**' → '**हिन्द**' → '**हिन्द+ई**' → '**हिन्दी**' शब्द का नामकरण हुआ।

अतिरिक्त महत्वपूर्ण तथ्य (छात्रों के लिए उपयोगी)

- ✓ **सिंधु** नदी भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमा में स्थित एक महत्वपूर्ण नदी है।
- ✓ प्राचीन काल में '**सिंधु**' शब्द का भौगोलिक क्षेत्र के अर्थ में प्रयोग होता था।
- ✓ मध्यकाल में '**हिन्दवी**', '**हिन्दुस्तानी**' और '**हिन्दी**' शब्द प्रचलित हुए।
- ✓ धीरे-धीरे '**हिन्दी**' उत्तर भारत की प्रमुख संपर्क भाषा के रूप में विकसित हुई।
- ✓ हिन्दी आज विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है और भारत की संवैधानिक राजभाषा है।

सिंधु
से
हिन्दी
तक
एक
ऐतिहासिक
यात्रा

लेखक :

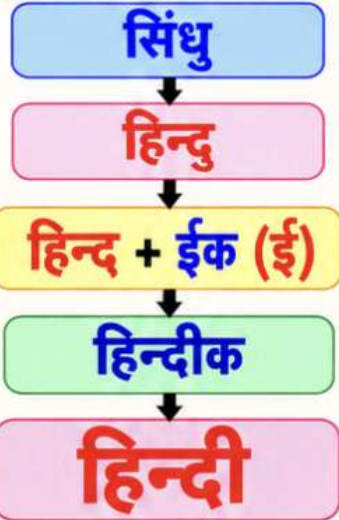
बिपिन कुमार चौधरी

हिन्दी और आधुनिक भारतीय आर्यभाषा काल

पृष्ठ
17

हिन्दी शब्द का निर्माण

निर्माण की प्रक्रिया



- 1 हिन्द शब्द में 'ईक' (ई) प्रत्यय जुड़ने से 'हिन्दीक' (हिन्दीक) शब्द बना, जिसका अर्थ था - 'हिन्द का', अर्थात् भारत का।
- 2 इसी 'हिन्दीक' से आगे चलकर 'हिन्दी' शब्द बना।
- 3 विदेशी यात्री खासकर ईरानी (फारसी) लोगों ने सिंधु नदी के कारण भारत को 'सिंधु' का देश कहा। समय के साथ 'सिंधु' → 'हिन्द' → 'हिन्दीक' → 'हिन्दी' शब्द का विकास हुआ।



हिन्दी शब्द की उत्पत्ति और विकास

- 1 हिन्द शब्द में 'ईक' (ई) प्रत्यय जुड़ने से 'हिन्दीक' शब्द बना, जिसका अर्थ 'हिन्द का' अर्थात् भारत का था। इसी 'हिन्दीक' से आगे चलकर 'हिन्दी' शब्द बना।
- 2 इस प्रकार 'हिन्दी' शब्द की उत्पत्ति 'हिन्दु' देश (भारत) के निवासियों के अर्थ में हुई।
- 3 आगे चलकर यह शब्द **भारत की भाषा** के अर्थ में प्रचलित होने लगा।

हिन्दी भाषा के लिए विभिन्न शब्दों का सर्वप्रथम प्रयोग

- 1 हिन्दी भाषा के लिए 'हिन्दी' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग - **शरफुद्दीन यज़्दी** ने 1424 ई. में अपनी रचना 'जफ़रनामा' में किया।
- 2 हिन्दी भाषा के लिए 'हिन्दवी' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग - **अमीर खुसरो** ने किया।
- 3 हिन्दी भाषा के लिए 'हिन्दुई' (हिन्दुई) शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग - **गार्सी द तासी (Garcin de Tassy)** ने किया।

शब्द-निर्माण का क्रम



हिन्दी शब्द से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य

- 1 हिन्दी शब्द मूलतः **फारसी भाषा** का शब्द है।
- 2 हिन्दी शब्द **ईरानियों द्वारा दिया गया**।
- 3 हिन्दी की मूल उत्पत्ति वैदिक संस्कृत से मानी जाती है।
- 4 भारत की राजभाषा **हिन्दी** को संविधान की आठवीं अनुसूची में संवैधानिक दर्जा दिया गया है।
- 5 **14 सितम्बर 1949** को हिन्दी को संविधान की राजभाषा घोषित किया गया था, इसलिए **14 सितम्बर** को **हिन्दी दिवस** के रूप में मनाया जाता है।
- 6 **विश्व हिन्दी दिवस - 10 जनवरी** को मनाया जाता है।

अतिरिक्त जानकारी (छात्रों के लिए उपयोगी)

- ✓ हिन्दी भारत की प्रमुख संपर्क भाषा है।
- ✓ मध्यकाल में 'हिन्दवी', 'हिन्दुस्तानी' और 'हिन्दी' शब्द प्रचलित हुए।
- ✓ धीरे-धीरे 'हिन्दी' उत्तर भारत की प्रमुख भाषा के रूप में विकसित हुई।
- ✓ हिन्दी आज भारत की संवैधानिक राजभाषा है तथा विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है।
- ✓ हिन्दी भाषा भारतीय संस्कृति, साहित्य, विचार और जन-जीवन की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है।

लेखक : बिपिन कुमार चौधरी

हिन्दी और आधुनिक भारतीय आर्यभाषा काल

पृष्ठ
18

1. सर्वप्रथम अमीर खुसरो का योगदान

- सर्वप्रथम **अमीर खुसरो** ने मध्यदेश की भाषा के लिए **हिन्दवी (हिन्दी)** शब्द का प्रयोग किया।
- अमीर खुसरो को **'खड़ी बोली का जनक'** भी कहा जाता है।
- आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक **भारतेन्दु हरिश्चंद्र** जी को माना जाता है।



अमीर खुसरो
(1253-1325)

भारतेन्दु हरिश्चंद्र
(1850-1885)

2. 'हिन्दी है हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा'

- यह पंक्तियाँ प्रसिद्ध शायर **मोहम्मद इकबाल** द्वारा **1905 ई.** में लिखी गई थी और इसे सबसे पहले सरकारी कॉलेज, लाहौर में पढ़कर सुनाया गया था।
- यह पंक्ति इकबाल की रचना **'बंग-ए-दरा' (Bang-e-Dara)** में सम्मिलित है।



मोहम्मद इकबाल
(1877-1938)

3. हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान

- हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तान - ये शब्द **भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी** द्वारा प्रचलित किए गए और इन शब्दों ने भारतीय सांस्कृतिक पहचान को मजबूत किया।

हिन्दी
(भाषा)

हिन्दू
(समाज)

हिन्दुस्तान
(देश)

विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाएँ



4. वर्ल्ड लैंग्वेज डेटाबेस - एथनोलॉग (Ethnologue)

- एथनोलॉग (Ethnologue)** की स्थापना **1951 ई.** में की गई।
- यह विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं का वार्षिक डेटाबेस जारी करता है।
- 21 फरवरी 2020** को अंतराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर एथनोलॉग के **22वें** संस्करण के अनुसार वर्तमान में विश्व में बोली जाने वाली कुल **7111 भाषाओं** को सूचीबद्ध किया गया है।
- इन भाषाओं में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाएँ **चीनी (मंदारिन), अंग्रेजी, हिन्दी, स्पेनी, अरबी** आदि हैं।

मुख्य बिंदु

- अमीर खुसरो - **हिन्दवी (हिन्दी)** शब्द का प्रथम उपयोगकर्ता।
- अमीर खुसरो - **खड़ी बोली** का जनक।
- भारतेन्दु हरिश्चंद्र** - आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक।
- 'हिन्दी है हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा'** - **मोहम्मद इकबाल (1905)**।
- यह पंक्ति **'बंग-ए-दरा'** में है और इसे **लाहौर** में सुनाया गया था।
- एथनोलॉग की स्थापना - **1951**, कुल भाषाएँ - **7111 (22वाँ संस्करण, 2020)**।



परीक्षा उपयोगी तथ्य

- हिन्दवी शब्द का प्रयोग - अमीर खुसरो।
- खड़ी बोली का जनक - अमीर खुसरो।
- आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक - **भारतेन्दु हरिश्चंद्र**।
- 'हिन्दी है हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा'** - **मोहम्मद इकबाल (1905, लाहौर)**।
- बंग-ए-दरा** - मोहम्मद इकबाल की रचना।
- एथनोलॉग की स्थापना - **1951**।
- कुल भाषाएँ (**22वाँ संस्करण, 2020**) - **7111**।

लेखक : विपिन कुमार चौधरी

1 हिन्दवी

- हिन्दवी को **हिन्दुई**, जवान-ए-हिन्दी, देहलवी आदि नामों से भी जाना जाता था।
- यह मध्यकाल में **मध्यप्रदेश** (मध्यदेश) के हिन्दुओं की **लोकभाषा** थी, जिसमें अरबी-फारसी शब्दों का भी प्रभाव था।
- सर्वप्रथम **अमीर ख़ुसरो** ने मध्यदेश की भाषा के लिए '**हिन्दवी**' शब्द का प्रयोग किया।
- अमीर ख़ुसरो द्वारा लिखी गई एक फारसी-हिन्दवी कोश '**खालिकबारी**' में हिन्दवी शब्द लगभग **30 बार** और 'हिन्दी' शब्द लगभग **5 बार** देशी भाषा के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।



2 भाषा या भाषा



- 19वीं सदी तक '**हिन्दी**' शब्द का प्रयोग चलता रहा, परन्तु आगे चलकर '**भाषा**' शब्द अधिक प्रचलित हुआ।
- **फोर्ट विलियम कॉलेज** (कलकत्ता) में नियुक्त हिन्दी अध्यापकों को '**भाषा मुंशी**' कहा जाता था - इससे स्पष्ट होता है कि उस समय हिन्दी को ही '**भाषा**' कहा जाता था।
- **विद्यापति, कबीरदास, तुलसीदास** तथा **केशवदास** आदि कवियों ने अपनी रचनाओं में '**भाषा**' शब्द का प्रयोग हिन्दी के लिए किया था।

3 रेखा



- मध्यकाल में मुस्लिमों में प्रचलित अरबी-फारसी शब्दों से मिश्रित जो काव्य-भाषा विकसित हुई, उसे '**रेखा**' कहा गया।
- इसका प्रयोग मुख्यतः उर्दू **शायरों** ने किया।

मुख्य बिंदु

- 1 **हिन्दवी** - मध्यदेश की लोकभाषा (**अमीर ख़ुसरो** द्वारा प्रयुक्त)
- 2 **भाषा मुंशी** - फोर्ट विलियम कॉलेज में हिन्दी अध्यापकों का नाम
- 3 **खालिकबारी** - हिन्दवी शब्द **30 बार**, हिन्दी शब्द **5 बार**
- 4 **भाषा** शब्द का प्रयोग - **विद्यापति, कबीरदास, तुलसीदास, केशवदास**
- 5 **रेखा** - अरबी-फ़ारसी मिश्रित काव्य-भाषा, उर्दू शायरों द्वारा प्रयुक्त

परीक्षा उपयोगी तथ्य

- ✓ हिन्दवी - अमीर ख़ुसरो द्वारा प्रयुक्त।
- ✓ **खालिकबारी** - हिन्दवी (**30 बार**), हिन्दी (5 बार)।
- ✓ फोर्ट विलियम कॉलेज - '**भाषा मुंशी**' शब्द।
- ✓ विद्यापति, कबीरदास, तुलसीदास, केशवदास - '**भाषा**' शब्द का प्रयोग।
- ✓ **रेखा** - अरबी-फारसी मिश्रित काव्य-भाषा।

लेखक : बिपिन कुमार चौधरी

हिन्दी और आधुनिक भारतीय आर्यभाषा काल

पृष्ठ
20

1. प्रमुख भारतीय भाषाओं के बोलने वाले (करोड़ में)

(iii) हिन्दी - 61.5 करोड़

(vii) बंगाली - 26.5 करोड़

(xi) उर्दू - 17.0 करोड़

(xv) मराठी - 9.5 करोड़

(xvi) तेलुगू - 9.3 करोड़

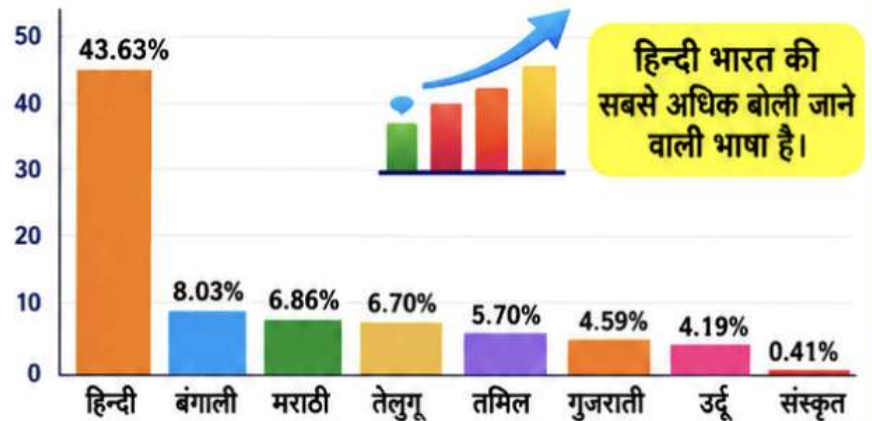
(xix) तमिल - 8.1 करोड़



2. 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं की सूची

क्रम	भाषा	प्रतिशत (%)
(i)	हिन्दी	43.63%
(ii)	बंगाली	8.03%
(iii)	मराठी	6.86%
(iv)	तेलुगू	6.70%
(v)	तमिल	5.70%
(vi)	गुजराती	4.59%
(vii)	उर्दू	4.19%
(viii)	संस्कृत	0.41%

सर्वाधिक बोली जाने वाली भारतीय भाषाएँ (प्रतिशत में)



3. हिन्दी के विविध नाम और रूप

नाम/रूप	संक्षिप्त परिचय
हिन्दवी	प्राचीन काल में प्रचलित नाम
हिन्दुई	अपभ्रंश काल का रूप
जवान-ए-हिन्दी	फ़ारसी लेखकों द्वारा प्रयुक्त नाम
देहलवी	दिल्ली क्षेत्र की हिन्दी
खड़ी बोली	आधुनिक हिन्दी का आधार
हिन्दुस्तानी	हिन्दी-उर्दू का समन्वित रूप
भारतेन्धु भाषा	आधुनिक युग में प्रचारित हिन्दी
राजभाषा हिन्दी	स्वतंत्र भारत की राजभाषा

महत्वपूर्ण तथ्य

- ✓ हिन्दी भारतीय आर्यभाषा समूह की प्रमुख और सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है।
- ✓ भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिन्दी भारत की राजभाषा है।
- ✓ हिन्दी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।
- ✓ हिन्दी का आधुनिक रूप मुख्यतः 'खड़ी बोली' के आधार पर विकसित हुआ है।
- ✓ हिन्दी अनेक प्रादेशिक बोलियों और भाषिक रूपों से समृद्ध हुई है, जैसे - ब्रज, अवधी, भोजपुरी, बुंदेली, हरियाणवी, राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी आदि।

लेखक : बिपिन कुमार चौधरी

1 ऐसी भाषाएँ जो वर्तमान में बोली नहीं जातीं

➤ इसके अलावा लगभग **348** ऐसी भाषाएँ हैं, जिन्हें वर्तमान में नहीं बोला जाता, परन्तु वे भाषायी इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

2 एथनोलॉग के 22वें संस्करण (2020) के अनुसार भाषाओं का स्थान

क्रम	भाषा	भाषी संख्या (करोड़ में)	विश्व में स्थान
(i)	अंग्रेजी	113.2	1
(ii)	मंदारिन (चीनी)	111.7	2
(iii)	हिन्दी	61.5	3
(iv)	स्पेनिश	53.4	4
(v)	फ्रेंच	28.0	5
(vi)	अरबी	27.4	6
(vii)	बंगाली	26.5	7
(viii)	रूसी	25.8	8
(ix)	पुर्तगाली	19.9	9
(x)	इण्डोनेशियाई	17.0	10
(xi)	उर्दू	17.0	11
(xv)	मराठी	9.5	15
(xvi)	तेलुगु	9.3	16
(xix)	तमिल	8.1	19

3 विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली 20 भाषाओं में से 6 भारतीय भाषाएँ

➤ विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली 20 भाषाओं में निम्न 6 भारतीय भाषाएँ शामिल हैं -

- | | |
|---|---|
| 1 हिन्दी - 3वाँ स्थान (61.5 करोड़) | 4 मराठी - 15वाँ स्थान (9.5 करोड़) |
| 2 बंगाली - 7वाँ स्थान (26.5 करोड़) | 5 तेलुगु - 16वाँ स्थान (9.3 करोड़) |
| 3 उर्दू - 11वाँ स्थान (17.0 करोड़) | 6 तमिल - 19वाँ स्थान (8.1 करोड़) |



महत्वपूर्ण तथ्य

- ✓ **एथनोलॉग (Ethnologue)** विश्व की भाषाओं का प्रमुख वार्षिक डेटाबेस है।
- ✓ इसका **22वाँ संस्करण वर्ष 2020** में प्रकाशित हुआ।
- ✓ **हिन्दी**, विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में तीसरे स्थान पर है।
- ✓ **मंदारिन (चीनी)** और **अंग्रेजी** विश्व की क्रमशः पहली और दूसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाएँ हैं।
- ✓ भारतीय आर्यभाषाओं में **हिन्दी** के बाद **बंगाली** का विश्व में **सातवाँ स्थान** है।
- ✓ **उर्दू**, विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में **ग्यारहवाँ स्थान** पर है।

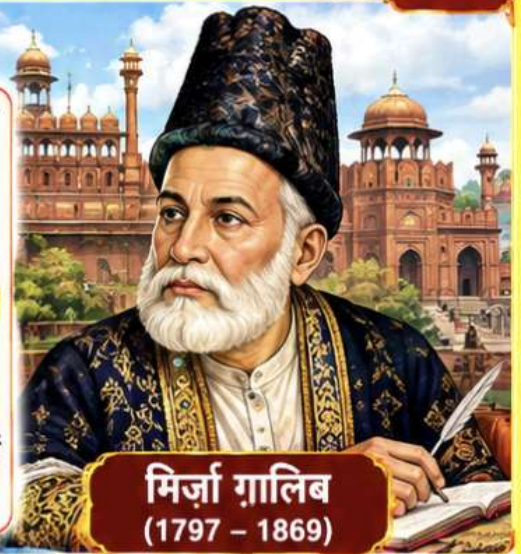
परीक्षा उपयोगी बिंदु

- ✓ **एथनोलॉग** - विश्व की भाषाओं का वार्षिक डेटाबेस।
- ✓ **22वाँ संस्करण** - वर्ष 2020।
- ✓ **हिन्दी** - विश्व में **3रे स्थान** पर।
- ✓ **मंदारिन (चीनी)** - 1, अंग्रेजी - 2।
- ✓ भारतीय भाषाएँ (टॉप 20 में) - हिन्दी, बंगाली, उर्दू, मराठी, तेलुगु, तमिल।
- ✓ इसके अलावा **348 भाषाएँ** ऐसी हैं जो वर्तमान में नहीं बोली जातीं।

लेखक : बिपिन कुमार चौधरी

3 मिर्ज़ा ग़ालिब और उनकी रचनाएँ

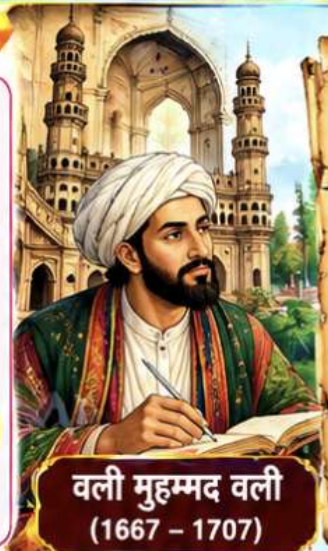
- मिर्ज़ा ग़ालिब और मीर तकी मीर द्वारा इन दोनों का जन्म **आगरा** में हुआ था।
- मिर्ज़ा ग़ालिब का पूरा नाम **मिर्ज़ा असदुल्लाह बेग ख़ाँ** था।
- वे मुग़ल काल के आंतिम शासक **बहादुरशाह ज़फ़र** के दरबारी कवि थे।
- उन्होंने बहादुरशाह ज़फ़र द्वारा '**दबीर-उल-मुल्क**' तथा '**नज़म-उद-दौला**' की उपाधि भी प्राप्त की थी।
- सन् **1857** के विद्रोह के समय ग़ालिब दिल्ली में थे।
- **1954** में मिर्ज़ा ग़ालिब पर फ़िल्म '**सोहराब मोदी**' द्वारा बनाई गई, जिसमें उनके जीवन और ग़ालिब की भारतीय भाषा-चेतना को प्रमुखता दी गई।



मिर्ज़ा ग़ालिब
(1797 – 1869)

4 दक्खिनी या दक्कनी हिन्दी

- मध्यकाल में दक्कन के मुस्लिम शासकों द्वारा फ़ारसी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी को '**दक्खिनी**' (या दक्कनी हिन्दी) कहा जाता है।
- हिन्दी में **गद्य** रचना प्रारम्भ करने का श्रेय दक्कनी हिन्दी के रचनाकारों को ही है।
- दक्कनी हिन्दी को दक्षिण भारत में लाने का श्रेय प्रसिद्ध शायर **वली मुहम्मद वली** को जाता है।
- वली मुहम्मद वली, मुग़ल शासक **मुहम्मद शाह 'रंगीला'** के शासनकाल में दिल्ली आए थे और उनकी रचनाओं ने उत्तरी भारत में दक्कनी हिन्दी को लोकप्रिय बनाया।



वली मुहम्मद वली
(1667 – 1707)

दक्खिनी हिन्दी की विशेषताएँ

- ❖ दक्षिण भारत में विकसित हिन्दी का रूप।
- ❖ फ़ारसी लिपि में लिखी जाती थी।
- ❖ इसमें स्थानीय भाषाओं का प्रभाव भी मिलता है।
- ❖ **गद्य** और **काव्य** – दोनों की परंपरा विकसित हुई।
- ❖ वली मुहम्मद वली की रचनाएँ महत्वपूर्ण हैं।

5 खड़ी बोली

- खड़ी बोली का जनक **अमीर खुसरो** को माना जाता है।
- यह हिन्दी की आधुनिक मानक भाषा के विकास की आधारशिला है।
- अमीर **खुसरो** ने खड़ी बोली, ब्रज, अवधी, फ़ारसी आदि भाषाओं से समन्वय से लोकभाषा को समृद्ध किया।
- इनकी रचनाओं में जनभाषा की सहजता और लोकजीवन की झलक मिलती है।
- खड़ी बोली आगे चलकर आधुनिक हिन्दी साहित्य की मुख्य धारा बनी।



अमीर खुसरो
(1253 – 1325)

अमीर खुसरो का योगदान

- ◆ खड़ी बोली के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका।
- ◆ लोकभाषा और दरबारी भाषा का समन्वय।
- ◆ कविता, संगीत, सूफी साहित्य में अमूल्य योगदान।
- ◆ हिन्दी साहित्य में जनभाषा की प्रतिष्ठा बढ़ाई।

महत्वपूर्ण तथ्य

- ✓ मीर और ग़ालिब – दोनों का जन्म **आगरा** में हुआ था।
- ✓ ग़ालिब को '**दबीर-उल-मुल्क**' और '**नज़म-उद-दौला**' की उपाधि मिली।
- ✓ दक्खिनी हिन्दी के प्रमुख कवि – **वली मुहम्मद वली**।
- ✓ खड़ी बोली का जनक – **अमीर खुसरो**।

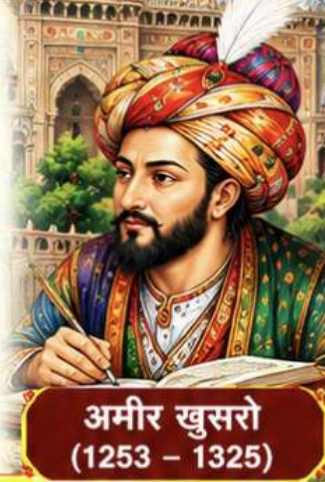
परीक्षा उपयोगी बिंदु

- ✓ मिर्ज़ा ग़ालिब का पूरा नाम – मिर्ज़ा असदुल्लाह बेग ख़ाँ।
- ✓ 1954 में ग़ालिब पर फ़िल्म – सोहराब मोदी द्वारा।
- ✓ दक्खिनी हिन्दी – फ़ारसी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी।
- ✓ खड़ी बोली – हिन्दी की आधुनिक मानक भाषा का आधार।
- ✓ वली मुहम्मद वली – दक्खिनी हिन्दी को उत्तर भारत में लोकप्रिय बनाया।

लेखक : बिपिन कुमार चौधरी

1 अमीर खुसरो और उनकी रचनाएँ

- अमीर खुसरो का वास्तविक नाम **अबुल हसन यमीनुद्दीन मुहम्मद** था।
- उनका जन्म सन् 1253 ई० में उत्तर प्रदेश के एटा जिले के **पटियाली** नामक स्थान पर हुआ था।
- वे सूफी संत **हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया** के प्रिय शिष्य थे।
- उन्होंने फारसी, हिन्दी (हिन्दवी), **जवान-ए-उर्दू** (उर्दू) और हिंदुस्तानी में अनेक महत्वपूर्ण रचनाएँ कीं।



अमीर खुसरो
(1253 – 1325)

मुख्य तथ्य

- मुगल काल के अंतिम शासक बहादुरशाह ज़फ़र के दरबारी कवि थे।
- उन्होंने बहादुरशाह ज़फ़र द्वारा '**दबीर-उल-मुल्क**' तथा '**नज़म-उद-दौला**' की उपाधि भी प्राप्त की थी।
- सन् 1954 में '**मिर्ज़ा ग़ालिब**' पर फिल्म '**सोहराब मोदी**' द्वारा बनाई गई, जिसमें मिर्ज़ा-ग़ालिब का अभिनव्य भारत-भूषण द्वारा किया गया था।
- अमीर खुसरो को संगीत, साहित्य और भाषा के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए स्मरण किया जाता है।

2 खड़ी बोली की 3 शैलियाँ

अमीर खुसरो के समय खड़ी बोली **तीन प्रमुख शैलियाँ** में प्रचलित थी -

- हिन्दी** (शुद्ध/देशज रूप)
- जबान-ए-उर्दू** (फारसी-प्रभावित रूप)
- हिंदुस्तानी** (हिन्दी और उर्दू का सम्मिलित रूप)



तीनों शैलियाँ की विशेषताएँ

शैली	भाषिक स्वरूप	मुख्य विशेषता
हिन्दी	देशज, तत्सम-तदभूव शब्दों पर आधारित	सरल, लोकप्रचलित और जनभाषा के निकट
जबान-ए-उर्दू	फ़ारसी, अरबी और तुर्की शब्दों से प्रभावित	दरबारी एवं अभिजात्य वर्ग में प्रचलित
हिंदुस्तानी	हिन्दी और उर्दू का मिश्रित रूप	भिन्न समुदायों में समन्वय की भाषा

3 अमीर खुसरो की प्रमुख रचनाएँ

- उन्होंने फारसी में अनेक ग्रंथ और काव्य रचनाएँ कीं।
- खड़ी बोली और हिंदुस्तानी में उनकी रचनाएँ लोकजीवन से जुड़ी हुई हैं।
- उनकी रचनाओं में **पहेलियाँ**, **मुकरियाँ**, **लोकगीत** और **दोहे** प्रमुख हैं।
- उन्होंने भारतीय संगीत को नई दिशा दी। उन्हें कई संगीत विधाओं के विकास का श्रेय दिया जाता है।

प्रसिद्ध रचनाएँ/रचनात्मक रूप

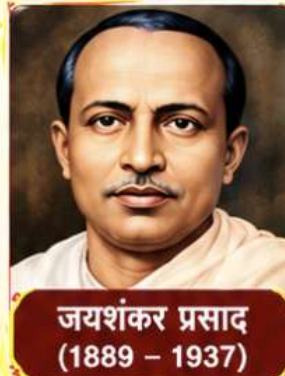
- पहेलियाँ
- मुकरियाँ
- दोहे
- लोकगीत
- गज़लें (फ़ारसी)
- कव्वालियाँ
- ख़याल और तराना (संगीत)



हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया
(उनके गुरु)

4 जयशंकर प्रसाद और दक्खनी हिन्दी

- मध्यकाल में दक्खन के मुस्लिम शासकों द्वारा फारसी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी को '**दक्खनी**' (या **दकनी हिन्दी**) कहा जाता है।
- हिन्दी में गद्य रचना प्रारंभ करने का श्रेय आधुनिक काल में **जयशंकर प्रसाद** को है।
- दक्खनी हिन्दी को दक्षिण भारत में लाने का श्रेय मुख्यतः **वली मुहम्मद वली** को दिया जाता है।
- वली मुहम्मद वली, मुगल शासक **मुहम्मद शाह 'रंगीला'** के शासनकाल में दिल्ली आए और उनकी रचनाओं ने उत्तर भारत में दक्खनी हिन्दी को लोकप्रिय बनाया।



जयशंकर प्रसाद
(1889 – 1937)

जयशंकर प्रसाद की प्रमुख रचनाएँ

- कंकाल (उपन्यास)
- तितली (उपन्यास)
- झरना (काव्य-संग्रह)
- आँसू (काव्य-संग्रह)
- लहर (काव्य-संग्रह)

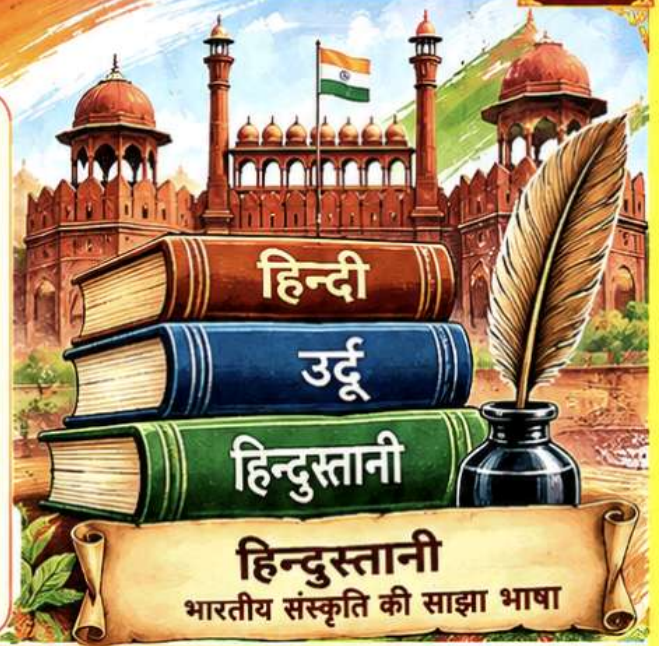
महत्वपूर्ण तथ्य

- अमीर खुसरो भाषा, साहित्य और संगीत के महान् समन्वयक थे।
- खड़ी बोली की तीन शैलियाँ - **हिन्दी**, **जबान-ए-उर्दू** और **हिंदुस्तानी** - उनके समय में प्रचलित थीं।

लेखक : बिपिन कुमार चौधरी

(iii) हिन्दुस्तानी

- ❖ हिन्दी और उर्दू का सम्मिलित रूप, तथा आम जन द्वारा प्रयुक्त होने वाली भाषा को 'हिन्दुस्तानी' कहा जाता है।
- ❖ यह भाषा भारतीय जनजीवन में बहुत लोकप्रिय रही है, जिसमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, फारसी और अरबी मूल के शब्दों का समन्वय मिलता है।
- ❖ **जैसे** – प्रेमचन्द की रचनाएँ : गोदान, गबन, कर्मभूमि, सेवासदन आदि।



भाषा परिवार

- ❖ ऐसी भाषाओं का समूह जिनका जन्म किसी एक ही मूल भाषा से हुआ हो, उसे 'भाषा परिवार' कहा जाता है।
- ❖ भारत में मुख्यतः चार भाषा परिवार और एक अन्य परिवार पाया जाता है –

(i) भारोपीय भाषा परिवार	: हिन्दी, उर्दू, बंगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी आदि।
(ii) द्रविड़ भाषा परिवार	: तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम आदि।
(iii) आस्ट्रिक (मुंझा) भाषा परिवार	: संथाली, मुंडारी, हो, खड़िया आदि।
(iv) चीनी-तिब्बती भाषा परिवार	: बोडो, मणिपुरी, गारो, मिजो आदि।
(v) अन्य (अंडमानी/निकोबारी) परिवार	: अंडमानी, निकोबारी भाषाएँ।

महत्वपूर्ण तथ्य

- ✓ हिन्दुस्तानी भारतीय समाज की संपर्क भाषा रही है।
- ✓ यह सरल, सहज और जनप्रिय भाषा मानी जाती है।
- ✓ हिन्दुस्तानी में हिन्दी और उर्दू दोनों की शब्द-संपदा का उपयोग मिलता है।
- ✓ प्रेमचन्द, फ़िल्म, संगीत और लोक-संस्कृति में हिन्दुस्तानी का व्यापक प्रयोग हुआ है।

हिन्दुस्तानी की विशेषताएँ

- ✓ हिन्दी और उर्दू का सम्मिलित रूप।
- ✓ हिन्दुस्तान के आम जन की भाषा।
- ✓ लोकजीवन, साहित्य, फ़िल्म और संगीत में व्यापक प्रयोग।
- ✓ संस्कृत, फारसी और अरबी शब्दों का समन्वय।
- ✓ सरल, सहज और सर्वमान्य रूप।

लेखक : बिपिन कुमार चौधरी

1 भारोपीय भाषा परिवार

- हिन्दी आर्य भाषा, इंडो-यूरोपीय (भारोपीय) भाषा परिवार की सदस्य है।
- इसका विभाजन **इंडो-यूरोपीय** (हिन्द-यूरोपीय) भाषा परिवार से हुआ है।
- भारोपीय भाषा परिवार की लगभग 10 प्रमुख शाखाएँ मानी जाती हैं जिन्हें व्यापक रूप से दो वर्गों में बाँटा जाता है -

(i) सताम वर्ग

भारतीय-ईरानी (आर्य), बाल्टो-स्लाविक, आर्मेनी, अल्बानी (इलिरियन)

(ii) केन्तुम वर्ग

जर्मनिक, केल्टिक, ग्रीक, तोखरी, हिटाइट, इतालिक



भारोपीय परिवार की भारतीय-ईरानी शाखा से भारत की अधिकांश आर्य भाषाएँ विकसित हुई हैं।

2 भारोपीय भाषा परिवार की प्रमुख 10 शाखाएँ

(i) सताम (भारतीय) समूह

- 1 **भारतीय-ईरानी (आर्य)** - संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, बंगाली, मराठी आदि।
- 2 **बाल्टो-स्लाविक** - लातविय, लिथुआनिय, रूसी, पोलिश आदि।
- 3 **आर्मेनी** - आर्मेनियाई भाषा।
- 4 **अल्बानी (इलिरियन)** - प्राचीन इलिरियाई भाषाएँ (अब लुप्त)।

(ii) केन्तुम (पश्चिमी) समूह

- 1 **जर्मनिक** - अंग्रेजी, जर्मन, डच, स्वीडिश, नॉर्वेजियन आदि।
- 2 **केल्टिक** - आयरिश, वेल्श, स्कॉटिश (गैलिक) आदि।
- 3 **ग्रीक** - यूनानी भाषा।
- 4 **तोखरी** - प्राचीन मध्य एशियाई तोखरी भाषाएँ (अब लुप्त)।
- 5 **हिटाइट** - प्राचीन अनातोलिया (तुर्की) की भाषा (अब लुप्त)।
- 6 **इतालिक** - लैटिन, इटालियन, स्पेनिश, फ्रेच, पुर्तगाली, रोमानियाई आदि।

3 भारोपीय परिवार का महत्व

- ❖ यह विश्व का सबसे बड़ा भाषा परिवार है।
- ❖ इस परिवार की भाषाएँ एशिया और यूरोप के बड़े भागों में बोली जाती हैं।
- ❖ इन भाषाओं में शब्द, व्याकरण और ध्वनियों में गहरा साम्य मिलता है।
- ❖ इसी परिवार की भारतीय-ईरानी शाखा से संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश होते हुए आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ विकसित हुई, जिनमें हिन्दी भी प्रमुख है।

4 भारोपीय परिवार की भारतीय-ईरानी शाखा की प्रमुख आधुनिक भाषाएँ

- ◆ हिन्दी, उर्दू, बंगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी, सिंधी, असमिया, उड़िया, कश्मीरी, डोगरी, नेपाली, कोंकणी, राजस्थानी, भोजपुरी, अवधी, मैथिली, मगही, छत्तीसगढ़ी, हरियाणवी, कुमाऊनी, गढ़वाली आदि।

इन सभी भाषाओं की दूरस्थ पूर्वज भाषा इंडो-यूरोपीय (भारोपीय) परिवार की भारतीय-ईरानी शाखा है, जिसके अन्तर्गत प्राचीन फारसी, ईरानी, पश्तो, बलूची आदि भाषाएँ भी आती हैं।

परीक्षा उपयोगी बिंदु |

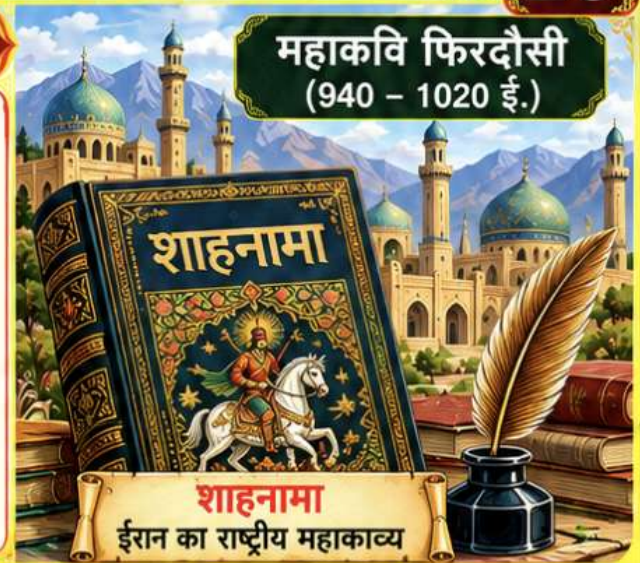
- ✓ हिन्दी - मोटे रूप में भारतीय-ईरानी (आर्य) शाखा की भाषा है।
- ✓ भारोपीय परिवार - विश्व का सबसे बड़ा भाषा परिवार।
- ✓ इसकी शाखाएँ - कुल लगभग 10, दो मुख्य वर्ग - सताम और केन्तुम।

मुख्य तथ्य संक्षेप में

- ✓ भारोपीय परिवार की भारतीय-ईरानी शाखा से हिन्दी का विकास।
- ✓ सताम वर्ग - भारतीय-ईरानी, बाल्टो-स्लाविक, आर्मेनी, अल्बानी।
- ✓ केन्तुम वर्ग - जर्मनिक, केल्टिक, ग्रीक, तोखरी, हिटाइट, इतालिक।

1 महाकवि फिरदौसी और शाहनामा

- महाकवि फिरदौसी (अब्दुल कासिम फिरदौसी) का प्रसिद्ध महाकाव्य 'शाहनामा' ईरान का राष्ट्रीय महाकाव्य है।
- 'शाहनामा' फ़ारसी भाषा में रचित एक महान ऐतिहासिक-आख्यान काव्य है, जो ईरान के इतिहास, संस्कृति, वीरता और राष्ट्रीय चेतना का गौरवगान करता है।
- यह केवल साहित्यिक कृति नहीं, बल्कि **ईरानी राष्ट्रीय चेतना** और सांस्कृतिक अस्मिता का प्रतीक भी है।



2 संविधान संशोधन और भारतीय आर्यभाषाओं का समावेश

21वाँ संविधान संशोधन (1967)

- वर्ष 1967 में 21वें संविधान संशोधन द्वारा 'सिंधी' को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में जोड़ा गया।

71वाँ संविधान संशोधन (1992)

- वर्ष 1992 में 71वें संविधान संशोधन द्वारा 'नेपाली', 'मणिपुरी' (मैतेई) और 'कोंकणी' को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में जोड़ा गया।

92वाँ संविधान संशोधन (2003)

- वर्ष 2003 में 92वें संविधान संशोधन द्वारा 'बोड़ो', 'डोगरी', 'मैथिली' और 'संथाली' को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में जोड़ा गया।

3 द्रविड़ भाषा परिवार

- यह भारतीय उपमहाद्वीप का दूसरा बड़ा भाषा परिवार है।
- इन भाषाओं की प्रमुखता मुख्यतः दक्षिण भारत में है।
- इन भाषाओं की संरचना, व्याकरण, ध्वन्यात्मकता और शब्द-सम्पदा भारतीय आर्यभाषाओं से भिन्न है।

द्रविड़ भाषा परिवार की प्रमुख भाषाएँ

1	तमिल	-	तमिलनाडु
2	कन्नड़	-	कर्नाटक
3	मलयालम	-	केरल
4	तेलुगु	-	आंध्र प्रदेश

भारतीय भाषा परिवारों का मानचित्र



4 अन्य भाषा परिवार

- भारतीय उपमहाद्वीप में आर्य, द्रविड़ और चीनी-तिब्बती के अतिरिक्त भी कुछ भाषाएँ हैं, जो अलग भाषा परिवारों से संबंधित हैं।
- इनकी संख्या अपेक्षाकृत कम है, परन्तु इनका सांस्कृतिक महत्व है। प्रमुख उदाहरण -

- ऑस्ट्रोएशियाटिक (मुंडा) परिवार - **संथाली**, मुंडारी, हो, खड़िया, जुवांग, सवर, गोंडी (कुछ विद्वानों के अनुसार)
- तिब्बती-बर्मी (चीनी-तिब्बती) परिवार - **बोड़ो**, डोगरी (कुछ विद्वानों के अनुसार), मिजो, नागा समूह की भाषाएँ, मणिपुरी (मैतेई/मेहंतेई) आदि।

3 ऑस्ट्रो-एशियाटिक (ऑस्ट्रिक / मुंडा) भाषा परिवार

मुख्य विशेषताएँ

- 1 यह भाषा परिवार मुख्य रूप से भारत के झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, असम और मध्य भारत के आदिवासी क्षेत्रों में बोली जाने वाली भाषाओं का समूह है।
- 2 भारत में इसे ऑस्ट्रो-एशियाटिक भाषा परिवार की भारतीय शाखा 'मुंडा (ऑस्ट्रिक)' कहा जाता है।
- 3 इन भाषाओं की संरचना, व्याकरण, शब्द-संपदा और ध्वन्यात्मकता भारतीय आर्य और द्रविड़ भाषाओं से भिन्न हैं।
- 4 इस परिवार की सबसे बड़ी भाषा **संथाली (संताली)** है।
- 5 भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में **संथाली (संताली)** को शामिल किया गया है।
- 6 92वें संविधान संशोधन (2003) के द्वारा **संथाली (संताली)** को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में जोड़ा गया था। इसी के साथ **बोडो, डोगरी और मैथिली** को भी शामिल किया गया था।
- 7 इन भाषाओं को बोलने वाले मुख्यतः आदिवासी/जनजातीय समुदाय हैं और इनका **जनजातीय** सांस्कृतिक महत्व अत्यधिक है।

प्रमुख भाषाएँ

- 1 संथाली (संताली)
- 2 मुंडारी
- 3 हो
- 4 खड़िया
- 5 सवरा (सौरा)
- 6 जुआंग
- 7 कोरकू
- 8 कोरवा
- 9 निकबारी
- 10 खासी

(मेघालय; भारतीय भाषाओं की खासी ऑस्ट्रो-एशियाटिक शाखा में मानी जाती है, यद्यपि यह उत्तरी-खासी उपशाखा से संबंधित है)।

ऑस्ट्रो-एशियाटिक (मुंडा) भाषाओं का प्रमुख क्षेत्र



महत्वपूर्ण तथ्य

संथाली (संताली) इस परिवार की सबसे बड़ी भाषा है और भारत की आठवीं अनुसूची में शामिल है।

नोट

भारतीय भाषाओं के वर्गीकरण में 'ऑस्ट्रिक' शब्द का उपयोग उस भारतीय शाखा के लिए किया जाता है, जो ऑस्ट्रो-एशियाटिक भाषा परिवार की **मुंडा शाखा** का प्रतिनिधित्व करती है।

4 द्रविड़ भाषा परिवार

मुख्य विशेषताएँ

- ◆ यह भारत का दूसरा प्रमुख स्वतंत्र भाषा परिवार है।
- ◆ इस परिवार की भाषाएँ मुख्यतः दक्षिण भारत में बोली जाती हैं।
- ◆ इन भाषाओं की संरचना, व्याकरण, शब्द-संपदा और ध्वन्यात्मकता भारतीय आर्य भाषाओं से भिन्न हैं।
- ◆ इस परिवार की प्रमुख भाषा **तमिल** है।
- ◆ इन भाषाओं का प्राचीन साहित्य और सांस्कृतिक परंपरा अत्यंत समृद्ध है।

प्रमुख भाषाएँ

- 1 तमिल (तमिलनाडु)
- 2 तेलुगु (आंध्र प्रदेश, तेलंगाना)
- 3 कन्नड़ (कर्नाटक)
- 4 मलयालम (केरल)
- 5 तुलु (कर्नाटक, केरल)
- 6 कोडगु (कूर्गी) (कर्नाटक)
- 7 गोंडी (मध्य भारत के कुछ भाग)
- 8 ब्राहूई (बलोचिस्तान, पाकिस्तान)

5 चीनी-तिब्बती भाषा परिवार

मुख्य विशेषताएँ

- ◆ यह भारत का तीसरा प्रमुख भाषा परिवार है।
- ◆ इसकी भाषाएँ मुख्यतः हिमालयी क्षेत्र और उत्तर-पूर्वी भारत में बोली जाती हैं।
- ◆ इन भाषाओं की संरचना, ध्वनि-तंत्र, शब्द-संपदा और व्याकरण भारतीय आर्य भाषाओं से भिन्न हैं।
- ◆ इनमें अनेक उपशाखाएँ हैं और इनका संबंध तिब्बती-बर्मी भाषाओं से माना जाता है।

प्रमुख भाषाएँ

- 1 बोडो (असम)
- 2 डोगरी (तिब्बती-बर्मी समूह; जम्मू-कश्मीर (डोगरा क्षेत्र))
- 3 लेपचा (सिक्किम)
- 4 मिजो (लुशाई) (मिजोरम)
- 5 गारो (मेघालय)
- 6 नागा भाषाएँ (आओ, सेमा आदि - नागालैंड)
- 7 मणिपुरी (मैतेई) (मणिपुर)

3 ऑस्ट्रो-एशियाटिक (ऑस्ट्रिक / मुंडा) भाषा परिवार

मुख्य विशेषताएँ

- 1 यह भारत की एक स्वतंत्र भाषा-परिवार है।
- 2 भारतीय जनगणना में इसे 'मुंडा (ऑस्ट्रिक)' शाखा के रूप में रखा जाता है।
- 3 इन भाषाओं की संरचना, व्याकरण और शब्दावली भारतीय आर्य और द्रविड़ भाषाओं से भिन्न है।
- 4 इन भाषाओं का मुख्य क्षेत्र झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, असम, मध्य भारत और उत्तर-पूर्व के कुछ भाग हैं।
- 5 इस परिवार की प्रमुख भाषा **संथाली (संताली)** है।
- 6 92वें संविधान संशोधन (2003) द्वारा **संथाली (संताली)** को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया।
- 7 इस परिवार की भाषाओं को बोलने वाले मुख्यतः आदिवासी/जनजातीय समुदाय हैं।

प्रमुख भाषाएँ

- **संथाली (संताली)** – झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, असम
- **मुंडारी** – झारखंड, ओडिशा
- **हो** – झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल
- **खड़िया** – झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़
- **जुआंग** – ओडिशा
- **कोरकू** – मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र
- **कोरवा** – छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश
- **सवरा (सौरा)** – ओडिशा
- **निकोबारी** – अंडमान-निकोबार दीपसमूह
- **खासी** – मेघालय (इसे भी मुंडा शाखा में माना जाता है)

प्रमुख क्षेत्र (राज्यवार)



परीक्षा उपयोगी तथ्य

- ✓ **संथाली (संताली)** – आठवीं अनुसूची (92वें संशोधन, 2003)
- ✓ भारतीय जनगणना – 'मुंडा (ऑस्ट्रिक)' नाम से दर्ज
- ✓ मुख्य जनजातीय समुदाय – संथाल, मुंडा, हो, खड़िया आदि
- ✓ संरचना – भारतीय आर्य व द्रविड़ भाषाओं से भिन्न
- ✓ **अंडमान-निकोबार** की **निकोबारी** भी इसी परिवार में

4 द्रविड़ भाषा परिवार

मुख्य विशेषताएँ

- 1 यह भारत का दूसरा प्रमुख स्वतंत्र भाषा-परिवार है।
- 2 इस परिवार की भाषाएँ मुख्यतः दक्षिण भारत में बोली जाती हैं।
- 3 इन भाषाओं की संरचना, व्याकरण, शब्द-सम्पदा और ध्वन्यात्मकता भारतीय आर्य और मुंडा भाषाओं से भिन्न है।
- 4 यह परिवार प्राचीन, समृद्ध और साहित्यिक परंपरा वाला है।
- 5 द्रविड़ भाषाओं का दक्षिण भारत की संस्कृति, कला, संगीत और धार्मिक परंपराओं में महत्वपूर्ण योगदान है।
- 6 **मुख्य क्षेत्र** – तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, केरल तथा इनके आस-पास के क्षेत्र।

प्रमुख भाषाएँ

- **तमिल** – तमिलनाडु (प्राचीन एवं ममूद्ध साहित्यिक परंपरा)
- **तेलुगु** – आंध्र प्रदेश, तेलंगाना
- **कन्नड़** – कर्नाटक
- **मलयालम** – केरल
- **तुलु** – कर्नाटक, केरल
- **कोडगु (कुर्गी)** – कर्नाटक
- **गोंडी** – मध्य भारत (द्रविड़ की विस्तारित शाखा)
- **ब्राहूई** – बलोचिस्तान (पाकिस्तान; भारतीय उपमहाद्वीप के बाहर)

प्रमुख क्षेत्र (राज्यवार)



परीक्षा उपयोगी तथ्य

- ✓ भारत का दूसरा प्रमुख भाषा परिवार
- ✓ मुख्य क्षेत्र – दक्षिण भारत
- ✓ **तमिल** – प्राचीनतम और सर्वधिक साहित्यिक भाषा
- ✓ **ब्राहूई** – पाकिस्तान में बोली जाती है
- ✓ इस परिवार की भाषाएँ भारतीय आर्य, मुंडा और तिब्बती-बर्मी भाषाओं से भिन्न हैं।

5 अंडमानी भाषा परिवार

मुख्य विशेषताएँ

- 1 यह भारत का सबसे छोटा भाषा-परिवार है।
- 2 यह भारत का सबसे नवीनतम (recently identified) भाषा परिवार माना जाता है।
- 3 इस पर मशहूर भाषाविज्ञानी प्रो॰ अन्विता अब्बी (Anvita Abbi) द्वारा विस्तृत अध्ययन किया गया।
- 4 इस परिवार की भाषाएँ **अंडमान-निकोबार दीपसमूह** में बोली जाती हैं।
- 5 इस परिवार की भाषाएँ संख्या की दृष्टि से कम हैं और अधिकांश भाषाएँ विलुप्ति के कगार पर हैं।
- 6 इन भाषाओं की संरचना, व्याकरण और शब्दावली भारतीय आर्य, द्रविड़, मुंडा तथा तिब्बती-बर्मी भाषाओं से भिन्न हैं।

प्रमुख भाषाएँ

- **अंडमानी** – अंडमान-निकोबार दीपसमूह
- **ग्रेट अंडमानी** – अंडमान-निकोबार
- **ओंगे** – अंडमान-निकोबार
- **जावा (जारवा)** – अंडमान-निकोबार

प्रमुख क्षेत्र



परीक्षा उपयोगी तथ्य

- ✓ भारत का सबसे छोटा और नवीनतम भाषा परिवार
- ✓ **अंडमान-निकोबार दीपसमूह** में बोली जाती हैं
- ✓ मुख्य भाषाएँ – अंडमानी, ग्रेट अंडमानी, ओंगे, जारवा
- ✓ भाषाओं की संख्या कम और विलुप्ति का खतरा अधिक
- ✓ भारतीय आर्य, द्रविड़, मुंडा और तिब्बती-बर्मी भाषाओं से भिन्न संरचना

हिन्दी शब्द का प्रयोग और उल्लेख

- 1 संवत् 1424 ई. (लगभग 1367 ई.) में **अमीर खुसरो** ने अपनी रचनाओं में '**हिन्दी**' शब्द का प्रयोग किया और अपने लेखन में '**हिन्दी**' नाम का उल्लेख किया।
यह प्रमाणित करता है कि उस समय उत्तर भारत की जनभाषा के लिए यह शब्द प्रचलित था।
- 2 **शरफुद्दीन यज्ज़ी** ने अपनी रचना '**जफरनामा**' (1424 ई.) में '**हिन्दी**' शब्द का प्रयोग किया।
- 3 फ्रांसीसी विद्वान् **गार्साँ द तासी (Garsā de Tasi)** ने '**हिन्दुस्तानी**' शब्द का प्रयोग किया।

भाषा की संकल्पना

- ◆ भाषा मानव द्वारा अपने मन के **भावों** और **विचारों** को **ध्वनि-चिन्हों** (शब्दों) के माध्यम से बोलकर और लिखकर व्यक्त करने का साधन है।
- ◆ यह एक **सामाजिक सम्पत्ति** है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी विकसित होती है।

भाषा की अभिव्यक्ति के तीन तरीके

- 1 **मौखिक** – बोलकर व्यक्त की जाती है।
- 2 **लिखित** – लिखकर व्यक्त की जाती है।
- 3 **सांकेतिक** – संकेतों, हाव-भाव और चिन्हों द्वारा व्यक्त की जाती है।



हिन्दी की प्रमुख विशेषताएँ

- 1 यह भारत के विशाल भू-भाग में बोली-समझी जाने वाली प्रमुख भाषा है।
- 2 यह जनसंपर्क की सशक्त और विकसित भाषा है।
- 3 इसमें विभिन्न बोलियाँ मिलकर एक व्यापक रूप बनाती हैं।
- 4 यह बोलचाल के साथ-साथ साहित्य, शिक्षा, प्रशासन और मीडिया की भाषा है।
- 5 इसमें अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करने की अद्विष्ट क्षमता है।
- 6 यह सरल, लचीली और लोकजीवन से जुड़ी हुई भाषा है।



भाषा की उत्पत्ति के बारे में प्रमुख मत

क्रम	मत	संक्षिप्त विवरण
1	बोलना (ध्वनि) मत	भाषा की उत्पत्ति मानव की स्वाभाविक ध्वनियों से मानी जाती है।
2	संकेत मत	हाव-भाव, संकेतों और इशारों से भाषा का विकास हुआ।
3	सामाजिक मत	समाज में रहने की आवश्यकता ने भाषा को विकसित किया।
4	अनुकरण मत	प्रकृति की ध्वनियों और अन्य प्राणियों के स्वरों के अनुकरण से भाषा का विकास हुआ।

भाषा का क्षेत्र

- ◆ हिन्दी का क्षेत्र बहुत व्यापक है।
- ◆ हिन्दी के अंतर्गत **कई उपभाषाएँ** होती हैं।
- ◆ कई उपभाषाओं तथा बोलियों के अंतर्गत भी भिन्न-भिन्न **बोलियाँ** मिलती हैं।
- ◆ **उदाहरण** – हिन्दी क्षेत्र, जिसमें अनेक उपभाषाएँ तथा बोलियाँ शामिल हैं।



हिन्दी की 5 उपभाषाएँ और उनकी प्रमुख बोलियाँ (कुल 17)

क्रम	उपभाषा	बोलियाँ की संख्या	प्रमुख बोलियाँ (संक्षिप्त परिचय)
1	पश्चिमी हिन्दी	5	खड़ी बोली, ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुंदेली, बाँगरू/हरियाणवी
2	पूर्वी हिन्दी	3	अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी
3	राजस्थानी	4	मारवाड़ी, जयपुरी (ढूँढ़ाड़ी), मेवाती, मालवी
4	बिहारी	3	भोजपुरी, मगही, मैथिली
5	पहाड़ी	2	गढ़वाली, जौनसांरी (मध्यवर्ती पहाड़ी)

परीक्षा उपयोगी मुख्य तथ्य

- ✓ हिन्दी शब्द का प्रारंभिक प्रयोग **अमीर खुसरो** (संवत् 1424 ई./1367 ई.) ने किया।
- ✓ **शरफुद्दीन यज्ज़ी** (1424 ई.) ने '**जफरनामा**' में '**हिन्दी**' शब्द का प्रयोग किया।
- ✓ **गार्साँ द तासी** ने '**हिन्दुस्तानी**' शब्द का प्रयोग किया।
- ✓ हिन्दी की कुल 5 उपभाषाएँ तथा **17 प्रमुख बोलियाँ** मानी जाती हैं।
- ✓ भाषा की अभिव्यक्ति के तीन तरीके – **मौखिक, लिखित, सांकेतिक**।
- ✓ भाषा का क्षेत्र व्यापक है, जिसमें अनेक उपभाषाएँ और बोलियाँ शामिल हैं।

हिन्दी भाषा और उसकी प्रमुख बोलियाँ

पृष्ठ
30

बोली क्या है?

- ◆ किसी भाषा का क्षेत्रीय रूप, जिसे किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र के लोग बोलते हैं, 'बोली' कहलाता है।
- ◆ बोली में स्वतन्त्र साहित्यिक परम्परा नहीं होती, परन्तु यह भाषा की विकास-प्रक्रिया की महत्वपूर्ण कड़ी होती है।
- ◆ जब किसी बोली में पर्याप्त साहित्य, व्याकरण, शब्द-भंडार और व्यापक सामाजिक उपयोग विकसित हो जाता है, तो वह उपभाषा और आगे चलकर स्वतन्त्र भाषा का रूप ग्रहण कर सकती है।

बोली की प्रमुख विशेषताएँ

- 1 बोली का क्षेत्र सीमित होता है।
- 2 बोली में स्वतन्त्र साहित्यिक परम्परा नहीं होती है।
- 3 अनेक बोलियाँ मिलकर एक उपभाषा का निर्माण करती हैं।
- 4 बोली अपने क्षेत्र की संस्कृति, जीवन-शैली और लोक-परम्पराओं को व्यक्त करती है।
- 5 बोली प्रायः बोलचाल की भाषा होती है, लिखित रूप अपेक्षाकृत कम मिलता है।
- 6 बोली में ध्वनि, रूप, शब्द और वाक्य-रचना में स्थानीय भिन्नताएँ मिलती हैं।

हिन्दी भाषा का मानचित्र



हिन्दी की कुल 5 उपभाषाएँ और उनकी बोलियाँ

क्रम	उपभाषा	बोलियाँ की संख्या	प्रमुख बोलियाँ
1	पश्चिमी हिन्दी	5	खड़ी बोली, ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुंदेली, बाँगरू/हरियाणवी
2	पूर्वी हिन्दी	3	अवधी, बचेली, छत्तीसगढ़ी
3	राजस्थानी	4	मारवाड़ी, जयपुरी (ढूँढ़ाड़ी), मेवाती, मालवी
4	बिहारी	3	भोजपुरी, मगही, मैथिली
5	पहाड़ी	2	गढ़वाली, जौनसारी (मध्यवर्ती पहाड़ी)

उपभाषाओं का संक्षिप्त परिचय

- 1 **पश्चिमी हिन्दी** – उत्तर भारत के पश्चिमी क्षेत्र में। मुख्य बोलियाँ: खड़ी बोली, ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुंदेली, बाँगरू/हरियाणवी (कुल 5)
- 2 **पूर्वी हिन्दी** – उत्तर भारत के पूर्वी क्षेत्र में। मुख्य बोलियाँ: अवधी, बचेली, छत्तीसगढ़ी (कुल 3)
- 3 **राजस्थानी** – राजस्थान और निकटवर्ती क्षेत्रों में। मुख्य बोलियाँ: मारवाड़ी, जयपुरी (ढूँढ़ाड़ी), मेवाती, मालवी (कुल 4)
- 4 **बिहारी** – बिहार और आस-पास के क्षेत्रों में। मुख्य बोलियाँ: भोजपुरी, ममाही, मैथिली (कुल 3)
- 5 **पहाड़ी** – उत्तराखण्ड और हिमालयी क्षेत्रों में। मुख्य बोलियाँ: गढ़वाली, जौनसारी (मध्यवर्ती पहाड़ी) (कुल 2)

उपभाषा का उदाहरण

- 1 **खड़ी बोली** → पश्चिमी हिन्दी उपभाषा
- 2 **अवधी** → पूर्वी हिन्दी उपभाषा
- 3 **मारवाड़ी** → राजस्थानी उपभाषा
- 4 **भोजपुरी** → बिहारी उपभाषा
- 5 **गढ़वाली** → पहाड़ी उपभाषा

याद रखने का आसान तरीका

“पश्चिम में खड़ी, पूर्व में अवधी, राजस्थान में मारवाड़ी, बिहार में भोजपुरी, पहाड़ में गढ़वाली।”

- 1 **प** – पश्चिमी = खड़ी, ब्रज, कन्नौजी, बुंदेली, बाँगरू
- 2 **अ** – अवधी, **ब** – बचेली, **छ** – छत्तीसगढ़ी
- 3 **मा** – मारवाड़ी, **ज** – जयपुरी, **मे** – मेवाती, **म** – मालवी
- 4 **भ** – भोजपुरी, **म** – मगही, **मै** – मैथिली
- 5 **ग** – गढ़वाली, **जौ** – जौनसारी

संख्या याद करने की ट्रिक

“5-3-4-3-2” (प-पू-रा-बि-प)

- 1 **पश्चिमी** = 5 बोलियाँ
- 2 **पूर्वी** = 3 बोलियाँ
- 3 **राजस्थानी** = 4 बोलियाँ
- 4 **बिहारी** = 3 बोलियाँ
- 5 **पहाड़ी** = 2 बोलियाँ

हिन्दी भाषा का क्षेत्र

- ◆ हिन्दी का क्षेत्र व्यापक है और इसमें इन 5 उपभाषाओं तथा उनकी बोलियाँ शामिल हैं।
- ◆ यह उत्तर, मध्य तथा पूर्वी भारत के बड़े भू-भाग में बोली और समझी जाती है।
- ◆ लोकजीवन, लोकसाहित्य, लोकगीत, कथाएँ और कहावतें इन बोलियों में अत्यन्त समृद्ध हैं।

महत्वपूर्ण विद्वानों का योगदान

- ◆ **सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन** ने भारत की बोलियों का विस्तृत सर्वेक्षण किया।
- ◆ 1926 ई. में **डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी** ने 'बंगला भाषा का उद्भव और विकास' में हिन्दी की उपभाषाओं और बोलियों का विश्लेषण किया।

परीक्षा उपयोगी मुख्य विद्व

- ✓ हिन्दी की कुल 5 उपभाषाएँ और 17 प्रमुख बोलियाँ मानी जाती हैं।
- ✓ पश्चिमी हिन्दी – 5, पूर्वी हिन्दी – 3, राजस्थानी – 4, बिहारी – 3, पहाड़ी – 2।
- ✓ बोलियाँ भाषा का क्षेत्रीय रूप हैं।
- ✓ अनेक बोलियाँ मिलकर एक उपभाषा बनाती हैं।
- ✓ कुछ उपभाषाएँ मिलकर हिन्दी भाषा का निर्माण करती हैं।

लेखक : बिपिन कुमार चौधरी

हिन्दी भाषा : संक्षिप्त परिचय

- ◆ हिन्दी भारतीय आर्य भाषा परिवार की एक प्रमुख भाषा है।
- ◆ यह 'हिन्दी' और 'हिन्दुस्तानी' परंपरा से विकसित आधुनिक रूप है।
- ◆ हिन्दी एक समृद्ध भाषा है, जिसका विकास विभिन्न बोलियों और उपभाषाओं के सहयोग से हुआ है।
- ◆ मानक हिन्दी का विकास मुख्यतः खड़ी बोली के आधार पर हुआ है।

हिन्दी

(एक भाषा, अनेक रूप)

5 उपभाषाएँ
19 बोलियाँ
(विस्तृत मान्य वर्गीकरण)

हिन्दी का भौगोलिक विस्तार



हिन्दी की 5 उपभाषाएँ तथा उनकी 19 प्रमुख बोलियाँ

1 पश्चिमी हिन्दी (6 बोलियाँ)

क्र.	बोली का नाम
1	खड़ी बोली (कौरवी)
2	ब्रजभाषा
3	कन्नौजी
4	बुंदेली
5	हरियाणवी (बाँगड़)
6	दरिक्नी

मुख्य क्षेत्र

दिल्ली, मेरठ, सहारनपुर, आगरा, अलीगढ़, कानपुर, झांसी, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और दक्कन का कुछ भाग।

भाषिक विशेषताएँ

- ◆ मानक हिन्दी का आधार खड़ी बोली है।
- ◆ सरल, स्पष्ट और अधिक प्रचलित रूप।
- ◆ साहित्य, प्रशासन और शिक्षा में प्रमुख प्रभाव।

2 पूर्वी हिन्दी (3 बोलियाँ)

क्र.	बोली का नाम
1	अवधी
2	बघेली
3	छत्तीसगढ़ी

मुख्य क्षेत्र

अयोध्या, लखनऊ, प्रयागराज, वाराणसी, रीवा, सतना, शहडोल, बिलासपुर, रायपुर तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश और छत्तीसगढ़ का क्षेत्र।

भाषिक विशेषताएँ

- ◆ मधुर, कोमल और भावपूर्ण।
- ◆ भक्ति साहित्य (तुलसी) का प्रमुख आधार।
- ◆ लोकगीत, लोककथा और सांस्कृतिक परंपरा समृद्ध।

3 राजस्थानी (4 बोलियाँ)

क्र.	बोली का नाम
1	मारवाड़ी
2	जयपुरी (ढूँढ़ाड़ी)
3	मेवाती
4	मालवी

मुख्य क्षेत्र

जोधपुर, बीकानेर, जयपुर, अलवर, सीकर, नागौर, मेवात, अजमेर, उज्जैन, कोटा, झालावाड़, मालवा क्षेत्र (राजस्थान, पश्चिमी मध्य प्रदेश) का क्षेत्र।

भाषिक विशेषताएँ

- ◆ स्वतंत्र साहित्यिक परंपरा और समृद्ध लोकसाहित्य।
- ◆ वीरगाथा, लोककथा और लोकगीतों की समृद्ध परंपरा।
- ◆ ध्वनि और शब्दावली में विशिष्टता।

4 बिहारी (3 बोलियाँ)

क्र.	बोली का नाम
1	भोजपुरी
2	मगही
3	मैथिली

मुख्य क्षेत्र

पटना, गया, दरभंगा, भागलपुर, छपरा, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया तथा बिहार और झारखंड का अधिकांश भाग।

भाषिक विशेषताएँ

- ◆ लोकजीवन से गहरा संबंध।
- ◆ लोकगीत, कहावतों और मौखिक परंपरा की समृद्धि।
- ◆ मैथिली का प्राचीन साहित्यिक रूप अत्यंत समृद्ध।

5 पहाड़ी (3 बोलियाँ)

क्र.	बोली का नाम
1	गढ़वाली
2	कुमाऊँनी
3	जौनसारी

मुख्य क्षेत्र

उत्तराखण्ड (गढ़वाल और कुमाऊँ क्षेत्र), हिमाचल प्रदेश का कुछ भाग तथा जौनसार-बावर (उत्तराखण्ड) का क्षेत्र।

भाषिक विशेषताएँ

- ◆ पर्वतीय जीवन, लोकसंस्कृति और प्रकृति से जुड़ी भाषा।
- ◆ स्वर, शब्दावली और व्याकरण में विशिष्टता।
- ◆ लोकगीत, लोककथाओं और स्थानीय परंपराओं की समृद्धि।

17 बोलियों की मान्यता : एक प्रचलित वर्गीकरण

- ◆ कई विद्वान प्रायोगिक/परीक्षोपयोगी दृष्टि से 5 उपभाषाओं की 17 प्रमुख बोलियों माना करते हैं।
- ◆ इसमें सामान्यतः पश्चिमी हिन्दी (5), पूर्वी हिन्दी (3), राजस्थानी (4), बिहारी (3) और पहाड़ी (2) बोलियाँ मानते हैं। इन 17 बोलियों की सूची में जौनसारी को अलग नहीं रखा जाता और केवल गढ़वाली व कुमाऊँनी को पहाड़ी की बोलियाँ माना जाता है।
- ◆ यह वर्गीकरण प्रतियोगी परीक्षाओं और सामान्य अध्ययन में अधिक प्रचलित है।

17 बनाम 19 : विवाद के कारण

- 1 बोलियों और उपभाषाओं की सीमाएँ स्पष्ट नहीं हैं।
- 2 कुछ विद्वान जौनसारी को पहाड़ी की स्वतंत्र बोली मानते हैं, जबकि कुछ इसे कुमाऊँनी का रूप मानते हैं।
- 3 कुछ वर्गीकरणों में दक्कनी को शामिल किया जाता है, जबकि कुछ में नहीं।
- 4 क्षेत्रीय और सामाजिक-भाषाई दृष्टि से भी भिन्न मत मिलते हैं। इसलिए 17, 18 या 19 बोलियों की संख्या विद्वानों के वर्गीकरण और मानक पर निर्भर करती है – कोई एक संख्या सार्वभौमिक रूप से अंतिम नहीं मानी जाती।



परीक्षोपयोगी तथ्य

- ✓ हिन्दी की 5 उपभाषाएँ : पश्चिमी, पूर्वी, राजस्थानी, बिहारी, पहाड़ी
- ✓ विस्तृत मान्य वर्गीकरण में कुल बोलियाँ : 19
- ✓ प्रचलित परीक्षा-उपयोगी वर्गीकरण में कुल बोलियाँ : 17
- ✓ मानक हिन्दी का आधार : खड़ी बोली



निष्कर्ष

हिन्दी का विकास अनेक बोलियों के संगम से हुआ है। चाहे 17 मानी जाए या 19, सभी बोलियाँ हिन्दी क्षेत्र की भाषिक समृद्धि और सांस्कृतिक विविधता की प्रतीक हैं।

हिन्दी से संबंधित 17 मानक बोलियों का संक्षिप्त परिचय

पृष्ठ
32

संक्षिप्त परिचय

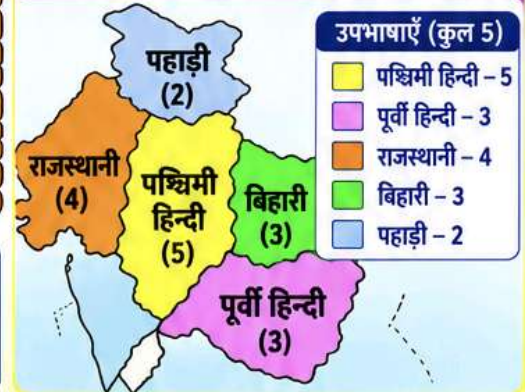
- हिन्दी भारतीय आर्य भाषा परिवार की एक प्रमुख भाषा है।
- हिन्दी के विभिन्न क्षेत्रों में स्थानीय रूपों में बोली जाने वाली विविध रूपों को 'बोलियाँ' कहा जाता है।
- यह बोलियाँ हिन्दी को समृद्ध, जीवंत और जन-आधारित बनाती हैं।
- यहाँ 17 मानक बोलियों का वर्णन एक प्रचलित एवं परीक्षाओं में स्वीकृत वर्गीकरण के आधार पर किया गया है।

हिन्दी

(एक भाषा, अनेक बोलियाँ)

17 मानक बोलियों का संक्षिप्त परिचय

उपभाषा-वार 17 बोलियों का वितरण



हिन्दी की 17 मानक बोलियाँ : उपभाषा, क्षेत्र और संक्षिप्त परिचय

क्रम	बोली का नाम	सम्बंधित उपभाषा	मुख्य क्षेत्र	संक्षिप्त परिचय (प्रमुख विशेषताएँ)	उदाहरण शब्द/वाक्य
1	खड़ी बोली	पश्चिमी हिन्दी	दिल्ली, मेरठ, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, पश्चिमी उत्तर प्रदेश	आधुनिक मानक हिन्दी का आधार; शिक्षित और शहरी क्षेत्र की प्रमुख बोली।	मैं घर जा रहा हूँ।
2	ब्रजभाषा	पश्चिमी हिन्दी	मथुरा, वृन्दावन, आगरा, अलीगढ़, भरतपुर	काव्य, भक्ति साहित्य और लोकसाहित्य की महत्वपूर्ण बोली।	तौ कहाँ जात हो?
3	कन्नौजी	पश्चिमी हिन्दी	कन्नौज, इटावा, फर्रुखाबाद, कानपुर, औरंगाबाद	पश्चिमी हिन्दी क्षेत्र की महत्वपूर्ण बोली; खड़ी बोली और ब्रज के मध्यवर्ती रूप।	तुम कहाँ जाते हो?
4	बुंदेली	पश्चिमी हिन्दी	झाँसी, टीकमगढ़, सागर, दमोह, छतरपुर	वीर रस और लोककाव्य की समृद्ध परंपरा वाली बोली।	तुम कइँ जात हो?
5	हरियाणवी (बांगड़ा)	पश्चिमी हिन्दी	हरियाणा, दिल्ली का ग्रामीण क्षेत्र, पश्चिमी उत्तर प्रदेश	सपाट, स्पष्ट और देसी लोकजीवन से जुड़ी बोली; 'से', 'ते', 'कदे' आदि रूपों का प्रयोग।	तने कहाँ जाणा से?
6	अवधी	पूर्वी हिन्दी	अयोध्या, लखनऊ, बाराबंकी, सीतापुर, प्रतापगढ़, रायबरेली	रामकथा और लोकसाहित्य की प्रमुख बोली; मधुर, सरल और प्रभावशाली।	हम घर जात हई।
7	बघेली	पूर्वी हिन्दी	रीवा, सतना, सीधी, शहडोल, उमरिया	अवधी से निकटता; उच्चारण और शब्दावली में विशिष्टता।	तू कहाँ जात है?
8	छत्तीसगढ़ी	पूर्वी हिन्दी	छत्तीसगढ़ का समस्त क्षेत्र	मधुर, स्पष्ट उच्चारण वाली बोली; लोकगीतों और लोकसाहित्य में समृद्ध परंपरा।	मैं घर जाथों।
9	मारवाड़ी	राजस्थानी	जोधपुर, बीकानेर, नागौर, सैसलमेर, पाली	राजस्थानी की प्रमुख बोली; व्यापार और लोकसाहित्य में महत्वपूर्ण।	हूँ घर जाऊँ हूँ।
10	जयपुरी (दूँढ़ाड़ी)	राजस्थानी	जयपुर, अलवर, दौसा, सीकर	राजस्थानी की महत्वपूर्ण बोली; 'हूँ', 'छे', 'कोनी' आदि रूपों का प्रयोग।	हूँ घर जावाँ सूँ।
11	मेवाती	राजस्थानी	अलवर, भरतपुर, मेवात क्षेत्र	राजस्थानी और हरियाणवी से प्रभावित; मिश्रित रूप।	मैं घर जावाँ सूँ।
12	मालवी	राजस्थानी	उज्जैन, धार, मंदसौर, रतलाम, इंदौर	राजस्थानी का पूर्वी रूप; मालवा क्षेत्र की प्रमुख बोली।	हूँ घर जावाँ छूँ।
13	भोजपुरी	बिहारी	पूर्वी उत्तर प्रदेश (गोरखपुर, देवरिया, बलिया), बिहार का पश्चिमी भाग	लोकप्रिय और व्यापक बोली; लोकगीत और लोकनाट्य में समृद्ध।	हम घर जातानी।
14	मगही	बिहारी	पटना, गया, नालंदा, नवादा, औरंगाबाद	प्राचीन परंपरा वाली बोली; सरल और प्रचलित।	हम घर जाए छी।
15	मैथिली	बिहारी	मिथिला क्षेत्र (दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, सीतामढ़ी)	समृद्ध साहित्यिक परंपरा; मधुर और विशिष्ट शब्दावली।	हम घर जाइ रहल छी।
16	गढ़वाली	पहाड़ी	गढ़वाल क्षेत्र (उत्तराखण्ड)	स्वरप्रधान, मधुर और विशिष्ट शब्दावली वाली बोली।	मैं घर जाणू लागूँ।
17	जौनसारी	पहाड़ी	जौनसार-बावर (देहरादून, उत्तराखण्ड)	पहाड़ी समूह की महत्वपूर्ण बोली; विब्वती-गढ़वाली प्रभाव।	मैं घर जाँदू छूँ।

परीक्षोपयोगी बिंदु

- हिन्दी की 5 उपभाषाएँ — पश्चिमी, पूर्वी, राजस्थानी, बिहारी और पहाड़ी।
- कुल मानक बोलियों की संख्या — 17।
- यह वर्गीकरण सरकारी/विश्वविद्यालयी/प्रतियोगी परीक्षाओं में सामान्यतः स्वीकृत माना जाता है।
- बोलियों की संख्या विद्वानों के अनुसार भिन्न भी हो सकती है।

याद रखने की सरल तरकीब

“पश्चिम में पाँच, पूर्व में तीन,
राजस्थान में चार महान,
बिहार में तीन, पहाड़ में दो —
कुल सत्रह बोलियाँ जाना!”

महत्व

- बोलियों हिन्दी की सांस्कृतिक और भाषाई विविधता का परिचायक हैं।
- इन्हीं से हिन्दी का क्षेत्रीय विस्तार और जनधार मजबूत होता है।
- आधुनिक मानक हिन्दी का विकास इन बोलियों की समृद्ध परंपरा पर आधारित है।

लेखक : बिपिन कुमार चौधरी

हिन्दी की 5 उपभाषाएँ : 17 और 19 बोलियाँ का वृत्तचित्र

पृष्ठ
33

17 मानक बोलियाँ (प्रचलित/परीक्षोपयोगी)

क्रम	उपभाषा	संख्या	बोलियाँ
1	पश्चिमी हिन्दी	5	खड़ी बोली, ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुंदेली, बाँगरू/हरियाणवी
2	पूर्वी हिन्दी	3	अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी
3	राजस्थानी	4	मारवाड़ी, जयपुरी (ढूंढाड़ी), मेवाती, मालवी
4	बिहारी	3	भोजपुरी, मगही, मैथिली
5	पहाड़ी	2	गढ़वाली, जौनसारी (मध्यवर्ती पहाड़ी)

हिन्दी

(एक भाषा, अनेक बोलियाँ)



19 बोलियों का विस्तृत वर्गीकरण (कुछ विद्वानों के अनुसार)

क्रम	उपभाषा	संख्या	बोलियाँ
1	पश्चिमी हिन्दी	6	खड़ी बोली, ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुंदेली, बाँगरू/हरियाणवी, दखिनी
2	पूर्वी हिन्दी	3	अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी
3	राजस्थानी	4	मारवाड़ी, जयपुरी (ढूंढाड़ी), मेवाती, मालवी
4	बिहारी	3	भोजपुरी, मगही, मैथिली
5	पहाड़ी	3	गढ़वाली, कुमाऊँनी, जौनसारी (मध्यवर्ती पहाड़ी)

कुल 5 उपभाषाएँ

17 बोलियाँ

हिन्दी की 5 उपभाषाएँ
(भारतीय हिन्दी क्षेत्र का वृत्तचित्र)

कुल 5 उपभाषाएँ

19 बोलियाँ

उपभाषाओं का संक्षिप्त वृत्तचित्र (17 बोलियों के आधार पर)

(19 बोलियों में अतिरिक्त बोलियाँ)

1 पश्चिमी हिन्दी (5)



मुख्य बोलियाँ : खड़ी बोली, ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुंदेली, बाँगरू/हरियाणवी
क्षेत्र : दिल्ली, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान का उत्तरी भाग
भाषिक विशेषताएँ : खड़ी बोली मानक हिन्दी का आधार; ब्रजभाषा में माधुर्य; कन्नौजी में विशिष्ट ध्वनि; बुंदेली में ओज; बाँगरू/हरियाणवी में ग्रामीण सहजता।

2 पूर्वी हिन्दी (3)



मुख्य बोलियाँ : अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी
क्षेत्र : पूर्वी उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश का पूर्वी भाग, छत्तीसगढ़
विशेषताएँ : अवधी में भक्ति साहित्य की समृद्ध परम्परा; बघेली में मध्यवर्ती लक्षण; छत्तीसगढ़ी में लोकधर्मी स्वर और सरलीकृत रूप।

3 राजस्थानी (4)



मुख्य बोलियाँ : मारवाड़ी, जयपुरी (ढूंढाड़ी), मेवाती, मालवी
क्षेत्र : राजस्थान तथा आस-पास के क्षेत्र
विशेषताएँ : ध्वनि-वैविध्य, लोकसाहित्य की समृद्ध परम्परा; मारवाड़ी सर्वाधिक प्रचलित; जयपुरी/ढूंढाड़ी में शिष्ट रूप; मेवाती में हिन्दी-समीपता; मालवी में मध्यवर्ती लक्षण।

4 बिहारी (3)



मुख्य बोलियाँ : भोजपुरी, मगही, मैथिली
क्षेत्र : बिहार, झारखंड के भाग, पूर्वी उत्तर प्रदेश
विशेषताएँ : समृद्ध लोकसाहित्य; मैथिली की प्राचीन साहित्यिक परम्परा; भोजपुरी का व्यापक लोकप्रयोग; मगही की स्वतंत्र पहचान।

5 पहाड़ी (2)



मुख्य बोलियाँ : गढ़वाली, जौनसारी (मध्यवर्ती पहाड़ी)
क्षेत्र : उत्तराखंड (गढ़वाल), हिमालयी क्षेत्र
विशेषताएँ : ध्वन्यात्मक विविधता; लोकगीतों की समृद्ध परम्परा; जौनसारी को कई विद्वान मध्यवर्ती/पश्चिमी पहाड़ी की कोटि में रखते हैं।

अतिरिक्त बोली : दखिनी

- यह पुरानी हिन्दी की दक्षिणी रूपांतरित बोली है।
- दक्कन क्षेत्र (महाराष्ट्र, तेलंगाना, कर्नाटक के भाग) में प्रचलित रही।
- सूफी साहित्य और लोक-संस्कृति से जुड़ी महत्वपूर्ण बोली।

(अतिरिक्त नहीं)

- इस उपभाषा की 3 बोलियाँ ही मानी जाती हैं।
- कुछ स्थानों पर छत्तीसगढ़ी को स्वतंत्र उपभाषा मानने का मत भी मिलता है।

(अतिरिक्त नहीं)

- राजस्थानी की प्रमुख 4 बोलियाँ ही मानी जाती हैं।
- एक समय में मेवाती को हिन्दी-समीप मानकर अलग भी रखा गया, पर प्रचलन में इसे राजस्थानी समूह में लिया जाता है।

(अतिरिक्त नहीं)

- भोजपुरी, मगही और मैथिली – तीनों की स्वतंत्र साहित्यिक परम्परा है।
- इनको कभी-कभी अलग भाषा का दर्जा देने की मांग भी की जाती रही है।

अतिरिक्त बोली : कुमाऊँनी

- उत्तराखंड के कुमाऊँ क्षेत्र की प्रमुख बोली।
- गढ़वाली से भिन्न ध्वन्यात्मक और शब्द-रूपगत लक्षण।
- इसको शामिल करने पर पहाड़ी की बोलियों की संख्या 3 हो जाती है।

17 या 19 बोलिया – अंतर क्यों?

- 1 हिन्दी की बोलियों की संख्या विद्वानों के अनुसार भिन्न-भिन्न है।
- 2 कुछ विद्वान 'दखिनी' को पश्चिमी हिन्दी में शामिल करते हैं, जिससे संख्या 18 होती है।
- 3 कुछ विद्वान 'कुमाऊँनी' को पहाड़ी में शामिल करते हैं, जिससे संख्या 19 हो जाती है।
- 4 परीक्षाओं में प्रायः 17 बोलियों का वर्गीकरण अधिक प्रचलित और स्वीकार्य है।
- 5 संख्या का अंतर बोलियों की सीमाओं और वर्गीकरण की दृष्टि के भिन्न होने के कारण है।

याद रखने की सरल ट्रिक

“पश्चिम के पाँच, पूरब के तीन,
राजस्थान के चार महान,
बिहार के तीन, पहाड़ के दो –
हिन्दी को सत्रह बोलियाँ जान।”

5 - 3 - 4 - 3 - 2

पश्चिमी पूर्वी राजस्थानी बिहारी पहाड़ी

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण बिंदु

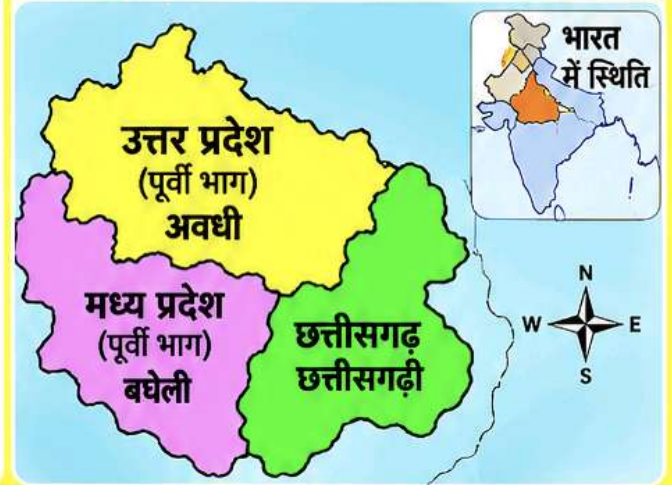
- ✓ हिन्दी की कुल 5 उपभाषाएँ हैं।
- ✓ प्रचलित/मानक वर्गीकरण : 17 बोलियाँ (5-3-4-3-2)।
- ✓ विस्तृत वर्गीकरण : 19 बोलियाँ (दखिनी + कुमाऊँनी सहित)।
- ✓ खड़ी बोली मानक हिन्दी का आधार है।
- ✓ अवधी, ब्रजभाषा, मैथिली आदि की समृद्ध साहित्यिक परम्परा है।
- ✓ राजस्थानी और बिहारी की बोलियाँ अत्यंत समृद्ध लोक परम्परा से जुड़ी हैं।
- ✓ प्रत्येक बोली-सीमा निरपेक्ष नहीं है; विद्वानों में मतभेद संभव है।
- ✓ प्रश्नों में सामान्यतः 17 बोलियों का वर्गीकरण अपेक्षित रहता है।

लेखक : बिपिन कुमार चौधरी

पूर्वी हिन्दी उपभाषा की संक्षिप्त जानकारी

- ◆ पूर्वी हिन्दी का विकास अर्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है।
- ◆ यह हिन्दी की पाँच उपभाषाओं में से एक प्रमुख उपभाषा है।
- ◆ इसके अंतर्गत मुख्यतः तीन बोलियाँ आती हैं –
(1) अवधी (2) बघेली (3) छत्तीसगढ़ी
- ◆ यह उपभाषा उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग तथा मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के कुछ हिस्सों में बोली जाती है।
- ◆ पूर्वी हिन्दी की बोलियाँ लोकसाहित्य, लोकगीतों, धार्मिक काव्य और जनभाषा के रूप में अत्यंत समृद्ध हैं।
- ◆ तुलसीदास की अवधी, लोकगाथाओं की बघेली और छत्तीसगढ़ी की लोकपरंपरा हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाती है।

पूर्वी हिन्दी उपभाषा का क्षेत्र



पूर्वी हिन्दी की तीन बोलियाँ : विशेषताएँ, क्षेत्र और उदाहरण

क्र. सं.	बोली का नाम	मुख्य क्षेत्र	प्रमुख विशेषताएँ	उदाहरण शब्द/वाक्य
1	अवधी	उत्तर प्रदेश का पूर्वी भाग (अयोध्या, लखनऊ, सुलतानपुर, प्रतापगढ़, रायबरेली, फैजाबाद आदि)	◆ पूर्वी हिन्दी की सर्वाधिक प्रसिद्ध बोली। ◆ धार्मिक साहित्य (विशेषतः गोस्वामी तुलसीदास की 'रामचरितमानस') की भाषा। ◆ सरल, मधुर और लोकप्रचलित।	हम हें कहत हई। का करहौं? कहाँ जात हऊ?
2	बघेली	मध्य प्रदेश का पूर्वी भाग (रीवा, सतना, सीधी, शहडोल, उमरिया आदि)	◆ अवधी और छत्तीसगढ़ी के मध्य की स्थिति। ◆ स्वतंत्र साहित्यिक परंपरा। ◆ उच्चारण में अवधी से भिन्नता। ◆ लोकगीतों और लोककथाओं की समृद्ध परंपरा।	तूँ कहाँ जात हस? हम घर जात हौं। का करत हस?
3	छत्तीसगढ़ी	छत्तीसगढ़ और आसपास का क्षेत्र (रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर, राजनादगांव, बस्तर आदि)	◆ स्वतंत्र एवं समृद्ध लोकभाषा। ◆ लोकगीत, लोकनृत्य और लोककथाओं की समृद्ध परंपरा। ◆ शब्दरचना, उच्चारण और वाक्य-विन्यास अवधी तथा बघेली से भिन्न। ◆ साधारण जनजीवन की अभिव्यक्ति की भाषा।	तँ कहाँ जाथस? हम घर जाथन। का करथस?

क्षेत्र की प्रमुख विशेषताएँ

- ◆ यह गंगा-घाघरा के पूर्वी क्षेत्र तथा विंध्याचल के उत्तर-पूर्वी तथा दक्षिणी भागों में बोली जाती है।
- ◆ यह क्षेत्र सांस्कृतिक, भाषिक और साहित्यिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है।
- ◆ लोकसाहित्य, धार्मिक काव्य, लोकगीत और लोकनाट्य की सशक्त परंपरा यहाँ मिलती है।

अयोध्या
(अवधी क्षेत्र)

महत्वपूर्ण तथ्य (परीक्षा उपयोगी)

- 1 पूर्वी हिन्दी का विकास अर्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है।
- 2 इसकी 3 बोलियाँ हैं – अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी।
- 3 यह उत्तर प्रदेश (पूर्वी भाग), मध्य प्रदेश (पूर्वी भाग) और छत्तीसगढ़ में बोली जाती है।
- 4 अवधी – धार्मिक साहित्य (विशेषतः तुलसीदास) की भाषा है।
- 5 इसे हिन्दी की 5 उपभाषाओं में एक प्रमुख उपभाषा माना जाता है।

याद रखने की ट्रिक

**“अवधी में राम,
बघेल में रीवा,
छत्तीसगढ़ में छऊ,
तीनों मिलकर
पूर्वी हिन्दी कहडूँ।”**

संक्षिप्त रूप में याद रखें

- अ** – अवधी (उ.प्र. पूर्व)
ब – बघेली (म.प्र. पूर्व)
छ – छत्तीसगढ़ी (छत्तीसगढ़)

पूर्वी हिन्दी का विकास

- ♦ पूर्वी हिन्दी का विकास अर्द्धमागधी **अपभ्रंश** से हुआ है।
- ♦ यह हिन्दी की पाँच उपभाषाओं में से एक प्रमुख उपभाषा है।
- ♦ इसके अंतर्गत तीन बोलियों आती हैं -

1 अवधी 2 बघेली 3 छत्तीसगढ़ी

पूर्वी हिन्दी का क्षेत्र



मुख्य क्षेत्र - उत्तर प्रदेश का पूर्वी भाग, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के कुछ हिस्से।

शब्दों के उदाहरण (भाषाई विशेषताएँ)

1 व → अ / आ / ब

जैसे - छुवत → छुअत, वन → बन

2 ण → न

जैसे - प्राण → प्रान, प्रवीण → प्रवीण, चूण → चरन

कुछ शब्द रूप बेटवा (लड़का), दिहिन (देना), रहिन (रहा), ओपां (अपना), मेनाई (आदमी)

अवधी बोली

- ♦ अवधी शब्द की व्युत्पत्ति **अयोध्या** से हुई है।
- ♦ यह उत्तर प्रदेश के सबसे ज्यादा लोगों द्वारा बोली जाने वाली बोली है।

अन्य नाम - कौसली, पूर्वी, बैसवाड़ी आदि।

प्रमुख उपबोलियाँ - मिर्जापुरी (मिर्जापुर में), बनौधी (प. जौनपुर में), बैसवाड़ी (उन्नाव तथा रायबरेली के बीच के क्षेत्रों में), जौनहा, गहेरा, गंगापारी, जुड़र आदि।

♦ **क्षेत्र** - उत्तर प्रदेश का पूर्वी भाग (अयोध्या, लखनऊ, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, रायबरेली, फैजाबाद आदि)।

♦ **विशेषताएँ** - सूफी काव्य और रामभक्ति काव्य द्वारा इसका



बघेली बोली

- ♦ इसके केंद्र **'रीवा'** होने के कारण इसे **रीवाई** भी कहते हैं।
- ♦ यह उत्तर प्रदेश में सबसे कम लोगों द्वारा बोली जाने वाली बोली है।

♦ **अन्य नाम** - रीवाई, बघेलखण्डी, कुम्भारी, ओझी, गोंडवानी, केवरी, रिमही आदि।

♦ **प्रमुख उपबोलियाँ** - मिवाठा, तिरहरी, गहेरो, जुड़र, मरारी, पाँवारी, बनाफरी आदि।

♦ **क्षेत्र** - मध्य प्रदेश का पूर्वी भाग (रीवा, सतना, सीधी, शाहडोल, उमरिया आदि)।

♦ **विशेषताएँ** - अवधी और छत्तीसगढ़ी के बीच की मध्यवर्ती कड़ी; लोकगीतों एवं लोककथाओं की समृद्ध परंपरा।



छत्तीसगढ़ी बोली

- ♦ यह उत्तर प्रदेश के 19 जिलों में पूर्ण रूप से बोली जाने वाली बोली है।

♦ **अन्य नाम** - तेली, सतना, दमोह, जबलपुर, बालाघाट, सिंगरौली, अनूपपुर आदि।

♦ **क्षेत्र** - छत्तीसगढ़ तथा आसपास का क्षेत्र (रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर, राजनांदगाँव, बस्तर आदि)।

♦ **विशेषताएँ** - स्वतंत्र एवं समृद्ध लोकभाषा; लोकगीत, लोकनृत्य और लोककथाओं की मजबूत परंपरा।



अवधी की पहली कृति

अवधी की पहली कृति **'मुल्ला दाऊद'** की **'चंदायन'** (1379) है।

अवधी के प्रमुख रचनाकार

- 1 मुल्ला दाऊद - चंदायन (1379)
- 2 कुतुबन - मुगावती (1501)
- 3 उस्मान - चित्रावली (1613)
- 4 शेख निजाम - यूसुफ जुलेखा
- 5 कासिमशाह - हंस जवहिर (1731)
- 6 नूर मुहम्मद - इंद्रावती (1744), अनुराग बाँसुरी (1764)
- 7 जायसी - पदावत, अखरावट, आखरीकलाम, कन्हावत, चिररेखा

तुलसीदास और अवधी

♦ अवधी का प्रथम महाकाव्य **'जायसी'** द्वारा रचित **'पदावत'** है, जो तुलसीदास जी द्वारा रचित **'रामचरितमानस'** से 34 वर्ष पूर्व लिखा गया था।

♦ अवधी भाषा की सबसे प्रसिद्ध कृति **'रामचरितमानस'** है, जिसे 1931 ईस्वी में तुलसीदास जी द्वारा अकबर के शासनकाल में लिखा गया।

तुलसीकृत श्रीरामचरितमानस में कुल 7 काण्ड हैं -

- 1 बालकाण्ड
- 2 अयोध्याकाण्ड
- 3 अरण्यकाण्ड
- 4 किष्किन्धाकाण्ड
- 5 सुन्दरकाण्ड
- 6 लंकाकाण्ड
- 7 उत्तरकाण्ड

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ♦ पूर्वी हिन्दी का विकास अर्द्धमागधी **अपभ्रंश** से हुआ है।
- ♦ इसमें 3 बोलियाँ हैं - अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी।
- ♦ अवधी - सूफी और रामभक्ति काव्य की प्रमुख बोली।
- ♦ बघेली - रीवा क्षेत्र की बोली, लोकगीतों की परंपरा।
- ♦ छत्तीसगढ़ी - स्वतंत्र एवं समृद्ध लोकभाषा।
- ♦ अवधी की पहली कृति - **'चंदायन'** (1379) - मुल्ला दाऊद।
- ♦ तुलसीदास जी की **'रामचरितमानस'** को अवधी भाषा की सर्वोत्तम कृति माना जाता है।
- ♦ तुलसीकृत रामचरितमानस में 7 काण्ड हैं।

याद रखने की ट्रिक

"अवध में राम, बघेल में रीवा, छत्तीसगढ़ में छउ - तीनों मिलकर पूर्वी हिन्दी कहड़।"

छत्तीसगढ़ी बोली : संक्षिप्त परिचय

- ❖ छत्तीसगढ़ में बोली जाने के कारण इसे **छत्तीसगढ़ी** बोली कहा जाता है।
- ❖ यह पूर्वी हिन्दी उपभाषा की एक प्रमुख बोली है।
- ❖ यह उत्तर प्रदेश (पूर्वी भाग) और मध्य प्रदेश के कुछ भागों में भी बोली जाती है।
- ❖ लोकजीवन, लोकगीत, लोककथाओं और जनभाषा के रूप में यह बोली व्यापक रूप से प्रचलित है।

छत्तीसगढ़ी बोली का क्षेत्र



मुख्य क्षेत्र - छत्तीसगढ़ (मुख्य क्षेत्र), साथ ही मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के कुछ भाग।

छत्तीसगढ़ी बोली की विशेषताएँ

- 1 छत्तीसगढ़ में बोली जाने के कारण इसे **छत्तीसगढ़ी** कहा जाता है।
- 2 यह उत्तर प्रदेश में भी कुछ क्षेत्रों में बोली जाती है।
- 3 इसका संबंध पूर्वी हिन्दी उपभाषा से है।
- 4 इस पर अवधी, भोजपुरी तथा स्थानीय बोलियों का प्रभाव मिलता है।
- 5 इसमें लोकसाहित्य, लोकगीत, लोककथाएँ और जनजीवन की समृद्ध परंपरा मिलती है।

छत्तीसगढ़ी बोली की भाषा-विशेषताएँ

अन्य नाम	खलटाही, खलोटी, खुलताही, लरिया (संभलपुर में)
उपबोलियाँ	सुरगुजिया, कलंगा, भुइया, सतनामी, कांकेरी, बिलासपुरी, हबबी (बस्तर), बिंझावली आदि
क्षेत्र	रायपुर, बिलासपुर, सरगुजा, कौरिया, रायगढ़, खैरागढ़, दुर्ग, नंदगाँव, कांकेर, बस्तर आदि
भाषिक स्वरूप	सरल, सहज, लोकसुलभ और ध्वन्यात्मक रूप से मधुर
मुख्य रूप से	मध्य प्रदेश (कुछ भाग) और उत्तर प्रदेश (पूर्वी भाग) में भी प्रचलित

प्रमुख रचनाकार/रचना

- 1 संतरा **व** सर्वनाम में **ऐ**, **व** और का क्रमशः अइ, व, अउ हो जाता है।
जैसे - बैल का बइल, जौन का जउन
- 2 इसमें शब्दों के मध्य **ड** का लोप हो जाता है।
जैसे - लड़का का लइका, लड़की का लइकी
- 3 स के स्थान पर छ का प्रयोग होता है।
जैसे - सात का छात, सीता का छीता

कुछ शब्द रूप

छोकरा (लड़का), दिहिस (देना), रहँ (रहिस), कौन (कोनो)

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण बिंदु

- ✓ छत्तीसगढ़ी बोली पूर्वी हिन्दी उपभाषा की प्रमुख बोली है।
- ✓ छत्तीसगढ़ में बोली जाने के कारण इसका नाम **छत्तीसगढ़ी** है।
- ✓ इसके अन्य नाम - खलटाही, खलोटी, खुलताही, लरिया।
- ✓ **मुख्य उपबोलियाँ** - सुरगुजिया, कलंगा, भुइया, सतनामी, कांकेरी, बिलासपुरी, हबबी (बस्तर), बिंझावली।
- ✓ यह उत्तर प्रदेश (कुछ भाग) और मध्य प्रदेश (कुछ भाग) में भी बोली जाती है।
- ✓ लोकसाहित्य, लोकगीत और लोककथाओं की समृद्ध परंपरा मिलती है।
- ✓ **भाषिक विशेषता** - ऐ→अइ, व→व, अउ; ड लोप; स→छ (उदाहरण सहित याद रखें)।
- ✓ **उदाहरण शब्द** - बइल, जउन, छात, छीता, लइका, लइकी, दिहिस, रहँ, कोनो।

पश्चिमी हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ

❖ पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत पाँच बोलियाँ आती हैं—

- 1 ब्रजभाषा
- 2 कन्नौजी
- 3 बुंदेली
- 4 हरियाणवी
- 5 खड़ी बोली

ब्रजमंडल का क्षेत्र



मुख्य क्षेत्र

ब्रजमंडल का क्षेत्र मुख्यतः मथुरा, आगरा, बुंदेलखण्ड, भरतपुर तथा इसके आसपास के पश्चिमी उत्तर प्रदेश का भाग है।

ब्रजभाषा : परिचय

- ❖ ब्रज का पुराना अर्थ – पशुओं या गायों का समूह।
- ❖ ब्रज प्रदेश की भाषा को ब्रजभाषा कहते हैं।
- ❖ यह पश्चिमी हिन्दी की एक प्रमुख बोली है।
- ❖ यह आकार बहुला बोली है।
- ❖ इस बोली का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है।
- ❖ साहित्यिक दृष्टि से यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है, इसी कारण इसे किसी एक आंचलिक बोली न कहकर ब्रजभाषा कहा जाता है।

डॉ. भोलनाथ तिवारी का मत

- ❖ डॉ. भोलनाथ तिवारी ने पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत दो अन्य बोलियाँ – ताजुब्बेकी (ताऊ-बबैकी) तथा निमाड़ी को भी स्वीकार किया है।

इनमें से दो आकर बहुला बोलियाँ

- 1 हरियाणवी
- 2 खड़ी बोली

तीन ओकार बहुला बोलियाँ

- 1 ब्रजभाषा
- 2 कन्नौजी
- 3 बुंदेली

ब्रजभाषा की विशेषताएँ

- 1 ब्रज का पुराना अर्थ – पशुओं या गायों का समूह।
- 2 ब्रज प्रदेश की भाषा को ब्रजभाषा कहते हैं।
- 3 यह आकर बहुला बोली है।
- 4 शौरसेनी अपभ्रंश से इसका विकास हुआ है।
- 5 साहित्यिक दृष्टि से यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है, इसलिए इसे किसी एक बोली न कहकर ब्रजभाषा कहा जाता है।
- 6 इसकी भाषा मधुर, ललित, सरस और काव्यात्मक है।

ब्रजभाषा के अन्य नाम

अन्य नाम	प्रयोग क्षेत्र/संदर्भ
अन्तर्वेदी	गंगा-यमुना के दोआब क्षेत्र में
ब्रजी	सामान्य प्रचलन में
बिज	ब्रज प्रदेश का स्थानीय रूप
बिजकी	लोक उच्चारण में प्रयुक्त
मणिमाधुरी	इसकी मधुरता को सूचित करता है
माथुरी	मथुरा क्षेत्र के कारण
नागभाषा	कुछ विद्वानों द्वारा प्रयुक्त नाम

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण बिंदु

- ✓ ब्रजभाषा पश्चिमी हिन्दी की प्रमुख बोली है।
- ✓ ब्रज का पुराना अर्थ – पशुओं या गायों का समूह है।
- ✓ ब्रज प्रदेश की भाषा – ब्रजभाषा।
- ✓ यह आकर बहुला बोली है।
- ✓ इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है।
- ✓ साहित्यिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण।
- ✓ डॉ. भोलनाथ तिवारी के अनुसार तीन ओकार बहुला बोलियाँ – ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुंदेली।

उदाहरण (शब्द रूप)

एकवचन	लड़का – लड़का, लड़की – लड़की छोकरा (लड़का), दिहिस (दिया), रहँ (रहना), कौन (कौन)।
बहुवचन	लड़का – लड़किन, लड़की – लड़किन दिहिस – दिहिन, रहँ – रहँ, कौन – कौनों।



पूर्वी हिन्दी उपभाषा : ब्रजभाषा

पृष्ठ
38

ब्रजभाषा : संक्षिप्त परिचय

- ◆ मूलतः गंगा-यमुना के मध्य की भाषा होने के कारण चियरसेन ने इसे 'अन्तर्वेदी' नाम दिया।
- ◆ ब्रजभाषा पूर्वी हिन्दी उपभाषा की प्रमुख बोली है।
- ◆ यह 'आकार बहुल' बोली है।
- ◆ बंगाल में भक्ति काल के कवि चैतन्य महाप्रभु द्वारा भी ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया और उन्हें 'ब्रजबुलि' कहा जाता है।
- ◆ ब्रजभाषा का विकास मुख्यतः शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है।
- ◆ भक्तिकाल के कृष्णाश्रयी साहित्य में ब्रजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग हुआ।

ब्रजभाषा का क्षेत्र



मुख्य क्षेत्र - मथुरा, आगरा, हाथरस, फिरोजाबाद, बुलंदशहर, एटा, बदायूँ, मैनपुरी, बरेली आदि।

ब्रजभाषा की विशेषताएँ

- 1 ब्रज का पुराना अर्थ - पशुओं या गायों का समूह।
- 2 ब्रज प्रदेश की भाषा को ब्रजभाषा कहा जाता है।
- 3 यह आकार बहुल बोली है।
- 4 इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है।
- 5 साहित्यिक दृष्टि से यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है, इसलिए इसे किसी एक आंचलिक बोली न कहकर ब्रजभाषा कहा जाता है।

उपबोलियाँ, केन्द्र और साहित्यिक महत्व

विवरण	तथ्य
उपबोलियाँ	जादोवादी, डागी, भुक्सा, भरतपुरी, कछेरिया, गाँववारी, ढोलपुरी, सिकरवाड़ी।
मुख्य केन्द्र	मथुरा
क्षेत्र	मथुरा, आगरा, हाथरस, फिरोजाबाद, बुलंदशहर, एटा, बदायूँ, मैनपुरी, बरेली आदि।
साहित्यिक प्रयोग	भक्तिकाल के कृष्णाश्रयी साहित्य में अधिकाधिक ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ।
बंगाल में प्रयोग	चैतन्य महाप्रभु द्वारा प्रयुक्त ब्रजभाषा को 'ब्रजबुलि' कहा जाता है।

प्रमुख ग्रंथ, रचनाकार और रचनाएँ

क्रम	रचनाकार	प्रमुख रचनाएँ / परिचय
1	सूरदास	सूरसागर, सूर सारावली, साहित्य लहरी।
2	तुलसीदास	कवितावली, विनयपत्रिका, गीतावली, श्रीकृष्णगीतावली।
3	रसखान	प्रेमवाटिका, प्रेमसुजान।
4	बिहारी	बिहारी सतसई।
5	केशवदास	रामचंद्रिका, रसिकप्रिया, कविप्रिया, रतनबावनी, जहाँगीर जसचंद्रिका।
6	घनानंद	सुजान सागर, सुजान हित, विरह लीला।

विशेष- घनानंद रीतिकाल के रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि थे।

ब्रजभाषा से संबंधित स्थल



परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण बिंदु

- ✓ ब्रजभाषा पूर्वी हिन्दी उपभाषा की प्रमुख बोली है।
- ✓ गंगा-यमुना के मध्य की भाषा होने से इसे चियरसेन ने 'अन्तर्वेदी' नाम दिया।
- ✓ यह आकार बहुल बोली है।
- ✓ भक्तिकाल के कृष्णाश्रयी साहित्य में ब्रजभाषा का अधिक प्रयोग हुआ।
- ✓ बंगाल में चैतन्य महाप्रभु द्वारा प्रयुक्त ब्रजभाषा - 'ब्रजबुलि'।
- ✓ मुख्य केन्द्र - मथुरा।
- ✓ प्रमुख उपबोलियाँ - जादोवादी, डागी, भुक्सा, भरतपुरी, कछेरिया, गाँववारी, ढोलपुरी, सिकरवाड़ी।

लेखक : बिपिन कुमार चौधरी

(7) भारतेन्दु हरिश्चंद्र : संक्षिप्त परिचय

- ◆ भारतेन्दु हरिश्चंद्र आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक कहलाते हैं।
- ◆ उन्होंने ब्रजभाषा का प्रयोग अष्टछाप के समस्त कवियों – रहीम, रसखान, बिहारी, देव, रत्नाकर, सत्यनारायण और कविरत्न वादि के साथ किया।
- ◆ भारतेन्दु हरिश्चंद्र की रचनाओं में सामाजिक, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना का समन्वय मिलता है।
- ◆ उनका मूल नाम हरिश्चंद्र था, किन्तु साहित्य-जगत में वे 'भारतेन्दु' उपाधि से प्रसिद्ध हुए।

मुख्य रचनाएँ (उदाहरण)

- बंदर सभा, वर्षा विनोद, होली,
- प्रेम-माधुरी, दानलीला, दशरथ विलाप,
- गीत गोविंद आनन्द आदि।



भारतेन्दु हरिश्चंद्र
(आधुनिक हिन्दी
साहित्य के जनक)

भारतेन्दु हरिश्चंद्र का योगदान

- ✓ हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका।
- ✓ समाज-सुधार, राष्ट्रवाद, आधुनिक चेतना और पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य।
- ✓ हिन्दी नाटक, निबंध, पत्रकारिता और गद्य साहित्य को नई दिशा प्रदान की।

ब्रजभाषा के कवि (अष्टछाप)

- ◆ अष्टछाप के समस्त कवियों – रहीम, रसखान, बिहारी, देव, रत्नाकर, सत्यनारायण और कविरत्न ने ब्रजभाषा का प्रयोग किया है।



ब्रजभाषा की विशेषताएँ (संदर्भ)

- ◆ कृष्णभक्ति काव्य की प्रमुख भाषा।
- ◆ रस, माधुर्य और काव्यज्ञात्मकता से युक्त।
- ◆ काव्य की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध और लोकप्रिय।
- ◆ उत्तर भारत के विशाल क्षेत्र में प्रचलित।

कन्नौजी : परिचय

- ◆ कन्नौजी का नाम कान्यकुब्ज (कन्नौज) से पड़ा है।
- ◆ यह ब्रजभाषा की ही एक प्रमुख उपभाषा/बोली है।
- ◆ इसका प्रयोग गंगा-यमुना दोआब तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में किया जाता है।

कन्नौजी का क्षेत्र

मुख्य केन्द्र – कन्नौज

क्षेत्र – कन्नौज, इटावा, फीरोजाबाद, आगरा, हाथरस, मैनपुरी, बदायूँ, बरेली आदि।



कन्नौजी की विशेषताएँ

- 1 इसका नाम कान्यकुब्ज (कन्नौज) के नाम से पड़ा है।
- 2 यह ब्रजभाषा की ही एक बोली है।
- 3 इसका प्रयोग गंगा-यमुना दोआब के क्षेत्र में होता है।
- 4 इसमें तीनों **श, ष और स** केवल '**स**' के रूप में मिलते हैं।
जैसे – शेर → सेर, षट → सत, शशि → ससि (केवल स)
- 5 **ऋ** के स्थान पर '**र**' मिलता है।
जैसे – ऋषि → रिसि
- 6 **ण** के स्थान पर '**न**' मिलता है।
जैसे – वर्ण → बरन
- 7 आकारान्त संज्ञाओं के स्थान पर ओकारान्त का प्रयोग होता है।
जैसे – हमारा → हमारो, उनका → उनको

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण बिंदु

- ✓ भारतेन्दु हरिश्चंद्र – आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक।
- ✓ अष्टछाप के कवियों ने ब्रजभाषा का प्रयोग किया।
- ✓ ब्रजभाषा का संबंध कृष्णभक्ति काव्य से है।
- ✓ कन्नौजी का नाम कान्यकुब्ज (कन्नौज) से पड़ा है।
- ✓ कन्नौजी क्षेत्र – कन्नौज, इटावा, फीरोजाबाद, आगरा, हाथरस, मैनपुरी, बदायूँ, बरेली आदि।
- ✓ कन्नौजी की प्रमुख ध्वनि-विशेषता – **श, ष, स → 'स'; ऋ → 'र'; ण → 'न'**।
- ✓ आकारान्त संज्ञाओं में ओकारान्त रूप – हमारा → हमारो, उनका → उनको।

कन्नौजी : संक्षिप्त परिचय

- ◆ यह पूर्वी ब्रज भाषा की प्रमुख उपभाषा है।
- ◆ कन्नौज जनपद का पुराना नाम **कन्नौज** था।
- ◆ इसी आधार पर **आचार्य किशोरीदास वाजपेयी** ने इसे '**पांचाली**' नाम दिया।
- ◆ यह भाषा ब्रज के अत्यधिक समीप है, इसलिए डॉ. धीरेन्द्र वर्मा इसे ब्रज की उपबोली '**पूर्वी ब्रज**' भी मानते हैं।
- ◆ यह **आकार बहुला बोली** है।
- ◆ इस बोली का विकास **शौरसेनी अपभ्रंश** से हुआ है।
- ◆ **कुम्भदास** द्वारा रचित अधिकांश पद कन्नौजी में ही रचित हैं।

कन्नौजी का क्षेत्र



मुख्य क्षेत्र - कन्नौज, हरदोई, पीलीभीत, शाहजहाँपुर, फर्रुखाबाद, मैनपुरी, इटावा, कानपुर, औरैया आदि।

कन्नौजी के अन्य नाम

क्रम	अन्य नाम
1	पांचाली (आचार्य किशोरीदास वाजपेयी द्वारा)
2	पूर्वी ब्रज (डॉ. धीरेन्द्र वर्मा द्वारा)
3	कन्नौजिया, कन्नउजी (प्रचलित नाम)

कन्नौजी की प्रमुख विशेषताएँ

- 1 यह पूर्वी ब्रज की प्रमुख उपभाषा है।
- 2 यह **आकार बहुला बोली** है।
- 3 इसका विकास **शौरसेनी अपभ्रंश** से हुआ है।
- 4 यह ब्रज के अत्यधिक समीप है।
- 5 डॉ. धीरेन्द्र वर्मा इसे ब्रज की उपबोली '**पूर्वी ब्रज**' मानते हैं।
- 6 **कुम्भदास** द्वारा रचित अधिकांश पद कन्नौजी में रचित हैं।

उपबोलियाँ

भुक्सा, इटावी, बंगराही, शाहजहाँपुरी, पीलीभीती, तिरहारी, पंचुरुआ आदि।

प्रमुख रचनाकार

कुम्भदास - इनके अधिकांश पद कन्नौजी में रचित हैं।

भाषिक विशेषताएँ (उदाहरण सहित)

क्रम	भाषिक विशेषता	उदाहरण
1	यह आकारान्त बोली है।	छोटो, बड़ो, आओ, गओ, तुमाओ, चलो।
2	य के स्थान पर ज का प्रयोग।	युग का जुग, यमुना का जमुना।
3	व के स्थान पर ब का प्रयोग।	वकील का बकील, विशेषता का बहीखाता।

परीक्षा उपयोगी बिन्दु (संक्षेप में)

- ✓ कन्नौजी - पूर्वी ब्रज भाषा की प्रमुख उपभाषा।
- ✓ कन्नौज का पुराना नाम - कन्नौज; इसलिए इसे '**पांचाली**' नाम (आचार्य किशोरीदास वाजपेयी)।
- ✓ डॉ. धीरेन्द्र वर्मा - ब्रज की उपबोली '**पूर्वी ब्रज**'।
- ✓ यह **आकार बहुला बोली** है।
- ✓ विकास - **शौरसेनी अपभ्रंश** से।
- ✓ **प्रमुख रचनाकार** - कुम्भदास (पद रचना)।
- ✓ **मुख्य क्षेत्र** - कन्नौज, हरदोई, पीलीभीत, शाहजहाँपुर, फर्रुखाबाद, मैनपुरी, इटावा, कानपुर, औरैया।
- ✓ **उपबोलियाँ** - भुक्सा, हरदोई, बंगराही, शाहजहाँपुरी, पीलीभीती, तिरहारी, पंचुरुआ।

बुंदेली : संक्षिप्त परिचय

- ♦ बुंदेली राजपूतों के अधिपत्य के कारण इस क्षेत्र की बोली को **बुंदेली** कहा जाता है।
- ♦ यह क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से बुंदेलखंड कहलाता है, इसलिए यहाँ की बोली को **बुंदेली** या **बुंदेलखण्डी** भी कहा जाता है।
- ♦ यह पश्चिमी हिन्दी की एक प्रमुख उपभाषा है।
- ♦ इस बोली का विकास **शौरसेनी अपभ्रंश** से हुआ है।
- ♦ डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार बुंदेली, कन्नौजी के समान स्तर की एक **उपबोली** है।
- ♦ लालाकवि ने **छत्रसाल बुंदेला** के आश्रय में बुंदेली में '**छत्रप्रकाश**' नामक प्रसिद्ध काव्य की रचना की थी।

बुंदेली का क्षेत्र



मुख्य क्षेत्र – जालौन, हमीरपुर, झाँसी, बाँदा, चित्रकूट, महोबा, ललितपुर, मुरैना, ग्वालियर, औरछा, सागर, दमोह, सिवनी, जबलपुर, होशंगाबाद आदि।

भाषिक विशेषताएँ

- 1 यह बोली **आकार बहुल (आकारान्त)** है।
- 2 इस बोली का विकास **शौरसेनी अपभ्रंश** से हुआ है।
- 3 इसमें लोकसाहित्य प्रचुर मात्रा में प्राप्त है, जिसमें **ईशुरी** द्वारा रचित '**ईशुरी के फाग**' बहुत प्रसिद्ध हैं।
- 4 यह बोली **सरल, प्रवाहमान** और लोकजीवन से जुड़ी हुई है।
- 5 इसमें वीर रस, श्रृंगार रस तथा लोकगीतों की समृद्ध परंपरा मिलती है।

उपबोलियाँ

उपबोली	प्रमुख क्षेत्र
बनाफरी	बनाफरी क्षेत्र (बाँदा, पवाई आदि)
पंवारी	पंवारी क्षेत्र (दमोह, सिवनी आदि)
लोधानी	लोधानी क्षेत्र (सागर, ललितपुर आदि)
निबटा	निबटा क्षेत्र (जबलपुर, होशंगाबाद आदि)



अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ✓ बुंदेली में लोककाव्य, लोकगीत और लोकनाट्य की समृद्ध परंपरा है।
- ✓ बुंदेली साहित्य में **आल्हा (आल्हा-ऊदल)** अत्यंत प्रसिद्ध लोकगाथा है।

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण बिंदु

- 1 **बुंदेली** – पश्चिमी हिन्दी की प्रमुख उपभाषा है।
- 2 यह क्षेत्रीय रूप से **बुंदेलखंड** में बोली जाती है।
- 3 इसका विकास **शौरसेनी अपभ्रंश** से हुआ है।
- 4 यह **आकार बहुल (आकारान्त)** बोली है।
- 5 इसकी प्रमुख **उपबोलियाँ** – बनाफरी, पंवारी, लोधानी, निबटा।
- 6 **ईशुरी के फाग** और **आल्हा-ऊदल** अत्यंत प्रसिद्ध हैं।
- 7 लालाकवि ने **छत्रसाल बुंदेला** के आश्रय में '**छत्रप्रकाश**' की रचना की थी।
- 8 डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार बुंदेली, कन्नौजी के समान स्तर की एक उपबोली है।

प्रमुख कवि एवं रचनाएँ

कवि / लेखक	प्रमुख रचना
ईशुरी	ईशुरी के फाग (लोकगीत)
लालाकवि	छत्रप्रकाश (वीरकाव्य)
आल्हा कवि (लोककवि)	आल्हा-ऊदल (लोकगाथा)
अन्य	लोकगीत, लोककाव्य, वीरकाव्य और भक्तिकाव्य

परीक्षा उपयोगी अतिरिक्त तथ्य

- ✓ बुंदेलखंड – मध्य भारत का ऐतिहासिक क्षेत्र।
- ✓ यह क्षेत्र राजपूत शासकों के अधीन रहा।
- ✓ यहाँ वीर रस और श्रृंगार रस की रचनाएँ अधिक मिलती हैं।
- ✓ बुंदेली – लोकजीवन, ग्रामीण संस्कृति और वीर परंपरा की बोली।



पूर्वी हिन्दी उपभाषा : बुंदेली

पृष्ठ
42



बुंदेली की विशेषताएँ



1

प्यार सूचक के लिए 'या' और 'जा' का प्रयोग

बुंदेली में प्यार, स्नेह या निकटता व्यक्त करने के लिए प्रायः 'या' और 'जा' जोड़े जाते हैं।

जैसे - बेटी → बिटिया, बेटा → बिटवा।

2

सर्वनाम रूपों में 'रो' के स्थान पर 'ओ'

बुंदेली में सर्वनामों के मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष के सम्बन्ध कारकों में 'रो' (का/के/की) के स्थान पर 'ओ' का प्रयोग होता है।

जैसे - तुम्हारा → तुम्हारो, हमारा → हमारो।

3

अकारान्त संज्ञाओं में 'अ' का प्रयोग

अकारान्त संज्ञाओं के स्थान पर 'अ' का प्रयोग होता है।

जैसे - बराबर → बिरोबर, घर → घुर, नर → नरजु।

4

इकारान्त संज्ञाओं में 'र' का प्रयोग

इकारान्त संज्ञाओं के स्थान पर 'र' का प्रयोग होता है।

जैसे - पडा → परो, नदी → नदर, कली → कलर।

5

बुंदेली की प्रवृत्ति आकरान्त

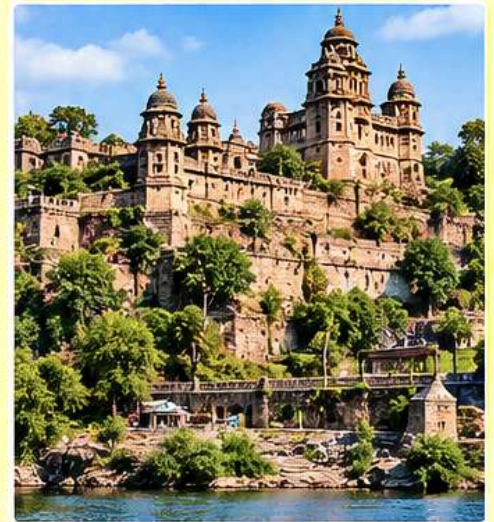
बुंदेली की प्रकृति आकरान्त (आकारान्त) है तथा 'ओ' और 'ए' ध्वनियों का प्रचुर्य मिलता है।

जैसे - बड़ा → बड़ो, खड़ा → खड़ो, कड़ा → बड़ो।

बुंदेली का क्षेत्र



मुख्य क्षेत्र - उत्तर प्रदेश के झाँसी, जालौन, हमीरपुर, बाँदा, महोबा तथा मध्य प्रदेश के दतिया, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, सागर, दमोह आदि (समष्टि रूप से बुंदेलखंड क्षेत्र)।



अन्य नाम

बांगड़, बांगर, जादू, देसवाली, देसाणी, हरियाणी।



बुंदेली की प्रमुख विशेषताएँ

- ✓ यह हरियाणवी से भिन्न एक स्वतंत्र भाषा-रूप है।
- ✓ यह आकरान्त बोली है।
- ✓ इस बोली का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है।
- ✓ जाटों के बाहुल्य के कारण इसे जादू भी कहा जाता है।
- ✓ लोकगीतों, लोककथाओं, वीरगाथाओं और लोकनाट्य परम्परा में इसका समृद्ध साहित्य मिलता है।



साहित्यिक दृष्टि

बुंदेली में लोकसाहित्य पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है, जिसमें लोकगीत, आल्हा (वीरगाथा काव्य), रीतिकालीन कवियों तथा लोक कवियों की रचनाएँ महत्वपूर्ण हैं।



लेखक : बिपिन कुमार चौधरी





हरियाणवी की विशेषताएँ

- 1 हरियाणवी में प्रचलित होने के कारण इसका नाम **हरियाणवी** पड़ा।
- 2 यह **आकारान्त (स्वरान्त)** बोली है।
- 3 इस बोली का विकास **शौरसेनी अपभ्रंश** से हुआ है।
- 4 जाटों के बाहुल्य के कारण इस बोली को **जादू (जाटू)** भी कहा जाता है।
- 5 आचार्य जॉर्ज ग्रीयरसन ने इस बोली को **बांगर तथा देसवाली** नाम दिया है।

अन्य नाम

बांगर, बांगरू, जादू (जाटू), देसवाली, देसाणी, हरियानी, हरियाणी।

भाषिक विशेषताएँ

- ✓ ध्वनि-प्रयोग की दृष्टि से यह **ओकारान्त** बोली है।
- ✓ शब्द-रूपों में 'ओ' का व्यापक प्रयोग मिलता है।
- ✓ सर्वनाम रूपों में प्रायः 'रो' (का/के/की) का प्रयोग होता है।
- ✓ क्रिया-रूपों में 'सै', 'से', 'थे' आदि रूपों का प्रयोग मिलता है।
- ✓ इसमें 'ऐ' के स्थान पर 'ए' तथा 'औ' के स्थान पर 'ओ' का प्रयोग प्रबल है।
- ✓ भाषा सरल, स्वाभाविक, प्रभावी और **ओजपूर्ण** है।
- ✓ लोकगीतों, लोककथाओं, वीरगाथाओं और लोकनाट्य परंपरा में इस बोली की समृद्ध परंपरा मिलती है।

साहित्यिक दृष्टि

- ◆ हरियाणवी में **लोकसाहित्य** की समृद्ध परंपरा है।
- ◆ इसमें **लोकगीत, लोककथा, वीरगाथा, ढोला, सांग** आदि प्रमुख हैं।
- ◆ लोकभाषा होने के कारण इसमें जनजीवन की सजीवता और ग्रामीण संस्कृति की झलक मिलती है।

हरियाणवी का क्षेत्र



मुख्य क्षेत्र – हरियाणा राज्य तथा इसके आसपास के क्षेत्र – दिल्ली, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, उत्तर-पूर्वी राजस्थान के कुछ भाग।

उदाहरण (हरियाणवी और मानक हिन्दी)

हरियाणवी रूप	मानक हिन्दी रूप
बेटा	बेटा
बिटिया	बिटिया
तुम्हारा	तुम्हारा
हमारो	हमारा
बराबर	बराबर
पड़ो	पड़ो
ओ	वह
रो	का/के/की
नर	नहीं
जादू	जाट (जाटों का)

परीक्षा उपयोगी बिंदु

- हरियाणवी – पूर्वी हिन्दी की प्रमुख उपभाषा।
- विकास – शौरसेनी अपभ्रंश से।
- आकारान्त (स्वरान्त) बोली।
- अन्य नाम – बांगर, देसवाली, जादू (जाटू) आदि।
- आचार्य जॉर्ज ग्रीयरसन ने नाम दिया – **बांगर तथा देसवाली**।





हरियाणवी : परिचय

- ◆ हरियाणवी, पूर्वी हिन्दी की एक प्रमुख उपभाषा है।
- ◆ यह **पश्चिमी हिन्दी** समूह की उपभाषा भी मानी जाती है।
- ◆ इसका नाम **हरियाणा राज्य** के नाम पर पड़ा है।
- ◆ यह बोली **सरल, स्वरप्रधान, प्रभावी और ओजपूर्ण** है।
- ◆ हरियाणा तथा आसपास के क्षेत्रों की **लोकजीवन, लोककथा, वीरगाथा** और ग्रामीण संस्कृति की झलक इसमें मिलती है।

प्रमुख उपबोलियाँ

उपबोली	क्षेत्र
जाटी	रोहतक, झज्जर, सोनीपत, जींद
अहीरवाटी	रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, गुरुग्राम (गुड़गांव), नूंह (मेवात क्षेत्र)
बांगर	करनाल, पानीपत, हिसार, जींद, फतेहाबाद
मेवाती	नूंह (मेवात), पलवल, दक्षिणी हरियाणा

भाषिक विशेषताएँ

- 1 **'न'** की जगह **'ण'** का प्रयोग होता है।
जैसे- पानी → पाणी, उठना → उठणा,
बैठना → बैठणा, अपना → अपणा, जाना → जाणा।
- 2 ध्वनिलोप (**स्वर लोप**) पाया जाता है।
जैसे- अंगूठा → अंयांठा, इकहत्तर → इकत्तर,
स्कूल → सकूल।
- 3 कुछ विशिष्ट शब्दों का प्रयोग होता है।
जैसे- अठे → अब, आड़े → यहाँ/इधर, हाड़े → हमारे,
इत → इतना, उरे → उधर, किक → क्या/क्यों (प्रश्नवाचक)।
- 4 वाक्यविन्यास सरल, स्पष्ट और प्रभावी होता है।
जैसे- **के करै सै?** (क्या कर रहे हो?)
का बात सै? (क्या बात है?)

साहित्यिक दृष्टि से महत्व

- ✓ हरियाणवी लोकसाहित्य की समृद्ध परंपरा है।
- ✓ इसमें **लोकगीत, लोककथा, कहावतें, सांग, रागनी** आदि प्रसिद्ध हैं।
- ✓ **ग्रामीण जीवन, वीरता, हास्य-व्यंग्य और लोकसंस्कृति** का सजीव चित्रण मिलता है।

हरियाणवी का क्षेत्र



महेन्द्रगढ़ का ऐतिहासिक किला
(अहीरवाटी क्षेत्र)

कुछ प्रमुख शब्द (हरियाणवी - मानक हिन्दी)

हरियाणवी रूप	मानक हिन्दी रूप
पाणी	पानी
उठणा	उठना
बैठणा	बैठना
अपणा	अपना
जाणा	जाना
अठे	अब
आड़े	यहाँ/इधर
हाड़े	हमारे
इत	इतना
उरे	उधर
किक	क्या/क्यों

परीक्षा हेतु प्रमुख बिंदु

- हरियाणवी - पूर्वी हिन्दी की प्रमुख उपभाषा।
- क्षेत्र - **हरियाणा राज्य** तथा आसपास का क्षेत्र।
- मुख्य उपबोलियाँ - **जाटी, अहीरवाटी, बांगर, मेवाती**।
- मुख्य विशेषताएँ - **'ण'** का प्रयोग, ध्वनिलोप, विशिष्ट शब्दावली, सरल व प्रभावी शैली।
- सांस्कृतिक महत्व - **लोकगीत, सांग, रागनी, कहावतें**।





पूर्वी हिन्दी उपभाषा : खड़ी बोली

पृष्ठ
45

खड़ी बोली – परिचय

- 1 यह **खड़ी** अर्थात् (स्वतंत्र) बोली है।
- 2 खड़ी बोली का विकास **मध्याकालीन पश्चिमी हिन्दी उपभाषाओं** (विशेषतः हरियाणवी, ब्रज और मेवाती) के प्रभाव से हुआ है।
- 3 इस बोली को **आधुनिक हिन्दी भाषा** का आधार माना जाता है।

खड़ी बोली क्यों कहते हैं?

- 1 डॉ. धीरेंद्र वर्मा ने इसके वर्णों में **खड़ी-पाई** (स्पष्ट उच्चारण) की अधिकता के कारण इसे 'खड़ी बोली' कहा है।
- 2 उदयनारायण तिवारी ने इसे **खड़ी** अर्थात् (स्वतंत्र) बोली माना है।
- 3 रामचंद्र शुक्ल ने इसे **खड़ी** अर्थात् शुद्ध/स्वतंत्र बोली बताया है और इसे सर्वमान्य बोली माना है।

प्रमुख उपबोलियाँ

उपबोली	क्षेत्र
करनाली	करनाल, रोहतक
रोहतकी	रोहतक, झज्जर
पानीपथी	पानीपत
हिसारी	हिसार, जींद
बहादुरगढ़ी	बहादुरगढ़, झज्जर
दादरी	दादरी, गाजियाबाद के निकटवर्ती क्षेत्र
महेंद्रगढ़ी	महेंद्रगढ़, रेवाड़ी

प्रमुख रचनाकार और कृतियाँ

- ◆ चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' – खड़ी बोली के प्रारम्भिक कवि माने जाते हैं।
- ◆ राहुल सांकृत्यायन – कुछ जनपदों के आधार पर खड़ी बोली को 'राहुल सांकृत्यायन की बोली' भी कहा गया है।
- ◆ आधुनिक खड़ी बोली हिन्दी के प्रथम महाकवि – अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'।

मुख्य क्षेत्र



महत्वपूर्ण तथ्य

- ◆ गाँवों की बोलचाल में इसे अनेक स्थानों पर 'हरियाणवी' के नाम से भी कहा जाता है।
- ◆ आज के समय में **संस्कृत से युक्त खड़ी बोली** को ही 'मानक हिन्दी' रूप में स्वीकार किया गया है।
- ◆ खड़ी बोली हिन्दी भाषा का **सर्वाधिक प्रभावशाली** रूप है जो शिक्षा, प्रशासन, समाचार, साहित्य तथा संचार माध्यमों में प्रयुक्त होती है।

भाषिक विशेषताएँ

- 1 ध्वनियों का उच्चारण प्रायः **स्पष्ट और खड़ी-पाई** के साथ होता है।
- 2 सर्वनाम रूपों में 'मैं', 'तू/तुम', 'वह' आदि का प्रयोग मिलता है; कई स्थानों पर 'के' (क्या कर रहे हो?) और 'का' (क्या बात है?) का प्रयोग भी मिलता है।
- 3 कुछ विशिष्ट शब्दों का प्रयोग – **अठे** (अब), **आई** (यहाँ/इधर), **हाड़े** (हमारे), **इत** (इतना), **उरे** (उधर), **किक/कैक** (क्या/क्यों) आदि।
- 4 वाक्य विन्यास सरल, स्पष्ट और प्रभावी होता है। लोकगीतों, लोककथाओं और वीरगाथाओं की समृद्ध परंपरा मिलती है।

परीक्षा उपयोगी बिंदु

- ✓ खड़ी बोली – आधुनिक मानक हिन्दी का आधार।
- ✓ मुख्य क्षेत्र – हरियाणा तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ भाग।
- ✓ प्रमुख उपबोलियाँ – करनाली, रोहतकी, पानीपथी, हिसारी, बहादुरगढ़ी, दादरी, महेंद्रगढ़ी।
- ✓ विशेषताएँ – स्पष्ट उच्चारण, सरल रूप, व्यापक प्रयोग।



लेखक : बिपिन कुमार चौधरी





पूर्वी हिन्दी उपभाषा : खड़ी बोली

पृष्ठ
46

खड़ी बोली – संक्षिप्त परिचय

- ◆ खड़ी बोली पूर्वी हिन्दी की प्रमुख उपभाषा है।
- ◆ इसका विकास मध्यकालीन पश्चिमी हिन्दी उपभाषाओं (विशेषतः हरियाणवी, ब्रज और मेवाती) के प्रभाव से हुआ है।
- ◆ यह बोली आधुनिक मानक हिन्दी भाषा का आधार मानी जाती है।
- ◆ खड़ी बोली का प्रारम्भिक महाकाव्य 'प्रिय प्रवास' (1914 ई.) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्वारा रचित है।
- ◆ खड़ी बोली के प्रथम कवि अमीर खुसरो माने जाते हैं।
- ◆ खड़ी बोली का जनक भी अमीर खुसरो को माना जाता है।

खड़ी बोली का क्षेत्र



खड़ी बोली की रचनाएँ

- 1 सदासुखलाल – सुखसागर
- 2 ईशा अल्ला खाँ – रानी केतकी की कहानी
- 3 लल्लूलालजी – प्रेमसागर
- 4 सदत मिश्र – नासिकेतोपाख्यान
- 5 गंग कवि – चंद छंद बरनन की महिमा

प्रमुख रचनाकार और कृतियाँ

- ◆ अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' – प्रिय प्रवास (प्रथम महाकाव्य, 1914 ई.)
- ◆ लल्लूलाल – प्रेमसागर
- ◆ ईशा अल्ला खाँ – रानी केतकी की कहानी
- ◆ सदासुखलाल – सुखसागर
- ◆ सदत मिश्र – नासिकेतोपाख्यान
- ◆ गंग कवि – चंद छंद बरनन की महिमा

महत्वपूर्ण तथ्य

- ◆ गाँवों की बोलचाल में इसे अनेक स्थानों पर 'हरियाणवी' के नाम से भी कहा जाता है।
- ◆ आज के समय में विकसित आधुनिक मानक हिन्दी इसी बोली पर आधारित है।
- ◆ खड़ी बोली हिन्दी भाषा का सर्वाधिक प्रभावशाली रूप है, जो शिक्षा, प्रशासन, समाचार, साहित्य तथा संचार माध्यमों में प्रयुक्त होती है।

वर्तमान में खड़ी बोली की तीन शक्तियाँ

- 1 हिंदुस्तानी – वह शैली जिसमें संस्कृत और उर्दू के प्रचलित शब्दों का प्रयोग होता है।
* इसे सबसे पहले महात्मा गाँधी ने कहा था।
- 2 साहित्यिक हिन्दी – शिक्षित वर्ग की भाषा, जिसमें तत्सम शब्दों की प्रधानता रहती है।
- 3 बोलचाल की हिन्दी – सामान्य जन-जीवन में प्रयुक्त सरल, स्वाभाविक तथा मिश्रित रूप।

उपबोलियाँ

पहाड़ताली, बिजनौरी

क्षेत्र

सहारनपुर, मुज़फ्फरनगर, शामली, बागपत, मेरठ, गाज़ियाबाद, हापुड़, बुलंदशहर, अलीगढ़, गौतमबुद्धनगर, मुरादाबाद, रामपुर, संभल, बरेली, अमरोहा, बिजनौर।

उत्तराखण्ड में प्रचलित रूप

हरिद्वार, देहरादून, नैनीताल

हरियाणा में प्रचलित रूप

फरीदाबाद, गुड़गाँव, सोनीपत, पानीपत, पलवल

दक्षिणी भारत में खड़ी बोली का प्रारम्भिक प्रयोग

- ◆ दक्षिणी भारत में खड़ी बोली का सबसे पहले प्रयोग मुल्ला वज़ही (सबरंग) ने किया था।

खड़ी बोली का गद्य

- ◆ नवाज गोसुदराज द्वारा रचित 'मिराजुल आशकीन' खड़ी बोली की प्रथम गद्य रचना मानी जाती है।

संपादक

राजा शिवप्रसाद सिताराहिंद की बनारस अखबार तथा राजालक्ष्मण सिंह की 'प्रजा हितैषी'।



लेखक : बिपिन कुमार चौधरी





काशिका बोली – परिचय

- ◆ यह बोली भाषा परिवार के अनुसार एक भारतीय आर्य भाषा है।
- ◆ काशिका बोली को काशी की बोली भी कहा जाता है।
- ◆ काशिका भाषा का विस्तार भोजपुरी भाषा क्षेत्र के पश्चिमी हिस्से से लेकर अवधी भाषा क्षेत्र तक है।
- ◆ यह वाराणसी और उसके आस-पास के क्षेत्रों— आजमगढ़ और इलाहाबाद (प्रयागराज) में बोली जाती है।

विशेषताएँ

- हिन्दी की 'ऐ' और 'ओ' ध्वनियों के स्थान पर 'ए' और 'औ' ध्वनियों का प्रयोग मिलता है।
जैसे— और → एइर, है → हइ, दौड़ → दोइड़।
- न की जगह ण का प्रयोग होता है।
जैसे— पानी → पाणी, उठना → उठणा, बैठना → बैठणा, अपना → अपना, जाना → जाणा, सुनना → सुनणा।
- ड़, ढ (उत्क्षिप्त) की जगह ड, ढ का प्रयोग होता है।
जैसे— बड़ा → बड़ा, चढ़ा → चढ़ा, आजमगढ़ → आजमगढ।
- द्वित्व व्यंजन का प्रयोग होता है।
जैसे— बोटी → बोटी, रोटी → रोटी, बापू → बाप्पु, छोटी → छोटी।

उदाहरण (मानक हिन्दी बनाम काशिका बोली)

अर्थ	मानक हिन्दी	काशिका बोली
और	और	एइर
है	है	हइ
दौड़	दौड़	दोइड़
पानी	पानी	पाणी
उठना	उठना	उठणा
बैठना	बैठना	बैठणा
अपना	अपना	अपणा
जाना	जाना	जाणा
सुनना	सुनना	सुनणा
बड़ा	बड़ा	बड़ा
चढ़ा	चढ़ा	चढ़ा
रोटी	रोटी	रोटी
छोटी	छोटी	छोटी

काशिका बोली का क्षेत्र



उदाहरण वाक्य

- यह वाराणसी व उसके आस-पास के क्षेत्र आजमगढ़ तथा इलाहाबाद में बोली जाती है।
- काशी के नाम पर इस बोली का नाम काशिका पड़ा।
- काशिका भाषा का विस्तार भोजपुरी भाषा क्षेत्र के पश्चिमी हिस्से से लेकर अवधी भाषा के क्षेत्र तक है।

महत्वपूर्ण तथ्य

- ✓ यह बोली वाराणसी, आजमगढ़ तथा इलाहाबाद (प्रयागराज) में बोली जाती है।
- ✓ इसे काशी की बोली भी कहा जाता है।
- ✓ काशिका भाषा का क्षेत्र भोजपुरी के पश्चिम और अवधी के पूर्व/पश्चिमी हिस्से तक फैला है।
- ✓ काशिका बोली उत्तर भारत की पूर्वी हिन्दी की प्रमुख उपभाषा है।

काशिका बोली का महत्व

- ▶ यह क्षेत्रीय संस्कृति, लोकजीवन और लोकसाहित्य की महत्वपूर्ण वाहक है।
- ▶ यह भाषा उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग की भाषाई पहचान का महत्वपूर्ण अंग है।
- ▶ काशिका बोली से भोजपुरी, अवधी और मानक हिन्दी के बीच भाषाई सेतु का कार्य होता है।

परीक्षा उपयोगी बिंदु

- ▶ काशिका बोली – पूर्वी हिन्दी की प्रमुख उपभाषा।
- ▶ क्षेत्र – वाराणसी, आजमगढ़, इलाहाबाद (प्रयागराज)।
- ▶ विशेषता – ए/ओ ध्वनियों का प्रयोग, न के स्थान पर ण, ड/ढ का प्रयोग, द्वित्व व्यंजन।
- ▶ मानक हिन्दी से भिन्न रूप – और → एइर, है → हइ, पानी → पाणी, बड़ा → बड़ा, रोटी → रोटी।





पूर्वी हिन्दी उपभाषा : बिहारी हिन्दी

पृष्ठ
48

बिहारी हिन्दी – परिचय

- 1 बिहार में अधिकता से बोली जाने के कारण इस उपभाषा को 'बिहारी हिन्दी' कहा गया है।
- 2 बिहारी हिन्दी का जन्म मगधी अपभ्रंश से हुआ है।
- 3 इसकी तीन प्रमुख बोलियाँ हैं—
(1) मैथिली (2) मगही (3) भोजपुरी।

प्रमुख बोलियाँ

बोली	मुख्य क्षेत्र	विशेष पहचान
मैथिली	मिथिला प्रदेश (दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी आदि)	प्राचीन एवं साहित्यिक परंपरा, नेपाल में भी प्रचलित
मगही	गया, नवादा, नालंदा, पटना आदि	ग्रामीण जीवन से जुड़ी प्राचीन बोली
भोजपुरी	छपरा, सीवान, आरा, बक्सर, भोजपुर, बलिया (उ.प्र.) आदि	लोकगीतों, लोकसंस्कृति और प्रवास के कारण विस्तृत क्षेत्र

भाषिक विशेषताएँ

- 1 हिन्दी की 'ए' और 'ओ' ध्वनियों के स्थान पर 'ए' और 'ओ' ध्वनियों का प्रयोग मिलता है।
जैसे— और → एअर, है → हऽ, दौड़ → दौड़ऽ।
- 2 'न' की जगह 'ण' का प्रयोग होता है।
जैसे— पानी → पाणी, उठना → उठणा, बैठना → बैठणा, अपना → अपना, जाना → जाणा, सुनना → सुनणा।
- 3 'ड़' और 'ढ़' (उदषित) की जगह 'ड़' और 'ढ़' का प्रयोग होता है।
जैसे— बड़ा → बड़ा, चढ़ा → चढ़ा, आजमगढ़ → आजमगढ़।
- 4 द्वित्व व्यंजन का प्रयोग होता है।
जैसे— बोटी → बोटी (बोटी), रोटी → रोटी (रोटी), बापू → बापू, छूटी → छूटी (छोटी)।

काशिका बोली (उल्लेखनीय)

- ◆ भाषाई परिवार के अनुसार काशिका एक भारतीय आर्य भाषा है।
- ◆ यह भाषा भोजपुरी भाषा क्षेत्र के पश्चिमी हिस्से से लेकर अवधी भाषा क्षेत्र तक बोली जाती है।
- ◆ काशी (वाराणसी) और उसके आस-पास के क्षेत्र (आजमगढ़, इलाहाबाद/प्रयागराज) में प्रचलित है।
- ◆ काशी के नाम पर इस बोली का नाम 'काशिका' पड़ा है।
- ◆ यह भोजपुरी तथा अवधी भाषा क्षेत्र के मध्यवर्ती स्वरूप की बोली मानी जाती है।

बिहारी हिन्दी का क्षेत्र



मैथिली बोली – प्रमुख तथ्य

- 1 यह प्राचीन मिथिला प्रदेश की बोली है।
- 2 यह रामायण के अनुसार 'मिथिलानरेश राजा जनक' की राजभाषा थी।
- 3 इसका नामकरण 1801 ई. में युरोपीय विद्वान कोलबुक (Colebrooke) द्वारा किया गया।
- 4 यह बिहार की एक राजकीय भाषा भी है।
- 5 मैथिली बोली भारत के साथ-साथ नेपाल में भी बोली जाती है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ◆ बिहारी हिन्दी का विकास मगधी अपभ्रंश से हुआ है।
- ◆ इसकी तीन प्रमुख बोलियाँ – मैथिली, मगही और भोजपुरी हैं।
- ◆ यह वाराणसी और उसके आस-पास के क्षेत्रों से लेकर आजमगढ़ और इलाहाबाद (प्रयागराज) तक बोली जाती है।
- ◆ कई शब्दों में फारसी एवं उर्दू का प्रभाव मिलता है, इसे 'जवान-ए-उर्दू-मुअल्ला' भी कहा जाता है।
- ◆ इस क्षेत्र की लोकभाषा में लोकगीतों, लोककथाओं और लोकसंस्कृति की समृद्ध परंपरा मिलती है।
- ◆ यह बोली साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

उदाहरण वाक्य (मानक हिन्दी → बिहारी हिन्दी)

मानक हिन्दी	बिहारी हिन्दी रूप
और	एअर
है	हऽ
दौड़	दौड़ऽ
पानी	पाणी
उठना	उठणा
बैठना	बैठणा
अपना	अपणा
जाना	जाणा
सुनना	सुनणा



लेखक : बिपिन कुमार चौधरी





मैथिली – मुख्य तथ्य

- 1 संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल 22 भाषाओं में मैथिली एकमात्र हिन्दी की बोली है।
- 2 मैथिली का जन्म मागधी अपभ्रंश से हुआ है।
- 3 इसे आठवीं अनुसूची में 92वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2003 द्वारा शामिल किया गया।
- 4 वर्ष 2007 में नेपाल के अंतरिम संविधान में इसे एक क्षेत्रीय भाषा के रूप में स्थान दिया गया।
- 5 भारत के झारखंड राज्य ने भी इसे द्वितीय राजभाषा का दर्जा प्रदान किया है।

मैथिली का ऐतिहासिक महत्व

- 1 इसे पहले 'मिथिलाक्षर' (तिरहुता या वैदेही लिपि) में लिखा जाता था। वर्तमान में इसे देवनागरी लिपि में लिखा जाता है।
- 2 विद्यापति द्वारा मैथिली साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान देने के कारण इन्हें "मैथिल कोकिल" कहा जाता है।
- 3 विद्यापति द्वारा रचित पदावली में राधा और श्रीकृष्ण के प्रेम का अत्यंत सुंदर वर्णन मिलता है।
- 4 मैथिली का प्राचीनतम उपलब्ध ग्रंथ "ज्योतिरिश्वर ठाकुर का वर्णरत्नाकर" है।

मैथिली बोलने का क्षेत्र (भारत में)

- ◆ बिहार – दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी, समस्तीपुर, मुंगेर, मुजफ्फरपुर, बेगूसराय, पूर्णियाँ, कटिहार, किशनगंज, भागलपुर, मधेपुरा, अररिया, वैशाली, रांची, बोकारो, जमशेदपुर, धनबाद, देवघर आदि।
- ◆ झारखंड – रांची, बोकारो, जमशेदपुर, धनबाद, देवघर आदि में भी मैथिली का प्रभाव है।

मैथिली का प्रमुख क्षेत्र



मैथिली साहित्य के प्रमुख कवि

कवि	विशेषता
विद्यापति	मैथिल कोकिल, पदावली के रचनाकार
ज्योतिरिश्वर ठाकुर	वर्णरत्नाकर (प्राचीनतम ग्रंथ)
अन्य कवि	लोरिकायत, लोकगीतों तथा भक्ति साहित्य की समृद्ध परंपरा

मैथिली की प्रमुख विशेषताएँ

- ◆ यह पूर्वी हिन्दी की प्रमुख उपभाषा है।
- ◆ अपनी समृद्ध साहित्यिक परंपरा, लोकगीतों एवं लोककथाओं के लिए प्रसिद्ध है।
- ◆ इसमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश तथा लोकभाषाओं का प्रभाव मिलता है।
- ◆ यह मधुर, सरल और संगीतात्मक भाषा है।

नेपाल में मैथिली का क्षेत्र

- ◆ धनुषा, सिरहा, सुनसरी, मोरंग, महोत्तरी, सप्तरी, रोतेहत, सरलाही आदि।

परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण बिंदु

- ▶ मैथिली – आठवीं अनुसूची की एकमात्र हिन्दी बोली।
- ▶ 92वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2003 द्वारा शामिल।
- ▶ नेपाल के अंतरिम संविधान (2007) में क्षेत्रीय भाषा का दर्जा।
- ▶ प्राचीन लिपि – मिथिलाक्षर (तिरहुता/वैदेही); वर्तमान लिपि – देवनागरी।
- ▶ विद्यापति – मैथिल कोकिल।
- ▶ प्राचीनतम ग्रंथ – वर्णरत्नाकर (ज्योतिरिश्वर ठाकुर)।





1 मैथिली के प्रमुख कवि

- 1 विद्यापति - मैथिली के महान कवि; प्रेम, भक्ति और लोकजीवन के पदों के लिए प्रसिद्ध।
- 2 चन्द्र झा - आधुनिक मैथिली साहित्य के प्रमुख कवि।
- 3 मनबोध झा - मैथिली काव्य-परंपरा के उल्लेखनीय कवि।
- 4 पं. सीताराम झा - मैथिली साहित्य के प्रमुख कवि एवं विद्वान।
- 5 गोविन्द दास - मैथिली की भक्ति-काव्य परंपरा के प्रमुख कवि।

3 मैथिली साहित्य

- ♦ विद्यापति को मैथिली का "मैथिल कोकिल" कहा जाता है।
- ♦ विद्यापति की पदावली में राधा-कृष्ण के प्रेम और भक्ति का सुंदर चित्रण मिलता है।
- ♦ ज्योतिरीश्वर ठाकुर की "वर्णरत्नाकर" मैथिली की प्राचीन महत्वपूर्ण कृति है।

5 मगही : मुख्य तथ्य

- 1 "मगही" नाम का संबंध प्राचीन "मगध" क्षेत्र से माना जाता है।
- 2 प्रमुख क्षेत्र - गया, पटना, नालंदा, नवादा, जहानाबाद, अरवल, शेखपुरा, लखीसराय, औरंगाबाद, जमुई आदि।
- 3 प्रमुख उपरूप / क्षेत्रीय रूप - कुदमाली, खोताली, पंचपरगनिया (परंपरागत वर्गीकरण)।
- 4 प्रमुख केंद्र - गया और पटना क्षेत्र।
- 5 मगही देवनागरी लिपि में व्यापक रूप से लिखी जाती है; ऐतिहासिक रूप से अन्य स्थानीय लिपियों का भी प्रयोग हुआ है।

2 मैथिली : प्रमुख तथ्य

- 1 मैथिली भारतीय आर्य भाषा-परिवार की एक प्रमुख भाषा है।
- 2 संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल 22 भाषाओं में मैथिली भी शामिल है।
- 3 92वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 2003 द्वारा मैथिली को आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया।
- 4 मैथिली का प्रमुख क्षेत्र मिथिला है; यह भारत के बिहार के मिथिला क्षेत्र तथा नेपाल के तराई क्षेत्र में बोली जाती है।
- 5 पारंपरिक रूप से मैथिली तिरहुता/मिथिलाक्षर लिपि में भी लिखी जाती रही है; वर्तमान में देवनागरी का व्यापक प्रयोग होता है।

4 मैथिली के शब्द : उदाहरण

हिन्दी शब्द	मैथिली शब्द
लड़का	लरिका
छोटा	छोटका
हमको	हमरी
उनका	ओका
होना	भेल / भेला

6 मगही साहित्य

- 1 "गौतम" - योगेश्वर प्रसाद सिंह की रचना के रूप में स्रोतों में उल्लिखित प्रमुख कृति (महाकाव्य के रूप में वर्णित)।
- 2 डॉ. उमाशंकर भट्टाचार्य - "मगही कहावत" से संबंधित लेखक के रूप में स्रोतों में उल्लेखित।

7 मगही दिवस

योगेश्वर प्रसाद सिंह के जन्मदिवस 23 अक्टूबर को विभिन्न आयोजनों में "मगही दिवस" के रूप में मनाया जाता है।

परीक्षा के लिए त्वरित पुनरावृत्ति

- 1 मैथिली - प्रमुख क्षेत्र : मिथिला।
- 2 विद्यापति - मैथिल कोकिल।
- 3 वर्णरत्नाकर - ज्योतिरीश्वर ठाकुर की कृति।
- 4 मगही - प्राचीन मगध क्षेत्र से संबंधित।
- 5 92वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 2003 - मैथिली को आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया।





भोजपुरी – प्रमुख तथ्य

- 1 भोजपुरी शब्द का निर्माण बिहार के प्राचीन भोजपुर (आरा) के आधार पर हुआ है।
- 2 भोजपुरी शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग अंग्रेज विद्वान जॉर्ज ए० ग्रिअर्सन (G. A. Grierson) ने किया था।
- 3 डॉ. भिखारी ठाकुर को उनके भोजपुरी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान के लिए “भोजपुरी का भारतेन्दु” या “भोजपुरी का शेक्सपियर” कहा जाता है।
- 4 भोजपुरी को **कैथी** तथा **देवनागरी** दोनों लिपियों में लिखा जाता है।
- 5 भोजपुरी बोली में हिन्दी की तुलना में **फिल्मों** की संख्या अधिक है।
- 6 हिन्दी भाषा की सबसे अधिक बोली जाने वाली उपभाषाओं में भोजपुरी का स्थान अग्रणी है।
- 7 भोजपुरी में **मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा** (Universal Declaration of Human Rights) का प्रकाशन विश्व की 154 भाषाओं में किया गया है।

भोजपुरी शब्द का अर्थ

भोजपुरी शब्द	अर्थ
लड़का	बेटा
छोटा	छोटका
हमको	हमरा
उनका	ओकरा
होना	गड़ल (गढ़ना)
अपना	अवर (अपन)
और	अबड़ (अधिक)

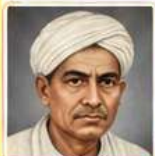
भोजपुरी की उपबोलियाँ

- 1 **बिहार** – बक्सर, सारण, सिवान, गोपालगंज, चम्पारण, वैशाली, भोजपुर, रोहतास आदि।
- 2 **उत्तर प्रदेश** – बलिया, वाराणसी, चंदौली, गोरखपुर, महाराजगंज, गाजीपुर, मिर्जापुर, मऊ आदि।
- 3 **झारखंड** – पलामू, गढ़वा।
- 4 **विदेश** – नेपाल, सूरीनाम, त्रिनिदाद, टोबैगो, फ़िजी, मॉरीशस, गुयाना आदि।

भोजपुरी का प्रमुख क्षेत्र (मानचित्र)

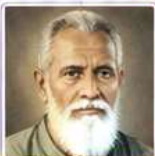


भोजपुरी के प्रमुख कवि



विद्यापति

प्रेम, भक्ति और लोकजीवन के लिए प्रसिद्ध



चन्द्र झा

आधुनिक भोजपुरी साहित्य के महत्वपूर्ण कवि



मनबोध झा

भोजपुरी काव्य-परम्परा के उल्लेखनीय कवि



पं. सीताराम झा

भोजपुरी साहित्य के प्रमुख कवि और विद्वान



गोविन्द दास

प्रेम और भक्ति से सम्बन्धित रचनाओं के लिए प्रसिद्ध

भोजपुरी साहित्य के प्रमुख कवि – संक्षिप्त परिचय

- 1 **विद्यापति** – प्रेम, भक्ति और लोकजीवन पर आधारित रचनाओं के लिए प्रसिद्ध।
- 2 **चन्द्र झा** – आधुनिक भोजपुरी साहित्य के महत्वपूर्ण कवि।
- 3 **मनबोध झा** – काव्य-परम्परा के उल्लेखनीय कवि।
- 4 **पं. सीताराम झा** – भोजपुरी साहित्य के प्रमुख कवि एवं विद्वान।
- 5 **गोविन्द दास** – प्रेम और भक्ति से सम्बन्धित रचनाओं के लिए प्रसिद्ध।

भोजपुरी से सम्बन्धित अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ◆ इसकी रचना की गयी है जिसमें देश, समाज, लोकजीवन, राधा-कृष्ण के प्रेम और श्रम-जीवन का सुन्दर वर्णन मिलता है।
- ◆ यह लोकगीतों, लोककथाओं और लोकनाटय की समृद्ध परम्परा रखती है।
- ◆ भोजपुरी में देवनागरी के साथ-साथ **कैथी लिपि** का भी प्रयोग होता रहा है।
- ◆ यह मधुर, सरल और अत्यन्त जनप्रिय भाषा है।
- ◆ भोजपुरी गीत, नाटक और सिनेमा के माध्यम से देश-विदेश में लोकप्रिय हुई है।





1 राजस्थानी हिन्दी – मुख्य तथ्य

- 1 राजस्थानी हिन्दी का जन्म शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है।
- 2 इसमें मुख्यतः चार बोलियाँ पाई जाती हैं – जयपुरी, मारवाड़ी, मेवाती और मालवी।
- 3 यह उत्तर-पश्चिमी भारत, विशेषकर राजस्थान में बोली जाती है। इसके अतिरिक्त पड़ोसी क्षेत्रों (गुजरात, मध्यप्रदेश, हरियाणा तथा पश्चिमी उत्तरप्रदेश के कुछ भागों) में भी इसके रूप मिलते हैं।
- 4 राजस्थानी को वैधानिक और भाषावैज्ञानिक दोनों दृष्टियों से पश्चिमी हिन्दी समूह में रखा जाता है, किंतु अनेक परीक्षाओं में इसे प्रायः अलग पूर्वी हिन्दी उपभाषा (राजस्थानी) के रूप में भी प्रस्तुत किया जाता है।
- 5 इसकी मुख्य विशेषता है – ध्वन्यात्मक स्वरूप में भिन्नता, विशिष्ट शब्द-रचना, लोकजीवन से जुड़ी समृद्ध शब्दावली तथा लोक-संस्कृति का प्रबल प्रभाव।

2 राजस्थानी का भौगोलिक क्षेत्र



3 राजस्थानी की प्रमुख बोलियाँ

क्रम	बोली	मुख्य क्षेत्र
1	जयपुरी (ढूंढाड़ी)	जयपुर, अलवर, दौसा, सीकर, टोंक आदि
2	मारवाड़ी	जोधपुर, जैसलमेर, जालोर, पाली, बाड़मेर आदि
3	मेवाती	अलवर, भरतपुर, मेवात क्षेत्र (राजस्थान-हरियाणा)
4	मालवी	कोटा, बूंदी, झालावाड़, चित्तौड़गढ़, मध्यप्रदेश का मालवा क्षेत्र

4 प्रमुख बोलियों का संक्षिप्त परिचय

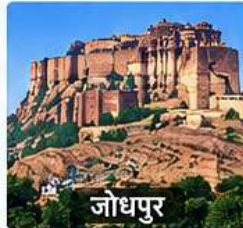
1 जयपुरी (ढूंढाड़ी)

- इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है।
- जयपुर में अधिकता के कारण इसे 'जयपुरिया' भी कहा जाता है।
- प्रमुख क्षेत्र – जयपुर, अलवर, दौसा, सीकर, टोंक।



2 मारवाड़ी

- राजस्थानी की सर्वाधिक व्यापक बोली।
- व्यापारिक और लोक-साहित्य की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण।
- प्रमुख क्षेत्र – जोधपुर, जैसलमेर, पाली, जालोर, बाड़मेर आदि।



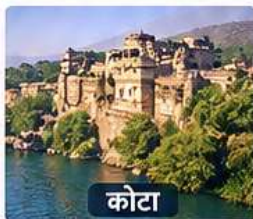
3 मेवाती

- हरियाणा-राजस्थान की सीमावर्ती बोली।
- लोकजीवन में विविधता के लिए प्रसिद्ध।
- प्रमुख क्षेत्र – अलवर, भरतपुर, मेवात।



4 मालवी

- इसका प्रभाव राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी भाग तथा मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र में।
- प्रमुख क्षेत्र – कोटा, बूंदी, झालावाड़, चित्तौड़गढ़ और मालवा क्षेत्र।



5 राजस्थानी की भाषिक विशेषताएँ

- ध्वनि, रूप, शब्दावली और वाक्य-रचना में विशिष्टता।
- लोकजीवन, लोकगीत, लोककथाओं और वीर-परंपरा का समृद्ध प्रभाव।
- राजस्थानी साहित्य में डिंगल और पिंगल परंपरा प्रसिद्ध है।
- राजस्थानी में अनेक प्राचीन और देशज शब्द संरक्षित हैं।

6 अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- राजस्थानी भाषा-परिवार को कई भाषाविद् 'राजस्थानी' नाम से एक स्वतंत्र भाषा-समूह भी मानते हैं।
- राजस्थानी का साहित्यिक रूप अत्यंत समृद्ध है, जिसमें वीरगाथा, भक्ति, श्रृंगार और लोककाव्य प्रमुख हैं।
- राजस्थानी की बोलियाँ पश्चिमी हिन्दी, गुजराती और पंजाबी से भी प्रभावित हैं।
- आधुनिक समय में राजस्थानी लोकसंगीत, लोकनाटक और लोककथाएँ इसकी पहचान हैं।





1 राजस्थानी हिन्दी – मुख्य परिचय

- 1 इसका जन्म शौरसेनी (शौरसेनी अपभ्रंश) से हुआ है।
- 2 यह राजस्थान के पूर्वी भाग में बोली जाती है, इसलिए इसे “पूर्वी राजस्थानी” भी कहा जाता है।
- 3 इस क्षेत्र में चार प्रमुख बोलियाँ पाई जाती हैं – जयपुरी, मारवाड़ी, मेवाती और मालवी।
- 4 यह राजस्थानी समूह की एक प्रमुख बोली है, जिसका प्रयोग साहित्य, लोकजीवन और दैनिक व्यवहार में होता है।

2 भौगोलिक क्षेत्र



3 प्रमुख बोलियाँ (संक्षिप्त परिचय, क्षेत्र और उदाहरण सहित)

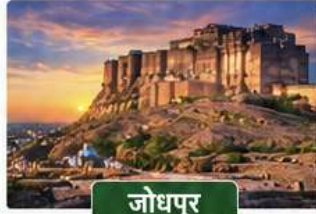
(i) जयपुरी (ढूंढाड़ी)



जयपुर

- यह राजस्थानी की एक प्रमुख बोली है।
- इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है।
- जयपुर में अधिकता होने के कारण इसे “जयपुरिया” भी कहा जाता है।
- उपबोलियाँ – कछेर, भ्याना, बीघोटा, नहड़ा।
- क्षेत्र – जयपुर, अलवर, दौसा, सीकर, टोंक आदि।

(ii) मारवाड़ी



जोधपुर

- यह राजस्थानी की पश्चिमी क्षेत्र की बोली है।
- इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है।
- इसे जैन साहित्य तथा मीरा के पदों में भी पाया जाता है।
- अन्य नाम – मरुभाषा।
- उपबोलियाँ – हाड़ौती, किशनगढ़ी, तोरावटी, राजावटी, नागरचोल।
- क्षेत्र – जोधपुर, अजमेर, चूरू, किशनगढ़, मेवाड़, जैसलमेर, बीकानेर, सिराही, पाली, जालोर आदि।

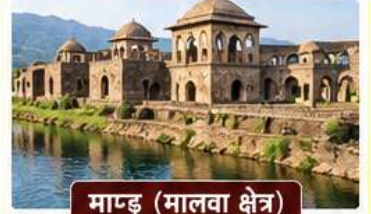
(iii) मेवाती



अलवर

- इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है।
- यह राजस्थानी के दक्षिणी क्षेत्र में बोली जाती है, इसलिए इसे “दक्षिणी राजस्थानी” भी कहा जाता है।
- इसकी केन्द्र भाषा मालवा है, परन्तु इसमें कुछ लोग मारवाड़ी तथा जयपुरी का मिश्रण भी बोलते हैं।
- क्षेत्र – अलवर, गुड़गाँव, भरतपुर, दिल्ली, करनाल आदि।

(iv) मालवी



माण्डू (मालवा क्षेत्र)

- इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है।
- यह राजस्थान की सर्वाधिक प्राचीन बोली मानी जाती है।
- यह मुख्यतः मालवा क्षेत्र में बोली जाती है, इसलिए इसे “मालवी” कहा जाता है।
- उपबोलियाँ – निमाड़ी, रांगाड़ी।
- निमाड़ी – यह मालवा के दक्षिण जिले (मध्य प्रदेश) में बोली जाती है तथा महाराष्ट्र से सटा समीपवर्ती क्षेत्र है।
- क्षेत्र – झालावाड़, कोटा, प्रतापगढ़, इंदौर, उज्जैन, देवास, रतलाम, भोपाल, होशंगाबाद आदि।

4 राजस्थानी की प्रमुख विशेषताएँ

- 1 ध्वनि, रूप, शब्दावली और वाक्य-रचना में विशिष्टता।
- 2 लोकजीवन, लोकगीत, लोककथाओं और वीर-परम्परा का समृद्ध प्रभाव।
- 3 राजस्थानी साहित्य में डिंगल और पिंगल परम्परा प्रसिद्ध है।
- 4 राजस्थानी में अनेक प्राचीन और देशज शब्द संरक्षित हैं।

5 राजस्थानी के महत्वपूर्ण तथ्य

- ◆ यह उत्तर-पश्चिमी भारत की प्रमुख बोली है।
- ◆ राजस्थानी भाषा-परिवार में ‘राजस्थानी’ नाम से एक स्वतंत्र भाषा-समूह माना जाता है।
- ◆ इसका सम्बन्ध शौरसेनी अपभ्रंश से है।
- ◆ चार मुख्य बोलियाँ – जयपुरी, मारवाड़ी, मेवाती और मालवी।
- ◆ यह पश्चिमी हिन्दी समूह से पृथक मानी जाती है।
- ◆ राजस्थानी साहित्य में लोकगीत, भक्ति, शृंगार और वीर रस की समृद्ध परम्परा है।

6 परीक्षोपयोगी बिंदु

- 1 जयपुरी – शौरसेनी अपभ्रंश, उपबोलियाँ: कछेर, भ्याना, बीघोटा, नहड़ा; क्षेत्र: जयपुर, अलवर, दौसा आदि।
- 2 मारवाड़ी – पश्चिमी राजस्थानी, अन्य नाम: मरुभाषा; उपबोलियाँ: हाड़ौती, किशनगढ़ी, तोरावटी, राजावटी, नागरचोल; क्षेत्र: जोधपुर, अजमेर, पाली आदि।
- 3 मेवाती – दक्षिणी राजस्थानी; क्षेत्र: अलवर, गुड़गाँव, भरतपुर, दिल्ली आदि।
- 4 मालवी – केन्द्र भाषा: मालवा; उपबोलियाँ: निमाड़ी, रांगाड़ी; क्षेत्र: झालावाड़, कोटा, उज्जैन, देवास आदि।





1 पहाड़ी हिन्दी - मुख्य तथ्य

- 1 पहाड़ी हिन्दी का विकास **खस अपभ्रंश** से हुआ है।
- 2 इस बोली का प्रयोग भारत के पहाड़ी क्षेत्रों में किया जाता है, जिनमें से प्रमुख क्षेत्र - **हिमाचल प्रदेश एवं उत्तराखण्ड** हैं।
- 3 पहाड़ी हिन्दी को मुख्यतः दो बोलियों में बाँटा गया है- (i) **कुमायूँनी** (ii) **गढ़वाली**
- 4 इन बोलियों का नामकरण उत्तराखण्ड के दो मण्डलों के नाम पर पड़ा है - **कुमाऊँ मण्डल** और **गढ़वाल मण्डल**, तथा इन्हें दो मण्डलों में विभाजित किया गया है।

(1) कुमाऊँ मण्डल, (1854)
 (2) गढ़वाल मण्डल (1969)
- 5 पहाड़ी हिन्दी में लोकजीवन, प्रकृति और पर्वतीय संस्कृति का सशक्त चित्रण मिलता है। इसमें लोकगीत, लोककथाएँ, लोकनाट्य और वीरगाथाओं की समृद्ध परंपरा है।

4 कुमाऊँ और गढ़वाल मण्डल का विभाजन

कुमाऊँ मण्डल (1854)		गढ़वाल मण्डल (1969)	
1	नैनीताल	1	पौड़ी गढ़वाल
2	अल्मोड़ा	2	टिहरी गढ़वाल
3	पिथौरागढ़	3	चमोली
4	उधमसिंह नगर	4	रूद्रप्रयाग
5	बागेश्वर	5	उत्तरकाशी
6	चम्पावत	6	देहरादून (सहित हरिद्वार आंशिक)

5 पहाड़ी हिन्दी की साहित्यिक विशेषताएँ

- 1 इसमें लोकजीवन, लोकगीत, लोककथाओं और वीर-परंपरा का सजीव चित्रण मिलता है।
- 2 यहाँ की लोककथाएँ पर्वतीय संस्कृति और जनजीवन से गहरे जुड़ी हैं।
- 3 पहाड़ी साहित्य में प्रकृति-चित्रण, प्रेम, भक्ति और लोकचेतना के स्वर प्रमुख हैं।
- 4 पहाड़ी हिन्दी में अनेक लोकनाट्य एवं लोकगीत परंपराएँ प्रचलित हैं।

2 पहाड़ी हिन्दी का भौगोलिक क्षेत्र



3 प्रमुख बोलियाँ (संक्षिप्त परिचय)

(i) कुमायूँनी



नैनीताल (कुमाऊँ)

- ◆ कुमायूँ शब्द का संबंध संस्कृत के 'कमाँचल' से है।
- ◆ इस बोली का नामकरण कुमाऊँ मण्डल (1854) के नाम पर पड़ा है।
- ◆ **मुख्यालय** - नैनीताल।
- ◆ **क्षेत्र** - नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़, उधमसिंह नगर, बागेश्वर, चम्पावत (कुल 6 जिले) आदि।

(ii) गढ़वाली



देवप्रयाग (गढ़वाल)

- ◆ गढ़वाल शब्द का संबंध 'गढ़वाल' (गढ़ों की भूमि) से माना जाता है।
- ◆ इस बोली का नामकरण गढ़वाल मण्डल (1969) के नाम पर पड़ा है।
- ◆ **मुख्यालय** - पौड़ी गढ़वाल (ऐतिहासिक)।
- ◆ **क्षेत्र** - पौड़ी गढ़वाल, टिहरी गढ़वाल, चमोली, रूद्रप्रयाग, उत्तरकाशी, देहरादून, पिथौरागढ़ (आंशिक), हरिद्वार (आंशिक) आदि।

6 परीक्षापयोगी बिंदु

- ✓ पहाड़ी हिन्दी का विकास - **खस अपभ्रंश** से।
- ✓ मुख्य क्षेत्र - **हिमाचल प्रदेश और उत्तराखण्ड**।
- ✓ मुख्य बोलियाँ - **कुमायूँनी और गढ़वाली**।
- ✓ कुमाऊँ मण्डल - 1854 | मुख्यालय - नैनीताल | कुल 6 जिले।
- ✓ गढ़वाल मण्डल - 1969 | मुख्यालय - पौड़ी गढ़वाल | कुल 6 जिले।
- ✓ कुमाऊँनी - नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़, उधमसिंह नगर, बागेश्वर, चम्पावत।
- ✓ गढ़वाली - पौड़ी गढ़वाल, टिहरी, चमोली, रूद्रप्रयाग, उत्तरकाशी, देहरादून (सहित हरिद्वार आंशिक)।





(i) कुमायूनी (कुमाउनी)

- 1 कुमायूनी का विकास **खस अपभ्रंश** से हुआ है।
- 2 यह उत्तराखण्ड राज्य के **कुमाऊँ क्षेत्र** में बोली जाती है।
- 3 इसका नामकरण **कुमाऊँ मण्डल (1854)** के नाम पर पड़ा है।
- 4 इसका मुख्यालय **नैनीताल** है।
- 5 **क्षेत्र** – कुल 7 जनपद: **चम्पावत, उत्तरकाशी, देहरादून, पौड़ी गढ़वाल, टिहरी गढ़वाल, हरिद्वार, ऋषिकेश/रुद्रप्रयाग।**
- 6 **प्रमुख उपबोलियाँ** – खसपराजिया (खसपरजिया), कुमैयाँ, फलकोटिया, पछाई, चौगुब्बिया, गंगोला, दानपुरिया, सीराली, सोरियाली, अस्कोटी, जोहरी, भोटिया, रज्योभैसी आदि।
- 7 **शब्द** – भोट (कल), भोओ (आने वाला कल), पोहूँ (परसों), कथती (कभी), तल्ली (नीचे), मल्ली (ऊपर), भुल (छोटा भाई), चुल (किचन), पैस (रुपया) आदि।

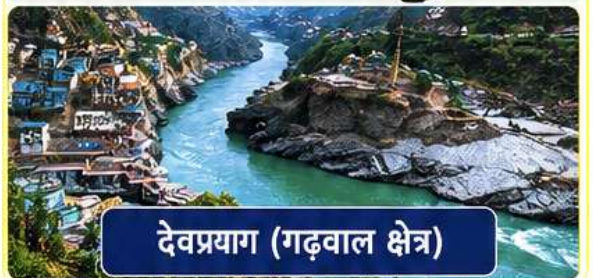
कुमायूँ क्षेत्र का मानचित्र (उत्तराखण्ड)



(ii) गढ़वाली (गढ़वाली हिन्दी)

- 1 गढ़वाली का विकास **खस अपभ्रंश** से हुआ है।
- 2 इस बोली का नामकरण **गढ़वाल (1969) मण्डल** के नाम पर पड़ा है।
- 3 इसका मुख्यालय **पौड़ी गढ़वाल** है।
- 4 **माँझ-कुमैयाँ उपबोली** को कुमायूनी और गढ़वाली के मिश्रण तथा इसे अल्मोड़े में दो संधि कहा जाता है।
- 5 गढ़वाली बोली **नागरी लिपि** में लिखी जाती है।
- 6 गढ़वाली का परिनिष्ठित रूप **श्रीनगरिया (श्रीनगरी)** है।
- 7 **प्रमुख उपबोलियाँ** – राठी, लोबयाली, बधाणी, दसौल्या, नागपुरिया, सलानी, टेहरी, बाड़ाहटी, रमोल्या, रांघली, वसौल्या, बड़ियार, गंगाड़ी, माँझ-कुमैयाँ आदि।
- 8 **शब्द** – मोल्यार (बसंत), बारिस (चौमास/बरखा), माछो (मत्स्य), आछरी (अप्सरी) आदि।

गढ़वाल क्षेत्र का मानचित्र (उत्तराखण्ड)



पहाड़ी हिन्दी (सामान्य तथ्य)

- 1 यह पूर्वी हिन्दी (राजस्थानी) की प्रमुख बोली है।
- 2 इसके अंतर्गत दो प्रमुख बोलियाँ आती हैं – (i) कुमायूनी (ii) गढ़वाली।
- 3 लोकजीवन, प्रकृति और पर्वतीय संस्कृति का सशक्त चित्रण इसमें मिलता है।
- 4 इसमें लोकगीत, लोककथाएँ, लोकनाट्य और वीर-परम्परा समृद्ध रूप में विद्यमान है।

परीक्षोपयोगी बिंदु

- ✓ कुमायूनी – कुमाऊँ क्षेत्र, मुख्यालय – नैनीताल, कुल 7 जनपद।
- ✓ गढ़वाली – मुख्यालय – पौड़ी गढ़वाल, कुल 7 जनपद।
- ✓ माँझ-कुमैयाँ – कुमायूनी और गढ़वाली की संधि।
- ✓ कुमायूनी का परिनिष्ठित रूप – श्रीनगरिया।
- ✓ लिपि – नागरी (देवनागरी)।





पूर्वी हिन्दी उपभाषा : पहाड़ी हिन्दी

पृष्ठ
56

1 पहाड़ी हिन्दी – मुख्य तथ्य

- 1 यह पूर्वी हिन्दी की एक महत्वपूर्ण उपभाषा है।
- 2 यह उत्तर भारत के पहाड़ी क्षेत्रों में बोली जाती है।
मुख्य क्षेत्र – हिमाचल प्रदेश एवं उत्तराखण्ड।
- 3 इस उपभाषा की दो प्रमुख बोलियाँ हैं –
(क) **कुमायूनी** (ख) **गढ़वाली**
- 4 इन बोलियों के अतिरिक्त इस क्षेत्र में कुछ अन्य प्रमुख बोलियाँ भी पाई जाती हैं।
- 5 पहाड़ी हिन्दी का प्रयोग स्थानीय लोकजीवन, गीत, कथाओं, लोकसाहित्य और दैनिक व्यवहार में होता है।
- 6 यह भाषा सरल, मधुर और भावात्मक अभिव्यक्ति के लिए प्रसिद्ध है।

2 पहाड़ी हिन्दी का क्षेत्र



3 प्रमुख बोलियाँ, क्षेत्र और विशेषताएँ

(i) कुमायूनी (कुमाऊनी)

- इस बोली का नामकरण **कुमाऊँ मण्डल (1854)** के नाम पर पड़ा है।
- **मुख्यालय** – नैनीताल।
- **क्षेत्र (कुल 7 जिले)** – चमोली, उत्तरकाशी, देहरादून, पौड़ी गढ़वाल, टिहरी गढ़वाल, हरिद्वार, ऋषिकेश (ऋषिप्रयाग)।
- **स्थानीय नाम** – कुमायूनी, कुमाऊँनी।



नैनीताल (कुमाऊँ)

(ii) गढ़वाली

- इस बोली का नामकरण **गढ़वाल मण्डल (1969)** के नाम पर पड़ा है।
- **मुख्यालय** – पौड़ी गढ़वाल।
- **क्षेत्र (कुल 6 जिले)** – पौड़ी गढ़वाल, टिहरी गढ़वाल, चमोली, रुद्रप्रयाग, उत्तरकाशी, देहरादून (सहित हरिद्वार, ऋषिकेश)।
- **स्थानीय नाम** – गढ़वाली।
- **विशेषता** – यह बोली अपनी मधुरता और सुगम अभिव्यक्ति के लिए प्रसिद्ध है।



देवप्रयाग (गढ़वाल)

4 अन्य बोलियाँ

बोली	क्षेत्र/स्थान
जैसे	सिरमौरी (सिरमौर)
बचाटी	बचाटी क्षेत्र
क्योंथली	क्योंथली क्षेत्र
कुलवी (कुल्लू)	कुल्लू क्षेत्र
मंड्याली (मण्डी)	मण्डी क्षेत्र
चम्ब्याली (चम्पा)	चम्बा क्षेत्र
कांगड़ी	कांगड़ा क्षेत्र
भरमौरी	भरमौर क्षेत्र
चुराही	चुराह क्षेत्र
पांगवाली	पांगी क्षेत्र
लाहौली	लाहौल क्षेत्र

5 शब्द-संग्रह (उदाहरण)

पहाड़ी शब्द	अर्थ	पहाड़ी शब्द	अर्थ
भौत (कल)	कल	मल्ली (ऊपर)	ऊपर
भौओ (आने वाला कल)	आने वाला कल	भुल (छोटा भाई)	छोटा भाई
पौह (परसों)	परसों	चुल (किचन)	रसोई
कथी (कभी)	कभी	पैस (रुपया)	रुपया
तल्ली (नीचे)	नीचे		

6 लिपि

- पहाड़ी हिन्दी की कोई स्वतंत्र लिपि नहीं है।
- इसे हिन्दी (देवनागरी) लिपि में लिखा जाता है।
- ध्वनियों को लिखने के लिए जिन चिन्हों का प्रयोग किया जाता है उन्हें "लिपि" कहते हैं।

7 अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- **लिपि** – किसी भी भाषा की लिखावट या लिखने का दंग।
- **परिभाषा** – ध्वनियों को लिखने के लिए जिन चिन्हों का प्रयोग किया जाता है उसे लिपि कहते हैं।
- **पं. कामता प्रसाद गुरू** – लिखित भाषा में मूल ध्वनियों के लिए जो चिन्ह मान लिए गए हैं, वे भी वर्ण कहलाते हैं, पर जिस रूप में ये लिखे जाते हैं उसे लिपि कहते हैं।
- भारत में प्राचीन समय से तीन लिपियाँ प्रचलित थीं।



लेखक : बिपिन कुमार चौधरी





1 ब्राह्मी लिपि – मुख्य परिचय

- 1 यह भारत की सबसे प्राचीन लिपि है।
- 2 ब्राह्मी लिपि के प्राचीनतम नमूने बस्ती जिले के **पिपरला** के स्तूप तथा अजमेर जिले के **बड़ली गाँव** के शिलालेख में मिले हैं।
- 3 प्रो. बुलर के अनुसार ब्राह्मी लिपि में **41 अक्षर** (9 स्वर और 32 व्यंजन) हैं।
- 4 ब्राह्मी लिपि का प्रयोग वैदिक आर्यों ने शुरू किया था।
- 5 गुप्तकाल के आरम्भ में ब्राह्मी के दो भेद हो गए थे –
(1) **उत्तरी ब्राह्मी** (2) **दक्षिणी ब्राह्मी**

2 ब्राह्मी लिपि की विशेषताएँ

- ▶ यह भारत की प्राचीनतम लिपि है।
- ▶ इसके प्राचीनतम नमूने **पिपरला (बस्ती)** और **बड़ली (अजमेर)** के शिलालेख में मिले हैं।
- ▶ प्रो. बुलर के अनुसार इसमें **41 अक्षर** (9 स्वर और 32 व्यंजन) हैं।
- ▶ इस लिपि का प्रयोग वैदिक आर्यों ने विन्यास था।
- ▶ गुप्तकाल के आरम्भ में इसके दो भेद हो गए थे –
(1) **उत्तरी ब्राह्मी** (2) **दक्षिणी ब्राह्मी**

4 देवनागरी लिपि

- ◆ इस लिपि की उत्पत्ति ब्राह्मी लिपि से हुई है।
- ◆ देवनागरी लिपि को **लोकनागरी** एवं **हिन्दी लिपि** भी कहा जाता है।
- ◆ यह आधुनिक भारत में सर्वाधिक प्रचलित लिपि है।
- ◆ हिन्दी, संस्कृत, मराठी, नेपाली आदि भाषाओं के लेखन में इसका प्रयोग होता है।

5 ब्राह्मी लिपि से विकसित प्रमुख लिपियाँ

ब्राह्मी लिपि

उत्तरी ब्राह्मी से निकली लिपियाँ

- देवनागरी लिपि
- राजस्थानी लिपि
- गुजराती लिपि
- महाजनी लिपि
- कैथी लिपि

दक्षिणी ब्राह्मी से निकली लिपियाँ

- तमिल लिपि
- कलिंग लिपि
- तेलुगु लिपि
- ग्रंथ लिपि
- मलयालम लिपि

ब्राह्मी लिपि के प्रमुख स्थल



पिपरला का स्तूप
(बस्ती, उत्तर प्रदेश)



बड़ली गाँव का शिलालेख
(अजमेर, राजस्थान)

ब्राह्मी लिपि के अक्षरों का उदाहरण



ब्राह्मी लिपि के अक्षर (उदाहरण)

3 उत्तरी और दक्षिणी ब्राह्मी लिपि

लिपि	उत्पत्ति/विकास	प्रमुख उद्योग
उत्तरी ब्राह्मी लिपि	इससे देव नागरी लिपि, राजस्थानी लिपि, गुजराती लिपि, महाजनी लिपि और कैथी लिपि निकली।	उत्तर भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रशासन, साहित्य और दैनिक लेखन में प्रयोग की गई।
दक्षिणी ब्राह्मी लिपि	इससे तमिल लिपि, कलिंग लिपि लिपि, तेलुगु लिपि, ग्रंथ लिपि और मलयालम लिपि निकली।	दक्षिण भारत के राज्यों में शिलालेखों, धार्मिक और साहित्यिक लेखन में प्रयोग की गई।

6 परीक्षापयोगी बिंदु

- ✓ भारत की सबसे प्राचीन लिपि – **ब्राह्मी**।
- ✓ प्राचीनतम नमूने – **पिपरला (बस्ती)** और **बड़ली (अजमेर)**।
- ✓ प्रो. बुलर के अनुसार – **41 अक्षर** (9 स्वर + 32 व्यंजन)।
- ✓ प्रयोग – वैदिक आर्यों द्वारा।
- ✓ गुप्तकाल के आरम्भ में – ब्राह्मी के दो भेद : **उत्तरी ब्राह्मी** और **दक्षिणी ब्राह्मी**।
- ✓ उत्तरी ब्राह्मी से निकली – देवनागरी, राजस्थानी, गुजराती, महाजनी, कैथी।
- ✓ दक्षिणी ब्राह्मी से निकली – तमिल, कलिंग, तेलुगु, ग्रंथ, मलयालम।
- ✓ देवनागरी – लोकनागरी एवं हिन्दी लिपि के नाम से प्रसिद्ध।





1 अनुच्छेद 343(क) में उल्लेख

- ❖ संविधान के अनुच्छेद 343(क) के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी और उसकी लिपि देवनागरी होगी।
- ❖ इस प्रावधान ने देवनागरी लिपि को संवैधानिक मान्यता प्रदान की।
- ❖ इस प्रकार लगभग 150 वर्षों (1800-1949 ई.) के लंबे संघर्ष के बाद देवनागरी लिपि हिन्दी भाषा की एकमात्र और अधिकृत लिपि बनी।

देवनागरी लिपि का भौगोलिक सम्बन्ध



जयभट्ट (गुजरात)

देवनागरी लिपि का सर्वप्रथम प्रयोग (700-800 ई.)

2 देवनागरी लिपि का प्रारम्भिक प्रयोग

- ◆ देवनागरी लिपि का सर्वप्रथम प्रयोग गुजरात के राजा जयभट्ट (700-800 ई.) के शिलालेख में हुआ। इसे द्वारिका प्रसाद सक्सेना भी मानते हैं।

जयभट्ट से सम्बन्धित जानकारी

- 📍 स्थान : जयभट्ट (वड़ली गाँव), जिला - अजमेर (वर्तमान राजस्थान)
- 🕒 समय : 8वीं शताब्दी (700-800 ई.)
- ★ महत्व : देवनागरी लिपि का सर्वप्रथम प्रयोग यहीं के शिलालेख में मिलता है।

3 देवनागरी लिपि की प्रमुख विशेषताएँ

- 1 यह लिपि बाएँ से दाएँ लिखी जाती है।
- 2 इस लिपि के ऊपर क्षैतिज रेखा (शिरोरेखा) का प्रयोग होता है।
- 3 इसमें कुल 52 वर्णों की संख्या है।
- 4 इस लिपि में संयुक्ताक्षर का प्रयोग व्यापक रूप से होता है।

4 देवनागरी लिपि का प्रयोग

- भाषाएँ** हिन्दी, संस्कृत, मराठी, नेपाली, नागपुरी, भोजपुरी, कोंकणी, सिंधी, डोगरी, खस, मगही आदि।
- प्रयोग** अशोक के शिलालेख, ब्राह्मी लिपि में पाये गये।

5 देवनागरी लिपि में किए गये प्रमुख सुधार

- 1 बाल गंगाधर तिलक ने फाँट (मुद्रण) का प्रयोग बढ़ाया।
- 2 सावरकर बंधुओं (वि. दा. और बा. दा. सावरकर) ने 'अ' की बारहखड़ी का सरलीकरण किया।
- 3 श्यामसुंदर दास ने पंचमाक्षर (संयुकाक्षरों) के बदलाव के अनुसार प्रयोग का सुझाव दिया।

श्यामसुंदर दास के सुझाव (उदाहरण)

शब्द	रूप	वर्ण-विभाजन
गंगुड़ा	गंगुगा (गंगा)	क, ख, ग, घ, ङ
पतञ्जलि	(पतंजलि)	च, छ, ज, झ, ञ

देवनागरी लिपि से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य

- ◆ देवनागरी लिपि भारत की सबसे प्राचीन लिपियों में से एक है।
- ◆ यह लिपि वैज्ञानिक, सरल और ध्वन्यात्मक है।
- ◆ संस्कृत तथा हिन्दी सहित अनेक भारतीय भाषाओं की लेखन लिपि है।
- ◆ इसकी लेखन दिशा - बाएँ से दाएँ होती है।
- ◆ इसमें शिरोरेखा का प्रयोग लिपि की प्रमुख विशेषता है।
- ◆ कुल वर्णों की संख्या - 52 है (स्वर - 13, व्यंजन - 33, अन्य चिह्न - 6)।





1 ब्राह्मी लिपि : परिचय और प्रमाण

- ♦ ब्राह्मी लिपि भारत की प्राचीनतम ज्ञात प्रमुख लिपियों में एक है।
- ♦ ब्राह्मी लिपि के प्राचीनतम नमूने **पिपरहवा** (वर्तमान बस्ती जनपद, उत्तर प्रदेश) के स्तूप और **अजमेर जिले के बड़ली गाँव** के शिलालेखों में प्राप्त हुए हैं।
- ♦ **बुलर (Bühler)** के अनुसार ब्राह्मी लिपि में कुल **41 अक्षर** हैं — **9 स्वर और 32 व्यंजन**।
- ♦ इस प्रकार लगभग **150 वर्षों (1800-1949 ई.)** के लंबे संपर्क और अध्ययन के बाद देवनागरी लिपि हिन्दी भाषा की एक मात्र और अधिकृत लिपि के रूप में स्थापित हुई।

ब्राह्मी लिपि के प्रमुख प्रमाण



पिपरहवा का स्तूप
(बस्ती, उत्तर प्रदेश)



बड़ली गाँव का शिलालेख
(अजमेर, राजस्थान)

2 देवनागरी लिपि का प्रारम्भिक प्रयोग

- ♦ देवनागरी लिपि का सर्वप्रथम प्रयोग गुजरात के राजा **जयभट्ट** (लगभग **700-800 ई.**) के शिलालेख में हुआ।
- ♦ इसे **द्वारिका प्रसाद सक्सेना** द्वारा भी प्रमाणित माना गया है।
- ♦ गुप्तकाल के आरम्भ में ब्राह्मी के दो भेद विकसित हुए —
(1) **उत्तरी ब्राह्मी** (2) **दक्षिणी ब्राह्मी**

3 देवनागरी लिपि की प्रमुख विशेषताएँ

- 1 यह लिपि **बाएँ से दाएँ** लिखी जाती है।
- 2 इस लिपि के ऊपर **क्षैतिज रेखा (शिरोरेखा)** का प्रयोग होता है।
- 3 इसमें कुल **52 वर्णों** का प्रचलन है — **13 स्वर, 33 व्यंजन** और **6 अतिरिक्त चिह्न** (अनुस्वार, अनुनासिक, विसर्ग, चन्द्रबिन्दु, नुक्ता, अवग्रह)।
- 4 इस लिपि में **संयुक्ताक्षरों** का व्यापक प्रयोग होता है।

4 लिपि-सुधार के प्रमुख सुझाव

क्रम	विद्वान का नाम	मुख्य सुझाव
1	बाल गंगाधर तिलक	फॉन्ट (मुद्रण) के उपयोग को बढ़ावा दिया।
2	सावरकर बंधु (विनायक दामोदर सावरकर और बालकृष्ण दामोदर सावरकर)	'अ' की बारहखड़ी को सरल बनाने का सुझाव दिया।
3	डॉ. श्यामसुंदर दास	पंचमाक्षर (अनुस्वार, ङ) के स्थान पर अनुस्वार (◌ं) के प्रयोग का सुझाव दिया।
4	डॉ. गोरखप्रसाद	मात्राओं को व्यंजन के बाद दाहिनी ओर रखने का सुझाव दिया।
5	श्रीनिवास दास	महाप्राण वर्णों के लिए अल्पप्राण वर्ण के नीचे विशेष चिह्न लगाने का सुझाव दिया।

5 गुरुमुखी लिपि

- ♦ गुरुमुखी का अर्थ है — गुरु के मुख से निकली हुई लिपि।
- ♦ इसकी शुरुआत **गुरु अंगद देव (द्वितीय सिख गुरु)** द्वारा की गई मानी जाती है।
- ♦ गुरुमुखी में **3 स्वर** तथा **32 व्यंजन** के साथ कुल **35 वर्ण** होते हैं।
- ♦ गुरुमुखी लिपि में **पंजाबी भाषा** लिखी जाती है।

6 अरबी लिपि

- ♦ अरबी लिपि **दाएँ से बाएँ** लिखी जाती है और पढ़ी जाती है।
- ♦ इसका प्रयोग **अरबी भाषा** के लेखन में होता है।

7 देवनागरी के संबंध में महत्वपूर्ण घटनाएँ

- 1 इस प्रकार लगभग **150 वर्षों (1800-1949 ई.)** के लंबे संपर्क के बाद **देवनागरी लिपि हिन्दी की एक मात्र और अधिकृत लिपि** के रूप में स्थापित हुई।
- 2 महाप्राण वर्णों के लिए अल्पप्राण के नीचे चिह्न लगाने का सुझाव **श्रीनिवास दास** ने दिया।
- 3 **1945 ई.** में काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा
(क) 'अ' की बारहखड़ी के सरलीकरण का सुझाव (सावरकर बंधुओं का)
(ख) श्रीनिवास दास का महाप्राण चिह्न संबंधी सुझाव
— दोनों को **अस्वीकार** कर दिया गया।

8 अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ♦ संविधान के **अनुच्छेद 343(क)** में संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि **देवनागरी** होगी।
- ♦ देवनागरी लिपि भारत की प्रमुख लिपियों में एक है और इसकी ऐतिहासिक प्रमाणिकता सिद्ध है।
- ♦ देवनागरी लिपि के विकास में ब्राह्मी, गुप्त, कुटिल और नागरी रूपों का योगदान माना जाता है।
- ♦ हिन्दी, संस्कृत, मराठी, नेपाली, नागपुरी, भोजपुरी, कोंकणी, सिंधी, डोगरी, खस, मगही आदि भाषाओं के लेखन में देवनागरी लिपि का प्रयोग होता है।





1 लिपि का प्रयोग और नेत्रहीनों का अध्ययन

- ◆ इस लिपि का प्रयोग विश्वभर में नेत्रहीनों को पढ़ने और लिखने में तथा छपाई-व्यवहार में किया जाता है।
- ◆ इस पद्धति का आविष्कार 1884 ई. में फ्रांसीसी लेखक **लुई ब्रेल (Louis Braille)** ने मात्र 15 वर्ष की आयु में किया था।
- ◆ इसमें 6 बिन्दुओं के प्रयोग से 64 अक्षर और चिह्नों वाली लिपि बनाई गई।
- ◆ यह लिपि दुनिया के लगभग सभी देशों में प्रयोग में लाई जाती है।
- ◆ आधुनिक ब्रेल लिपि को 8 बिन्दुओं के सेल में विकसित किया गया है, जिसमें 64 अक्षर, संख्याएँ, विराम चिह्नों के साथ विशेष चिह्नों के प्रयोग की सुविधा उपलब्ध है।

ब्रेल लिपि : मुख्य तथ्य

आविष्कारक	लुई ब्रेल (Louis Braille)
देश	फ्रांस
आविष्कार का वर्ष	1884 ई.
आविष्कार के समय आयु	15 वर्ष
मूल संरचना	6 बिन्दुओं का सेल (2×3)
कुल संयोजन	64 अक्षर/चिह्न
आधुनिक रूप	8 बिन्दुओं का सेल (2×4)
प्रयोग	दुनिया के लगभग सभी देशों में
उपयोग	दृष्टिबाधित/नेत्रहीन व्यक्तियों द्वारा पढ़ने-लिखने एवं छपाई में

महत्व : यह लिपि दृष्टिबाधित व्यक्तियों की शिक्षा, संचार और आत्मनिर्भरता में अत्यंत उपयोगी है।

6 रोमन लिपि

- ◆ रोमन लिपि में अंग्रेजी सहित पश्चिमी और मध्य यूरोप की अनेक भाषाएँ लिखी जाती हैं।
- जैसे - अंग्रेजी, जर्मन, फ्रांसीसी, स्पेनिश, पुर्तगाली, इतालवी, डच, स्वीडिश, रोमानियाई आदि।
- ◆ यह लिपि देवनागरी की तरह बाएँ से दाएँ लिखी जाती है।
- ◆ इस लिपि में 5 स्वर और 21 व्यंजन के साथ कुल 26 वर्ण होते हैं।

7 गुजराती लिपि

- ◆ गुजराती लिपि, नागरी लिपि से विकसित हुई है।
- ◆ गुजराती लिपि का प्रथम ज्ञात रूप 1797 ई. में विज्ञापन/प्रकाशन में छपी सामग्री में मिलता है।
- ◆ इस लिपि में शिरोरेखा (मात्रा रेखा) का प्रयोग नहीं किया जाता है।
- ◆ इस लिपि में गुजराती भाषा लिखी जाती है।
- ◆ लेखन दिशा - बाएँ से दाएँ।

8 बंगाली लिपि

- ◆ बंगाली भाषा को बंगाली लिपि में लिखा जाता है।
- ◆ यह लिपि पूर्वी नागरी लिपि से विकसित हुई है।

9 तमिल लिपि

- ◆ तमिल भाषा को तमिल लिपि में लिखा जाता है।
- ◆ इस लिपि का उद्भव ब्राह्मी लिपि के दक्षिण भारतीय रूप से हुआ है।

10 चीनी लिपि

- ◆ मंदारिन (चीनी) और कैंटोनी (कैंटोनी) भाषाओं को चीनी लिपि में लिखा जाता है।
- ◆ यह लिपि विचार-चिह्नों (लोगोग्राम) पर आधारित है।

11 कांजी लिपि

- ◆ जापानी भाषा को कांजी लिपि में लिखा जाता है।
- ◆ यह चीनी लिपि से विकसित है, जिसमें प्रत्येक चिह्न एक विचार (ईडियोग्राम) को दर्शाता है।

12 ब्रेल लिपि (पुनरावलोकन)

- ◆ दृष्टिबाधित (नेत्रहीन) व्यक्तियों के लिए विशेष लिपि।
- ◆ 6 बिन्दुओं के प्रयोग से 64 अक्षर/चिह्न तथा आधुनिक रूप में 8 बिन्दुओं के सेल की सुविधा।

परीक्षाप्रयोगी बिन्दु

- ✓ लुई ब्रेल - ब्रेल लिपि (1884 ई., 15 वर्ष)
- ✓ ब्रेल लिपि - 6 बिन्दु = 64 अक्षर, आधुनिक = 8 बिन्दु
- ✓ रोमन लिपि - 26 वर्ण (5 स्वर + 21 व्यंजन)
- ✓ गुजराती - नागरी से विकसित, शिरोरेखा नहीं
- ✓ बंगाली, तमिल, चीनी, कांजी - संबंधित भाषाओं की लिपियाँ



विद्या यत्नः नरस्य लघुमज्जधिक प्रच्छन्नगुणः
विद्या भोगकरी यज्ञः सुखकरी विद्या गुरु देवता ।
विद्या वन्द्युजतो विदेशमनने विद्या बल देवता
विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्या विभूषणम्



टीचर्स ऑफ़ बिहार द्वारा प्रकाशित

इस पुस्तक की विशेषताएँ :

- हिंदी भाषा के विकास की क्रमबद्ध यात्रा
- संस्कृत से आधुनिक हिंदी तक का भाषायी अध्ययन
- सरल भाषा में तथ्यपरक एवं व्यवस्थित प्रस्तुति
- चार्ट, सारणी एवं दृश्य माध्यमों से सहज समझ
- महत्वपूर्ण तथ्यों एवं सारांश का समावेश
- UPSC, BPSC, SSC, TET, CTET, UGC-NET
आदि परीक्षाओं के लिए उपयोगी

